राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय

पोथी

# सारबचन राधास्वामी

## नज़्म यानी छन्दबन्द

जिसको कि

परम पुरुष पूरन धनी स्वामीजी महाराज
ने ज़बान मुबारक से फ़र्माया और
जो बइजाज़त राधास्वामी ट्रस्ट
छापी गई

## ॥ पहिला भाग ॥



पं० केदारनाथ मिश्र के प्रबन्ध से मिश्र प्रेस,
अहियापुर सत्तीचौरा प्रयाग में छापी गई ॥

---

सन् १६२१ ई०

सातवीं बार १०००] [दाम २)

# सूचीपत्र सारबचन छन्दबन्द भाग पहिला

शब्द की टेक | सफ़हा


भूमिका [बार्तिक] [१]

अकह अपार अगाध अनामी ... १७
अटक तू क्यों रहा जग में ... २६८
अन्दरूँ अर्श रफ़ता दीदम नूर ... ४०५
अनहद बाजे बजें गगन में ... २०५
अपने स्वामी की मैं करत आरती ... १२३
अब बही सुरत मँझधार ... ३४८
अब सतगुरु की आरत गाऊँ ... ९५
अर्श पर पहुँच कर मैं देखा नूर ... ४०७
अरे मन देख कहाँ संसार ... ३४७
अरे मन रँग जा सतगुरु प्रीत ... ३०९
आज आरती इक कहूँ भारी ... ८२
आज दिवस सखि मंगल खानी ... १००
आज बधावा राधास्वामी गाऊँ ... ६८
आज मेरे आनँद होत अपार ... १६२
आज मेरे धूम भई है भारी ... ७०
आज सखी काज करो कुछ अपना ... ३१२
आज साज कर आरत लाई ... १०४
आनँद मंगल आज साज सब ... ११०
आरत करूँ आज सतगुरु की ... १२८
आरत गावे दरसो अपनी ... १२४
आरत गावे सेवक तेरा ... ७९
आरत सतगुरु की अब करहूँ ... १६४
आशिक़म ज़ाते मुर्शिदे कामिल ... ४१०

| शब्द की टेक | | सफ़हा |
|---|---|---|
| उमँग आज हुई हिये मैं भारी | ... | १३५ |
| एक आरती कहूँ बनाई | ... | १२५ |
| एक सिफ़त यह वर्ण बताई | ... | १५ |
| क्यों फिरत भुलानी जक्त मैं | ... | २४८ |
| करूँ आरती राधास्वामी तन मन सुरत | ... | ११२ |
| करूँ बंदगी राधास्वामी आगे | ... | २ |
| करूँ बेनती दोउ कर जोरी | ... | १४४ |
| करूँ बेनती राधास्वामी आज | ... | १४९ |
| करो री कोइ सतसँग आज बनाय | ... | २४४ |
| कहाँ लग कहूँ कुटिलता मन की | ... | २१३ |
| काल ने जक्त अजब भरमाया | ... | १८३ |
| कुमतिया बैरन पीछे पड़ी | ... | २७८ |
| कोइ मानो रे कहन हमारी | ... | २६६ |
| कोइ सुनो हमारी बात | ... | ३५७ |
| कोमल चित्त दया मन धारो | ... | ३७९ |
| खोज री पिया को निज घट मैं | ... | २८१ |
| खोलो री किवड़ियाँ, चढो री अटरियाँ | ... | ३६१ |
| गुइयाँ री गुरु समझ सुनावैं | ... | १७० |
| गुरु आरत बिधि दीन बताई | ... | १६८ |
| गुरु क्यौं न सम्हार, तेरा नर तन बीता | ... | ३४० |
| गुरु करो खोज कर भाई | ... | २९८ |
| गुरु कहैं खोल कर भाई | ... | ३६२ |
| गुरु कहैं जक्त सब अन्धा | ... | ३३६ |
| गुरु कहैं पुकार पुकार | ... | २८२ |
| गुरु का दरस तू देख री | ... | ७७ |

| शब्द की टेक | | सफ़हा |
|---|---|---|
| गुरु की कर हर दम पूजा | ... | २९९ |
| गुरु की दया ले शब्द सम्हार | ... | १९५ |
| गुरु के दरस पर मैं बलिहारी | ... | ७६ |
| गुरु घाट चलो मन भाई | ... | ३३२ |
| गुरु चरन धूर कर अंजन | ... | १७९ |
| गुरु चरनन पर जाउँ बलिहार | ... | १६९ |
| गुरु चरन पकड़ दृढ़ भाई | ... | ३०१ |
| गुरु चरन बसे अब मन मैं | ... | १७३ |
| गुरु चेला ब्योहार जगत मैं झूँठा | ... | २३९ |
| गुरु तारेंगे हम जानी | ... | ३३९ |
| गुरु दरियाव चलो सुत सजनी | ... | ३१३ |
| गुरु ध्यान धरो तुम मन मैं | ... | ३०० |
| गुरु प्रीत बढ़ी चितवन मैं | ... | १६० |
| गुरु बचन कहैं सो सुन रे | ... | ३८१ |
| गुरु मता अनोखा दरसा | ... | ८९ |
| गुरु मिले परम पद दानी | ... | १५९ |
| गुरुमुख प्यारा गुरू अधारा | ... | १३९ |
| गुरु मेरे जान पिरान शब्द का दीना दाना | ... | १७३ |
| गुरु सरन आज मैं पाई | ... | १७७ |
| गुरू का ध्यान कर प्यारे | ... | ३२१ |
| गुरू की आरत ठानूँ गी | ... | १६५ |
| गुरू की मौज रहो तुम धार | ... | ३१० |
| गुरू गुरू मैं हिरदे धरती | ... | १५१ |
| गुरू बिन कभी न उतरे पार | ... | ३२४ |
| गुरू बिन कौन उबारेगा | ... | ३२३ |

| शब्द की टेक | | सफ़हा |
|---|---|---|
| गुरू सोई जो शब्द सनेही | ... | २३२ |
| घट में चढ़ खेल कबड्डी | ... | ३७८ |
| घन गरज सुनावत गहरी | ... | ३६८ |
| घर आग लगावे सखी सोइ सीतल | ... | २३८ |
| घुमर चल सुरत घोर सुन भारी | ... | ३६४ |
| चढ़ झाँको गगन झँझरिया | ... | ३६३ |
| चढ़ सुरत गगन की घाटी | ... | ३६६ |
| चमन को चीन्ह री बुलबुल | ... | ३७५ |
| चरन गुरु हिरदे धार रही | ... | १२१ |
| चल री सुरत अब गुरु के देस | ... | २५३ |
| चलो री सखी आज पिया से मिलाऊँ | ... | ३४९ |
| चलो री सखी मिल आरत गावें | ... | ६ |
| चेत चल जगत से बौरे | ... | २६२ |
| चेत चलो यह सब जंजाल | ... | २५४ |
| चेतो मेरे प्यारे तेरे भले की कहूँ | ... | ३१८ |
| चेतो रे जम जाल बिछाया | ... | ३५२ |
| जक्त भाव भय लज्जा छोड़ो | ... | २२८ |
| जक्त से चेतन किस बिधि होय | ... | २७६ |
| जग में घोर अँधेरा भारी | ... | २५१ |
| जाग चल सूरत सोई बहुत | ... | २४६ |
| जागो री सुरत अब देर न करो | ... | ३५० |
| जीव चिताय रहे राधास्वामी | ... | १४२ |
| जुगनियाँ चढ़ी गगन के पार | ... | ७२ |
| जोड़ोरी कोइ सुरत नाम से | ... | २७४ |
| झँझरिया झाँको बिरह उमगाय | ... | २४३ |

| शब्द की टेक | | सफ़हा |
|---|---|---|
| तजो मन यह दुख सुख का धाम | ... | २६३ |
| त्याग चल सजनी जग की धार | ... | ३७० |
| तुम साध कहावत कैसे | ... | २९४ |
| तू देख उलट कर मन में | ... | ३३३ |
| दुलहनी करो पिया का संग | ... | ३७७ |
| देखत रही री दरस गुरु पूरे | ... | ७५ |
| देखो सब जग जात बहा | ... | २६५ |
| देव री सखी मोहिं उमँग बधाई | ... | ६७ |
| धन्य धन्य धन धन्य पियारे | ... | १८७ |
| धाम अपने चलो भाई | ... | ३४२ |
| धुन में अब सुरत लगाओ | ... | ३७६ |
| धुन सुन कर मन समझाई | ... | २०२ |
| धुन से सुरत भइ न्यारी रे | ... | २४२ |
| धोखा मत खाना जग आय | ... | २३१ |
| नगरिया झाँक रही मैं न्यारी | ... | ८६ |
| नाम धुन सुनो, शब्द धुन गुनो | ... | ३५९ |
| नाम निर्णय करूँ भाई | ... | २०७ |
| नाम रस चखा गुरू सँग सार | ... | २११ |
| निज रूप पूरे सतगुरू का प्रेम मन में | ... | ४१२ |
| नैन कँवल गुरु ताक | ... | ३१५ |
| प्रेम प्रीत घट धार आरती राधास्वामी | ... | १३१ |
| प्रेमी सुनो प्रेम की बात | ... | १७१ |
| बँधे तुम गाढ़े बंधन आन | ... | २६१ |
| बिरहनी गुरु की सरन सम्हार | ... | ३२९ |
| भक्ति अब करो मेरे भाई | ... | ३५१ |

| शब्द की टेक | | सफ़हा |
|---|---|---|
| भक्ति महातम सुन मेरे भाई | ... | २२६ |
| भजन कर मगन रहो मन मैं | ... | ३५८ |
| भर भर प्रेम आरती गाऊँ | ... | २१७ |
| भेद आरती सुन सखि मो से | ... | २९२ |
| मत देख पराये औगुन | ... | २५६ |
| मन घोटो घट मैं लाई | ... | ३६७ |
| मन मारो तन को जारो | ... | ३५२ |
| मन रे क्यों गुमान अब करना | ... | २७३ |
| मित्र तेरा कोई नहीं संगियन मैं | ... | २५८ |
| मिली नर देह यह तुम को | ... | २७० |
| मुर्शिदा आशिक़े दीदारे जमालत गश्तम | ... | ४७२ |
| मुसाफ़िर रहना तुम हुशियार | ... | २५७ |
| मैं कौन कुमति उरझाना | ... | १८१ |
| मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की गुन गाऊँ | ... | २९ |
| मौत से डरत रहो दिन रात | ... | २५९ |
| यह आरत दासी रची प्रेम सिंध की धार | ... | १०७ |
| यह तन दुर्लभ तुमने पाया | ... | २८४ |
| यहाँ तुम समझ सोच कर चलना | ... | २७२ |
| राधा आदि सुरत का नाम | ... | १५ |
| राधास्वामी आय प्रगट हुए जबसे | ... | ४८ |
| राधास्वामी का दरस मैं आज करूँगी | ... | ७४ |
| राधास्वामी दया प्रेम घट आया | ... | १३० |
| राधास्वामी धरा नर रूप जक्त मैं | ... | १२ |
| राधास्वामी नाम जो गावे | ... | १व१६ |
| राधास्वामी नाम सिफ़त करूँ | ... | १४ |

| शब्द की टेक | | सफ़हा |
|---|---|---|
| राधास्वामी नाम सुनाया राधास्वामी | .... | ४३ |
| राधास्वामी मेरे सिंध गंभीर | ... | ६८ |
| राधास्वामी लिया अपनाय सखी री | ... | ५५ |
| रोम रोम मेरे तुम आधार | ... | १४५ |
| लाज जग काज बिगाड़ा री | ... | २५५ |
| लोभ री खुबनियाँ काम री दुलनियाँ | ... | ३६१ |
| शब्द की करी न कोई कमाई | ... | २९६ |
| शब्द की करो कमाई दम दम | ... | १९९ |
| शब्द ने रची त्रिलोकी सारी | ... | १८९ |
| शब्द बिना सारा जग अन्धा | ... | १९७ |
| शब्द सँग बाँध सुरत का ठाट | ... | २०० |
| सतगुरु कहँ करो तुम सोई | ... | ३०७ |
| सतगुरु का नाम पुकारो | ... | ३०४ |
| सतगुरु खोजो री प्यारी | ... | २४० |
| सतगुरु सरन गहो मेरे प्यारे | ... | १७६ |
| सतसँग करत बहुत दिन बीते | ... | ३१६ |
| सब की आदि शब्द को जान | ... | १९१ |
| समझ कर चल जगत खोटा | ... | ३४५ |
| स्वामी सुनो हमारी बिनती | ... | १५० |
| सिफ़त तीसरी करूँ बखाना | ... | १५ |
| सुख समूह अन्तर घट छाया | ... | ९२ |
| सुन री सखी चढ़ महल बिराज | ... | ३८३ |
| सुन रे मन अनहद बैन | .... | ३३४ |
| सुरत अब चढ़ो नाम रँग लाग | ... | ३७१ |
| सुरत अब शब्द माहिं नित भरना | ... | २०२ |

शब्द का टेक — सफ़हा

सुरत आज चली आरती धार ... १२६
सुरत आज लगी चरन गुरु धाय ... ११९
सुरत को साध छबीली हो मगनी ... ३७३
सुरत क्यौं हुई दिवानी तेरी बिरथा वैस विहानी ३२७
सुरत तू कौन कहाँ से आई ... २४३
सुरत तू कौन कुमति उरझानी ... २५०
सुरत तू क्यौं न सुने धुन नाम ... २४५
सुरत तू चढ़जा तुरत गगन को ... ३६९
सुरत तू दुखी रहे हम जानी ... २४६
सुरत धुन धार री तज भोग निकाम ... ३२५
सुरत नहिं चढ़े कहा करिये ... ३३८
सुरत सखी आज करत आरती ... ११४
सुरत सुन बात री तेरा धनी बसे आकाश ... ३२६
सुरत संग सतगुरु धोवत मन को ... ३३०
सुरतिया गगन चढ़ाइलो मीत ... ३८२
सोचत कहा सखि करले आरत ... २९३
सोता मन कस जागे भाई ... २७९
संदेश [वार्तिक] ... ४
हंसनी क्यौं पीवे तू पानी ... ३७१
हंसनी छानो दूध और पानी ... ३७२
हित कर कहता सुन सुर्त बात ... २४७
हिदायत नामा [वार्तिक] ... ३८४
हे गुरू मैं तेरे दीदार का आशिक़ जो हुआ... ४०४
हे राधा तुम गति अति भारी ... ९५
हे सहेली अब गुरु के मारग चलना ... २४७

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय।

॥ भूमिका ॥

(१) हुज़ूर राधास्वामी साहेब ने यह बानी अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाई। अव्वल इरादा हुज़ूर साहेब का वास्ते बनाने बानी के न था, पर कोई २ सत संगी और सतसंगिनों ने बहुत हठ कर के अर्ज़ की तब उन की अर्ज़ को क़बूल फ़रमाया ॥

(२) हुज़ूर साहेब शहर आगरा मुहल्ला पन्नीगली में सम्बत १८७५ भादों महीने की शुक्ल की अष्टमी के दिन वक़्त साढ़े बारह बजे रात के प्रगट हुए और अँगरेज़ी हिसाब से अगस्त का महीना सन १८१८ ई० थी, और ६—७ बरस की उमर से सबसे ऊँचे परमार्थ का समझाना और बुझाना ख़ास ख़ास लोगों को मर्द और औरत से शुरू किया ॥

(३) हुज़ूर साहेब का कोई गुरू नहीं था और न किसी से उन्हों ने परमार्थ का उपदेश लिया, बल्कि आपही अपने वालिदैन को और जो साधू कि उनकी पहिचान वाले मकान पर आते थे उन को हर तरह से परमार्थ के समझाने में कोशिश करते रहे ॥

(४) क़रीब पंद्रह बरस के अपने मकान के एक कोठे में जो अन्दरून दूसरे कोठे के था बैठकर अभ्यास सुरत शब्द जोग का करते रहे, यहाँ तक कि अकसर औ-क़ात दो २ तीन २ रोज़ तक बाहर नहीं निकलते थे और न इस अरसे में हाजात ज़रूरी की तरफ़ तवज्जह होती थी ॥

(५) सम्बत १९१७ बसंत पंचमी के दिन मुताबिक़ जनवरी सन १८६१ ई० के, मुवाफ़िक़ अर्ज़ी और प्रार्थना बाज़े सतसंगी और सतसंगिनों के जो ज़ियादे एक बरस से वास्ते जारी फ़रमाने आम

सतसंग के हठ करके ख़िदमत में अर्ज़ कर रहे थे अपने मकान पर बयान संतमत और उसका उपदेश परमारथी लोगों को फ़र्माना शुरू किया और यह सतसंग १७ बरस तक बराबर रात दिन जारी रहा। इस अरसे में क़रीब तीन हज़ार मर्द व औरत ने बहुत से क़ौम हिन्दू हर मुल्क के और थोड़े मुसलमान और जैनी और सरावगी और कोई २ ईसाई ने हुज़ूर साहेब से उपदेश संत-मत याने राधास्वामी पंथ का लिया। इनमें से बहुतेरे गृहस्थी थे और क़रीब दो तीन सौ साधू होंगे। बाज़े २ जिन्हों ने अभ्यास शौक़ के साथ किया चन्द बार वास्ते दर्शन और इज़हार अपने हाल और दरियाफ़्त करने हालत और बारीकियों और गुप्त भेद मत मज़कूर के आये और अपने अभ्यास की हालत में ताक़त और क़ुदरत और बुज़ुर्गी हुज़ूर

साहेबकी ओर अंतर दया जो उन पर फ़र्माई देखकर दिल और जान से मोतक़िद हुए और निहायत प्रीत और प्रतीत चरनों में करने लगे और बाज़े जो दुनिया के भोगों में फँस गये और उनसे अभ्यास अच्छी तरह नहीं बना वह फिर दोबारा हाज़िर नहीं हुए। अब आगरे में एक सौ मर्द व औरत इस अभ्यास में लगे हुए हैं और इन में से क़रीब चालीस साधू हैं। यह साधू लोग साबिक़ से भेष लेकर तलाश में परमार्थ के निकले थे और आगरे में पहुँच कर महिमा और सिफ़त हुज़ूर साहेब की सुनकर चरनों में हाज़िर हुए और भेद लेकर अभ्यास में लग गये और जब उन को कुछ २ रस अभ्यास का मिलने लगा तब अपना क़याम आगरे में रक्खा और अब यह साधू राधास्वामी बाग़ में जो शहर से बफ़ासला तीन मील

के वाक़ा है और शहर में जो मकान हुजर साहेब का है वहाँ चन्द गृहस्थी मर्द व औरत रहते हैं और अपना अभ्यास कर रहे हैं।

(६) राधास्वामी मत को सन्तमत भी कहते हैं। पिछले वक़्तों में यह मत निहायत गुप्त रहा और जो कि इसका अभ्यास शुरू में प्रानायाम के साथ किया जाता था इस सबब से बहुत कम लोग इससे वाकिफ़ थे और न किसीसे अभ्यास बन सक्ता था क्योंकि प्रानायाम करने में संजम और परहेज़ सख़्त दरकार है और ख़तरे भी बहुत हैं। और इस सबब से यह काम इस क़दर मुशकिल था कि कोई इस में क़दम नहीं रख सक्ता था। अब हुज़ूर राधास्वामी साहेब ने ऐसी सहज जुगत और आसान तरीक़ सुरत शब्द जोग का अपनी दया से प्रगट किया है कि जो कोई सच्चा शौक़ रखता

होवे तो वह आसानी से उसका अभ्यास कर सक्ता है, ख़्वाह वह मर्द होवे या औरत, ख़्वाह वह जवान होवे या बूढ़ा ॥

(७) यह जुगती कि जो हुजूर साहेब ने अब जारी फ़रमाई है किसी ने पिछले वक़्तों में इस आसानी के साथ नहीं जारी की और यही सबब है कि अन्तर-मुख अभ्यास सब मतों में जो आज कल दुनिया में जारी हैं गुप्त और पोशीदा हो गया और सब मतों के लोग बाहर मुखी पूजा और धर्म और कर्म में लग गये और सच्चे मालिक की पहिचान और उसके मिलने की जुगत और उस के रास्ते और मंज़िलों के भेद से ना-वाक़िफ़ रह गये ॥

(८) राधास्वामी मत में तीन चीज़ दर-कार हैं-एक गुरू और दूसरा नाम और तीसरा संग और यही तीन चीज़ें वसीला उद्धार याने नजात की हैं अव्वल गुरू पूरा और सच्चा चाहिये याने सन्त सतगुरू,

बंसावली गुरुवों से काम नहीं निकल सक्ता। दूसरे नाम भी सब से ऊँचा और सच्चा और पूरा और असली याने ज़ाती चाहिये सब भेद नामी याने मुरस्सा के छत्रिम् याने सिफ़ाती नामों से काम नहीं बनेगा। तीसरे सतसंग भी सच्चा चाहिये और उसकी दो क़िस्म हैं-एक सतसंग अंतरी और दूसरा सतसंग बाहरी। अंतरी सतसंग यह है कि जब अभ्यासी अपनी सुरत याने जीवात्मा या रूहको अंतर में चढ़ाकर सत्तपुरुष राधास्वामी के चरनों में लगावे या उस तरफ़ को मुतवज्जह करे और दूसरा यह कि जब इसको दर्शन और संग सत्पुरुषों का जो कि सच्चे और पूरे संत और साध हैं नसीब होवे और यह उन के बचन सुने और दर्शन करे और जो सेवा बन सके करे। इन दोनों क़िस्म के सतसंग से कोई दिनों में हालत बदलती हुई साफ़ मालूम होगी॥

(९) और जो और काम परमार्थी

क़िस्म के हैं मिस्ल तीर्थ और व्रत और मंदिर और मूरत और पोथियों का पाठ और जप और सुमिरन सिफ़ाती नाम का, इन कामों के करने से ज़रा भी हालत नहीं बदलती क्योंकि इन कामों में निज-मन और जीवात्मा याने रूह जिसको संत सुरत कहते हैं शामिल नहीं होते और इसी सबब से इन कामों का असर ज़ाहिर नहीं होता। अलबत्ते ज़ाहिरी आनंद और अहंकार वग़ैरह दिल में आ जाता है ॥

(१०) सुरत याने जीवात्मा या रूह जो ख़ास सत्तपुरुष राधास्वामी की अंस है इस जिस्म में एक बड़ा जौहर है कि जिस की ताक़त से कुल बदन और मन और इन्द्रियाँ वग़ैरह अपना २ काम देती हैं सो संतों ने इसी जौहर को छाँटकर उस के असल भण्डार और ख़ज़ाने की तरफ़ मुतवज्जह किया और जब इस की सच्ची तवज्जह उधर को हुई तब आहिस्ता २ इस की हालत भी बदलती जाती है और

दुनिया और उसके पदारथ रोज़ बरोज़ नज़र में ओछे और हक़ीर दिखलाई देते हैं। इस जौहर लतीफ़ का असल मुक़ाम क़याम याने ठहराव का पिंड याने जिस्म में आँखों के पीछे है और वहाँ से यह तमाम देह में फैला है और सब आज़ाओं* को ताक़त दे रहा है और इसका भण्डार और ख़ज़ाना आदि शब्द याने आदि नाद है॥

(११) मालूम होवे कि आदि शब्द कुल का कर्ता और स्वामी है, और आदि सुरत याने उसके अव्वल ज़हूर का नाम राधा है इन्हीं का नाम सुरत और शब्द है, और जब इन की धार नीचे आई, तब इसी आदि शब्द से और शब्द, और आदि सुरत से और सुरत, और शब्द से सुरत, और सुरत से शब्द, बराबर प्रगट होते आये और अपने २ मुक़ाम पर क़ायम हुए॥

(१२) शब्द की महिमा हर एक मत में है, मगर शब्द का भेद किसी मत के

* अङ्ग अङ्ग।

ग्रन्थ या पोथियों में नहीं लिखा है इसी सबब से लोग इससे नावाक़िफ़ रह गये। अब हुज़ूर राधास्वामी साहेब ने तफ़सील शब्दों की और उन का भेद और बुज़ुर्गी का हाल खोल कर साफ़ २ इस बानी में लिखा है॥

( १३ ) खुलासा भेद शब्द का नीचे लिखा जाता है:--कुल की आदि राधास्वामी याने कुल मालिक, यहाँ शब्द निहायत गुप्त है और उस की उपमा याने नमूना इस रचना में कहीं नहीं है इसी शब्द से सत्तपुरुष प्रगट हुए॥

शब्द पहिला--सत्तपुरुष का शब्द जिस को सत्तनाम और सत्त शब्द भी कहते हैं और जिसकी सत्त कुदरत से सोहं पुरुष और पारब्रह्म और ब्रह्म और माया प्रगट हुए॥

दूसरा--सोहं पुरुष का शब्द॥

तीसरा-पारब्रह्मका शब्द जिसकी मदद से तीन लोक की रचना ठहरी हुई है॥

चौथा-ब्रह्म शब्द जो कि प्रणव है और जिस से सूक्ष्म याने ब्रह्मांडी वेद और ईश्वरी माया प्रगट हुई ॥

पाँचवाँ-माया और ब्रह्म का शब्द जिस से तिरलोकी की रचना का मसाला प्रगट हुआ और आकाशी वेद ज़ाहिर हुए ॥

माया शब्द के नीचे बैराट पुरुष का शब्द और जीव और मन का शब्द प्रगट हुआ ॥

(१४) इस वक़्त में जो कोई शब्द के अभ्यास का ज़िकर भी करते हैं तो सिवाय नीचे के शब्द के ऊँचे शब्दों की उनको ख़बर भी नहीं है और बाज़े बैराटी शब्द को ही कर्ता शब्द मानते हैं और कोई २ माया और ब्रह्म के मिले हुए शब्द का सिर्फ़ ज़िकर करते हैं मगर उस की महिमा और सिफ़त और उस के अस्थान और अभ्यास की जुगत से जिससे वह प्राप्त होवे नावाक़िफ़ हैं इन

सब शब्दों का हाल इस पोथी में तफ़-सीलवार लिखा हुआ है ॥

(१५) तरीक़ा राधास्वामी याने संत पंथ का भक्ती मारग का है याने सच्चे और पूरे मालिक के चरनों में प्रेम और प्रीत और प्रतीत करना । इस को उपासना और तरीक़त भी कहते हैं । इस मारग में या तो संत सतगुरू और साध गुरू की महिमा है और या उनके असली शब्द स्वरूप की महिमा है ॥

संत सतगुरू उनको कहते हैं कि जो सत्तपुरुष और राधास्वामी के मुक़ाम पर पहुँचे ॥

और साध गुरू उनको कहते हैं जो ब्रह्म और पारब्रह्म के मुक़ाम पर पहुँचे। और जो यहाँ तक नहीं पहुँचे उनको साध और सतसंगी कहा जाता है इन दोनों याने संत और साध का असली स्वरूप शब्द स्वरूप है और ज़ाहिरी स्वरूप नर स्वरूप याने इन्सानी ख़िरक़ा

है जो कि वे लोगों के समझाने और बुझाने और उपकार और उद्धार के लिये धर कर संसार में प्रगट होते हैं। जब यह मालूम हुआ कि यह पूरे संत या पूरे साध हैं तो फिर उन में और सत्तपुरुष या पारब्रह्म में भेद नहीं माना जाता है। इसवास्ते जब २ पूरे संत या पूरे साध प्रगट होते हैं तो उनके चरन सेवक उनकी महिमा सत्तपुरुष या पारब्रह्म के बराबर करते हैं और बाहर में उनकी पूजा और सेवा और आरती वग़ैरह उसी तौर से बजा लाते हैं जैसे कि मालिक की करना चाहिये। और इस ज़ाहिरी स्वरूप की सेवा और दर्शन और बचन और उनके चरनों में प्रेम और प्रीत करने से और जो जुगत वे बतलावैं उसके अभ्यास करने से सुरत याने जीवात्मा मन और माया के जाल से अलहदा होकर आकाश में

और उसके परे चढ़ती है और अंतर के स्वरूप याने शब्द में पहुँचती है। जबसच्चा और पूरा उद्धार जीव का होता है॥

(१६) जब तक कि पूरे संत या पूरे साध न मिलैं तब तक खोजी को मुनासिब है कि उनकी तलाश में रहे और जो कोई उनका सतसंगी याने सेवक मिल जावे कि जिसने उनकेदर्शन और सेवा बखूबी करी है और उनसे भेद शब्द मारग का हासिल करके अभ्यास किया है और कर रहा है तो उससे प्रीत करै, और भेद मारग और मंज़िल का और जुगत उसकी प्राप्ती की याने तरीक़ अभ्यास का दरियाफ़्त करके उसकी कमाई शुरू करे और सच्चा इष्ट राधास्वामी के चरनों में जो कुल के मालिक हैं और जहाँके पहुँचने का इरादा हर एक परमार्थी को मज़बूत करना चाहिये बाँधकर अपना काम

करना शुरू करे। जो प्रीत और प्रतीत सच्ची और शौक़ सच्चा और पक्का होगा तो ज़रूर कुल मालिक आप किसी न किसी वक़्त पर चाहे जिस स्वरूप से दर्शन देकर इस जीव का काम अपनी दया और कृपा से बनावैंगे॥

(१७) राधास्वामी नाम कुल मालिक ने अपना आप प्रगट किया है और जब कि हुज़ूर साहेब के चरन सेवकों को कुछ दिन अभ्यास और सतसंग करने से कुछ २ उनकी भारी कुदरत और गति मालूम हुई और कुछ उन्हों ने अपनी कृपा से थोड़ी अपनी पहिचान बख़्शी तब से उन को उसी नाम से जिस मुक़ाम याने राधास्वामी पद से कि वे आये थे पुकारना शुरू किया और वे अपनी मौज से इस कलियुग में जीवों पर निहायत दया करके संत स्वरूप औतार धारन करके प्रगट हुए॥

संत मत में भी वही क़ायदा जारी है जो और तरीक़त याने उपासना वालों के मत में जारी है और वह यह है कि सतगुरु पूरे याने मुरशिद कामिल में और मालिक कुल में भेद नहीं करते और इसी सबब से उन को उसी नाम से पुकारते हैं जो कि असली नाम उस मुक़ाम याने पद का है जहाँ से कि वे आये हैं। राधास्वामी नाम सुरत और शब्द की एक सिफ़त है जैसे समुन्दर और उसकी लहर, शब्द और उसकी धुन, प्रेमी और प्रीतम। इन सब का मतलब एक ही है॥

(१८) इस मत के मानने वालों और सुरत शब्द के अभ्यास करने वालों को चन्द रोज़ में आप उनके अन्तर में मालूम हो जावेगा कि यह क्या भारी नेमत और दुर्लभ पदारथ उनको मिला है और जिस क़दर दिन दिन उनकी हालत मोक्ष और उद्धार की होती

जावेगी उसको वे आप देख लेंगे और सब मतों के सिद्धांत और मुक़ाम की और उन की गति की आप ख़बर हो जावेगी कि कौन मत कहाँ से निकला है और कहाँ तक उसकी रसाई और पहुँच है ॥

(१९) यह मत और इसका अभ्यास ख़ास कर उन लोगों के वास्ते है जिनको सच्चे मालिक के मिलने की चाह है और जिनको अपने जीव के कल्यान और उद्धार का दिल से फ़िकर है। और जो लोग कि दुनिया के सामान और नाम-वरी और मान और बड़ाई और इल्म याने विद्या को पसन्द करते हैं और परमार्थ को अपना रोज़गार मुक़र्रर करते हैं उनके वास्ते यह उपदेश नहीं है और न उनको यह कलाम पसन्द आवेगा बल्कि जहाँ तक मुमकिन होगा वह इस पर तान करेंगे और ग़लत और फ़ज़ूल ठहरावेंगे और सबब इसका

यह है कि इस कलाम को सुनकर उनका मन घबरा जाता है कि इसको मानने से उनकी दुनिया और देह के मज़े बिलकुल जाते रहेंगे और रोज़गार में फ़र्क़ आ जावेगा। इसवास्ते वे जहाँ तक बन सकेगा ऐसी कोशिश करेंगे कि यह मत जारी न होवे ताकि जिन जीवों को उन्हों ने ग़फ़लत में डाल रक्खा है और तरह बतरह की पूजाओं में भरमा रक्खा है और उन से अपने रोज़-गार और आमदनी की सूरत पैदा कर रक्खी है वे उनके ग़ोल* और हुक्म-बरदारी से अलहदा न हो जावें और उनकी पूजा और आमदनी में ख़लल न पड़े॥

॥ फ़क़त ॥

******

* दूसरे एडीशन में "ग़ोल" की जगह "क़ौल" है।

# राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय।

॥ दोहा ॥

राधास्वामी नाम जो गावे सोई तरे।
कल* कलेश सब नाश सुख पावे सब दुख हरे॥
ऐसा नाम अपार कोई भेद न जानई।
जो जाने सो पार बहुर† न जग में जन्मई ॥२॥
राधास्वामी गायकर जनम सुफल करले।
यही नाम निज नाम है मन अपने धरले ॥३॥
बैठक स्वामी‡ अद्भुती राधा§ निरख निहार।
और न कोई लख सके शोभा अगम अपार ॥४॥
गुप्त रूप जहँ धारिया राधास्वामी नाम।
बिना मेहर‖ नहिं पावई जहाँ कोई बिसराम ॥५॥

*काल। †फिर। ‡मालिक कुल, आदि शब्द। §आदि सुरत। ‖दया॥

## मङ्गला चरन ॥

करूँ बंदगी राधास्वामी आगे।
जिन परताप जीव बहु जागे ॥१॥
बारम्बार करूँ परनाम।
सतगुरु पदम[*] धाम संतनाम ॥२॥
आदि अनादि जुगादि अनाम।
संत स्वरूप छोड़ निज धाम ॥३॥
आये भवजल नाव लगाई।
हम से जीवन लिया चढ़ाई ॥४॥
शब्द दृढ़ाया सुरत बताई।
करम भरम से लिया बचाई ॥५॥

॥ दोहा ॥

कोट कोट करूँ बंदना अरब खरब दण्डौत।
राधास्वामी मिल गये खुला भक्ति का सोत[†]॥

॥ चौपाई ॥

भक्ति सुनाई सब से न्यारी[‡]।
बेद कतेब[§] न ताहि बिचारी ॥ ७ ॥

*सेत कँवल। †भंडार। ‡पृथक। §मज़हबी किताबें।

सत्तपुरुष चौथे पद बासा ।
संतन का वहाँ सदा बिलासा ॥८॥
सो घर दरसाया गुरु पूरे ।
बीन बजे जहँ अचरज तूरे* ॥९॥
आगे अलख पुरुष दरबारा ।
देखा जाय सुरत से सारा† ॥१०॥
तिस पर अगम लोक इक न्यारा ।
संत सुरत कोइ करत बिहारा ॥११॥
तहाँ से दरसे अटल‡ अटारी§ ।
अद्भुत राधास्वामी महल सँवारी ॥१२॥
सुरत हुई अति कर मगनानी ।
पुरुष अनामी जाय समानी ॥१३॥

*आवाज़ एक तरह के बाजे की । †तत्व वस्तु । ‡जो कभी नाश न हो । §सब से ऊपर का मकान ।

## ॥ सन्देस ॥

### ॥ बचन पहिला ॥

सन्देस*--प्रगट होना परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी का संत सतगुरु रूप धार कर वास्ते उद्धार जीवों के ॥

सुनावना अधिकारी को इस सन्देस का कि परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी जीवों को महा दुखी और भर्म में भूला हुआ देख कर आप उनके उद्धार के निमित्त† संत सतगुरु रूप धारण करके प्रगट हुये और अति दया करके भेद अपने निज अस्थान का और जुक्ति उसके प्राप्ती की सुरत शब्द के मारग‡ से उपदेश करते हैं। जीवों को चाहिये कि उनके चरण कँवल में प्रेम प्रीत करें ॥

इस मारग की कमाई से मन बस में आवेगा और सिवाय इसके दूसरा कोई उपाव

*खबर। †वास्ते। ‡रास्ते।

मन के निश्चल और निर्मल करके चढ़ाने का आकाश के परे इस कलयुग में निश्चय करके नहीं है। जितने मत संसार में प्रवृत्त* हैं। उन सब का सिद्धांत† सन्तों की पहिली मंज़िल‡ निहायत दूसरी मंज़िल तक ख़तम§ हो जाता है। जो सुरत शब्द का अभ्यास बिधि पूर्बक बन आवे तो मन और सुरत निर्मल होकर और शब्द को पकड़ के आकाश के परे जो घट घट में ब्यापक है चढ़ैंगे और नौद्वार अथवा पिंड देश को छोड़कर ब्रह्माण्ड याने त्रिकुटी में पहुँचैंगे और वहाँ से सुरत मन से अलग होकर आगे चलेगी और सुन्न और महा सुन्न के बिलास देखती हुई और सत्त लोक और अलख लोक और अगम लोक में दर्शन सत्तपुरुष और अलखपुरुष और अगमपुरुष का करती हुई राधास्वामी के निज देश में प्राप्त होगी। इसी अस्थान

* जारी। † आखिर। ‡ स्थान। § पूरा।

से आदि मैं सुरत उतरी थी और त्रिलोकी मैं आकर काल के जाल मैं फँस गई थी सो उसी अस्थान पर फिर जा पहुँचेगी ॥

सुरत शब्द मारगी* को यह सब अस्थान यानी बिश्नु लोक और शिव लोक और ब्रह्म लोक और शक्ति लोक और कृष्ण लोक और राम लोक और ब्रह्म और पारब्रह्म पद और जैनियों का निरबान पद और ईसाइयों का मुक़ाम ख़ुदा और रूहुलक़ुद्स† और मुसलमानों के आलम‡ मलकूत§ और जबरूत|| और लाहूत** सुन्न के नीचे नीचे रास्ते मैं पड़ेंगे। यह सब लीला देखती हुई सुरत सन्तों के प्रताप से अपने निज देश को प्राप्त होगी ॥

॥ पहिला शब्द ॥

॥ आरती ॥

चलो री सखी मिल आरत गावैं।
ऋतु बसन्त आये पुरुष पुराने ॥ १ ॥

* अभ्यासी। † पवित्र आत्मा। ‡ देश। § स्वप्नदेश। || सुषुप्ति।
** तुरिया ॥

अलख अगम का भेद सुनावेँ ।
राधास्वामी नाम धरावेँ ॥ २ ॥
सुरत शब्द की रेल चलावेँ ।
जीव चढ़ाय अगम पुर धावेँ ॥ ३ ॥
सतसँग धारा नितहि बहावेँ ।
राधास्वामी छिन छिन गावेँ ॥ ४ ॥
उमँग उमँग हिय भेँट चढ़ावेँ ।
काल जाल दुख दूर बहावेँ ॥ ५ ॥
ऐसे समरथ पुरुष अपारा ।
दृष्ट जोड़ रहुँ दर्श अधारा ॥ ६ ॥
पल पल खटकत बिरह करारी* ।
जस हूलत† कोइ सेल‡ कटारी ॥७॥
बिन देखे दीदार§ न मानूँ ।
जग संसार सभी बिष जानूँ ॥८॥
अमृत कुण्ड रूप राधास्वामी ।
अचऊँ‖ छिन छिन तब मनमानी ॥९॥
बिन राधास्वामी मोहिँ कछु न सुहावे ।
चार लोक मेरे काम न आवे ॥१०॥

*तीव्र, तेज़ । † छेदता है । ‡बरछा । §दरसन । ‖पान करूँ, पिऊँ ।

ज्ञान ध्यान और जोग बैरागा ।
तुच्छ* समझ मैंने इनको त्यागा ॥११॥
मैं तो चकोर चन्द राधास्वामी ।
नहिं भावे सतनाम अनामी ॥१२॥
बिन जल मछली चैन न पावे ।
कँवल बिना अल† क्यों ठहरावे ॥१३॥
स्वाँति बिना जैसे पपिहा तरसे ।
सुत बियोग माता नहिं सरसे‡ ॥१४॥
अस अस हाल भया अब मेरा ।
कासे बरनूँ कोई न हेरा§ ॥ १५ ॥
दान देयँ तो दें राधास्वामी ।
और न कोइ ऐसा अन्तरजामी ॥१६॥
ऐसी भक्ति होय इक रंगी ।
काटे बंधन मन बहुरंगी ॥ १७ ॥
राधास्वामी राधास्वामी नित गुन गाऊँ ।
चरन सरन पर हिया उमगाऊँ ॥१८॥
कहाँ लग बरनूँ मेहर अपारा ।
दिन दिन होवत मौज‖ नियारा ॥१९॥

*ओछा । †भँवरा । ‡मगन होती है । §पहिचानता । ‖दया की धार ।

जक्त जीव कहा* समझे लीला ।
देख देख हंसन चित सीला† ॥ २० ॥
अब के दाव पड़ा मोरा सजनी ।
जब आयो राधास्वामी की सरनी ॥२१॥
खुल गये भक्ति प्रेम भण्डारा ।
कोटिन जीव का होय उधारा ॥ २२ ॥
चहुँदिस धूम पड़ी अब भारी ।
काल नगर मानो‡ देहैं उजाड़ी ॥ २३ ॥
स्वामी दयाल मौज ऐसी धारी ।
दीन होय तिस लेहैं उबारी ॥ २४ ॥
मैं किंकर उन चरनन दासा ।
सब जीवन को देउँ दिलासा§ ॥ २५ ॥
बाँध सुरत चरनन में राखो ।
अगम अपार अमी रस चाखो ॥ २६ ॥
हंस सभा कहा बरनूँ सोभा ।
होवत जहाँ शब्दन की बरषा ॥ २७ ॥
चमकत बिजली गर्ज अकाशा ।
और कहा कहुँ अजब तमाशा ॥ २८ ॥

* क्या । † चित की शांती । ‡ जैसे । § भरोसा ।

बंकनाल के नाले छूटे ।
सुखमन नदियाँ भरम पुल टूटे ॥२९॥
त्रिकुटी घाट बैठ मल धोई ।
मानसरोवर दुरमत खोई ॥ ३० ॥
हंस रूप होय सुरत समानी ।
शब्द अगम धुन अन्तर जानी ॥३१॥
महा सुन्न के ऊपर गाजी* ।
राधास्वामी हो गये राज़ी ॥ ३२ ॥
भँवरगुफा की खिड़की खोली ।
सत्तपुरुष की सुन लई बोली ॥ ३३ ॥
हंस सभी अगवानी धाये ।
अलख लोक से लेवन आये ॥ ३४ ॥
सुरत सिरोमन पहुँची धाई ।
अलख पुरुष का दर्शन पाई ॥ ३५ ॥
नाना बिधि जहाँ बजत बधाई ।
हंस सभी मिल आरत लाई ॥ ३६ ॥
अगम लोक जाय झंडा† गाड़ा ।
अगम पुरुष का भेद उघाड़ा‡ ॥ ३७ ॥

*ऊंची आवाज़ से बोली । † पताका । ‡ प्रघट किया ।

वहाँ का मरम न कोई आखा* ।
बिरले सन्त गुप्त कर भाखा ॥ ३८ ॥
जीव दया अब अति कर आई ।
राधास्वामी खुलकर गाई ॥ ३९ ॥
मानो रे मानो जीव अभागी ।
राधास्वामी करिहैं सभागी ॥ ४० ॥
धाओ दौड़ो पकड़ो चरना ।
जैसे बने तैसे आओ सरना ॥ ४१ ॥
फिर औसर नहिं पाओ रे ऐसा ।
अब कारज करो जैसा रे तैसा ॥ ४२ ॥
छोड़ो कर्म भर्म पाखण्डा ।
सुरत चढ़ा फोड़ो ब्रह्मण्डा ॥ ४३ ॥
जब होवे हिये सुरत अखण्डा ।
पहुँचे सत्त लोक सचखण्डा ॥ ४४ ॥
वहाँ से अलख लोक को धावे ।
अगम लोक में जाय समावे ॥ ४५ ॥
अगम पुरुष का दरशन करई ।
अद्भुत रूप सुरत जब धरई ॥ ४६ ॥

* कहा ।

हंसा पाँति जोड़ जहाँ बैठे ।
झुण्ड* झुण्ड जहाँ रहैं इकट्ठे ॥ ४७ ॥
अरबन खरबन भान उजारा ।
कहा कहुँ सोभा भूम अपारा ॥ ४८ ॥
कँवलन क्यारी चहुँ दिश लागी ।
झालर मोती झुमझुम† आगी ॥ ४९ ॥
राग रंग धुन अति झनकारा ।
अमी सरोवर‡ भरे हैं अपारा ॥ ५० ॥
हीरे लाल रतन की धरती ।
चाँद सुरज की चादर तनती§ ॥ ५१ ॥
जहाँ राधास्वामी का तख़्त|| बिराजे ।
हंस मण्डली अद्भुत राजे ॥ ५२ ॥
धूम धाम नित होत सवाई** ।
आनन्द मंगल दिन प्रति गाई ॥ ५३ ॥
ऐसा देश रचा राधास्वामी ।
निज भक्तन को करैं बिसरामी ॥ ५४ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

राधास्वामी धरा नर रूप जक्त मैं ।
गुरु होय जीव चिताये ॥ १ ॥

* समूह । † लटकती हुई । ‡ ताल । § फैली हुई । || सिंहासन । ** अधिक ।

जिन जिन माना बचन समझ के।
तिनको संग लगाये ॥ २ ॥
कर सतसंग सार रस पाया।
पी पी तृप्त अघाये* ॥ ३ ॥
गुरु सँग प्रीत करी उन ऐसी।
जस चकोर चन्दाये ॥ ४ ॥
गुरु बिन कल नहिं पड़त घड़ी इक।
दम दम मन अकुलाये† ॥ ५ ॥
जब गुरु दर्शन मिलें भाग से।
मगन होत जस बछड़ा गाये ॥६॥
ऐसी प्रीत लगी जिन गुरुमुख।
सो सो गुरु अपनाये ॥ ७ ॥
तन की लगन भोग इन्द्री के।
छिन में सब बिसराये‡ ॥ ८ ॥
गुरु की सूरत बसी हिये में।
आठ पहर गुरु संग रहाये ॥ ९ ॥
अस गुरु भक्ति करी जिन पूरी।
ते ते नाम समाये ॥ १० ॥

*तृप्त हो गये। †घबराये। ‡भूले।

स्वाँति बूँद जस रटत* पपीहा ।
　अस धुन नाम लगाये ॥ ११ ॥
नाम प्रताप सुरत अब जागी ।
　तब घट शब्द सुनाये ॥ १२ ॥
शब्द पाय गुरु शब्द समानी ।
　सुन्न शब्द सत शब्द मिलाये ॥ १३ ॥
अलख शब्द और अगम शब्द ले ।
　निज पद राधास्वामी आये ॥ १४ ॥
पूरा घर पूरी गत पाई ।
　अब कुछ आगे कहा न जाये ॥ १५ ॥

॥ बचन दूसरा ॥

सिफ़त राधास्वामी नाम की

॥ सिफ़त पहिली ॥

॥ सोरठा ॥

राधास्वामी नाम, सिफ़त† करूँ इस नाम की
सुनो कान दे आन,‡ भिन्न§२ बरनन करूँ॥१॥
　पाँच अक्षर आये हिंदी में ।
　ज़बाँ|| फ़ारसी अक्षर दस में ॥ २ ॥

* सुमिरता है। †महिमा। ‡आकरके। §जुदा। ||भाषा।

पाँच शब्द का भेद बतावैं।
दस मुक़ाम को ले पहुँचावैं ॥ ३ ॥

॥ सिफ़त दूसरी ॥

एक सिफ़त यह बर्णा* बताई।
सिफ़त दूसरी खुल कर गाई ॥ १ ॥
राधा धुन का नाम सुनाऊँ।
स्वामी शब्द भेद बतलाऊँ ॥ २ ॥
धुन और शब्द एक कर जानो।
जल तरंग सम भेद न मानो ॥ ३ ॥

॥ सिफ़त तीसरी ॥

सिफ़त तीसरी कहूँ बखाना।
सुनो चित्त से देकर काना ॥ १ ॥
राधा प्रीत लगावनहारी†।
स्वामी प्रीतम नाम कहा री ॥ २ ॥
यह भी सिफ़त बताय दई री।
राधास्वामी सुरत शब्द गाया री ॥३॥

॥ सिफ़त चौथी ॥

राधा आदि सुरत का नाम।
स्वामी आदि शब्द निज धाम ॥ १ ॥

*बयान करके। † लगाने वाली।

सुरत शब्द और राधास्वामी ।
दोनौं नाम एक कर जानी ॥ २ ॥
सुरत शब्द सँग करै बिलास ।
यौं राधा स्वामी ढिँग* बास ॥ ३ ॥
राधा स्वामी दो कर जान ।
होयँ एक सत लोक ठिकान ॥ ४ ॥

॥ बचन तीसरा ॥

महिमा परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी की जोकि सन्त सतगुर रूप धारन करके वास्ते उद्धार जीवौं के जगत मैं प्रगट हुए और बर्णन प्रेम प्रीत उनके चरण कँवल मैं ।

॥ सोरठा ॥

राधास्वामी नाम, जो गावे सोई तरे ।
कलकलेश सब नाश, सुख पावे सब दुख हरे॥१॥
ऐसा नाम अपार, कोई भेद न जानई ।
जो जाने सो पार, बहुर न जग मैं जन्मई ॥२॥

* पास ।

॥ शब्द पहिला ॥

अकह अपार अगाध अनामी ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १ ॥
हैरत[*] रूप अथाह दवामी[†] ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ २ ॥
अगम रूप धर आये अगामी[‡] ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ३ ॥
अलख धाम के फिर हुए धामी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ४ ॥
सत्तलोक में हुए सत नामी ।
वह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ५ ॥
भँवरगुफा बैठे अन्तरजामी ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ६ ॥
महासुन्न पर बैठक ठानी[§] ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ७ ॥
सुन में अक्षर[‖] रूप मुक़ामी ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ८ ॥

[*] अचरज । [†] हमेशा कायम रहनेवाला, चिरस्थाई । [‡] जहां किसी का गम याने पहुंच न हो । [§] मुक़र्रर किया । [‖] अविनाशी ।

गगन मँडल ओंकार अकासी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ९ ॥
रूप निरंजन धारा श्यामी* ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १० ॥
मन के घाट हुए अब कासी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ११ ॥
इन्द्री घाट बिकार घटासी† ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १२ ॥
अस्थूल रूप धर जक्त जगासी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १३ ॥
त्रिगुन रूप जग रचना रचासी ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १४ ॥
अललपच्छ‡ रूप फिर उलटासी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १५ ॥
पहुँचे फिर निज धाम अनामी ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १६ ॥
फिर हुए जस थे प्रथम अनामी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १७ ॥

* श्याम रंग । † दूर किया । ‡ एक अकाशी-पंछी जो अन्डेसे निकलते ही आसमान को लौट जाता है याने ज़मीन तक नहीं आता ।

महिमा उनकी कस कहु गामी* ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १८ ॥
बार बार मैं करूँ नमामी ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १९ ॥
जोगी ज्ञानी मर्म न जानी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ २० ॥
ब्रह्मा बिष्णु महेश भुलानी ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ २१ ॥
गौर† सवित्री लछमी न जानी ।
गति मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ २२ ॥
शेष गनेश कुरम‡ अज्ञानी ।
जस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ २३ ॥
ऋषि मुनि नारदादि भटकानी ।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ २४ ॥
सनकादिक पित्रादि न जानी ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ २५ ॥
देवी देव रहे पछतानी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ २६ ॥

* गाऊँ । † पारवती । ‡ ओंकार ।

ईश्वर परमेश्वर भरमानी ।
क्या मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ २७ ॥
बेद कतेब पुराण नहानी * ।
मत मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ २८ ॥
चाँद सुरज तारा गगनानी ।
जाने न मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ २९ ॥
अल्ला खुदा रसूल† न मानी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ३० ॥
इन भी भेद नहीं पहिचानी ।
जस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ३१ ॥
गङ्गा जमुना सार न जानी ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ३२ ॥
तीरथ बरत जगत लिपटानी ।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ३३ ॥
तीन लोक सब काल चबानी‡ ।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ३४ ॥
कोइ न परखे तुम्हरी बानी ।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ३५ ॥

* नहीं जाना । † पैगम्बर । ‡ खायगा ।

महिमा कहाँ लग बर्न बखानी ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ३६ ॥
दर्शन रस ले रहूँ अघानी* ।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ३७ ॥
चरन सरन मैं रहुँ लिपटानी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ३८ ॥
दर्श लैन रस रहुँ तृप्तानी ।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ३९ ॥
बचन सुना दइ अगम निशानी ।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ४० ॥
सुरत शब्द मारग दरसानी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ४१ ॥
भेद पाय मैं रहूँ समानी ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ४२ ॥
होय न कुछ कभि मेरी हानी† ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ४३ ॥
मैं नारी तुम पुरुष सुजानी ।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ४४ ॥

* तृप्त । † नुक़सान ।

बिरह भाव में हुई दिवानी* ।
देख मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ४५ ॥
जम जगात† कुछ लगे न लगानी ।
बल मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ४६ ॥
कलमल दाग़ धुले व धुलानी ।
पाये मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ४७ ॥
जन्म जन्म रही धोख धुखानी‡ ।
क्या मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ४८ ॥
अब मेरा भाग जगा जगजानी ।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ४९ ॥
काम क्रोध नहिँ लोभ लुभानी ।
गये मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ५० ॥
जाल ज़बर अब सभी कटानी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ५१ ॥
धाम मिला जहाँ अचरज बानी ।
दिया मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ५२ ॥
सन्तन साथ हुई सन्तानी ।
जो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ५३ ॥

* मस्त । † कर, महसूल । ‡ धोखा खाया ।

बारम्बार करूँ परनामी ।

वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ५४ ॥

धाम आपना भला दुरानी ।

तुम मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ५५ ॥

तुम्हरी गति कुछ अजब कहानी ।

सुनी मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ५६ ॥

मैं रही निस दिन नाम दिवानी ।

तुम्हरे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ५७ ॥

काल मार तुम दूर हटानी ।

वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ५८ ॥

मैं बल जाउँ चरन कुरबानी ।

हे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ५९ ॥

गावत गुन तुम अति हरखानी ।

ऐसे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ६० ॥

देख रूप तुम रहुँ मगनानी ।

वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ६१ ॥

मैं चकोर तुम चन्द समानी ।

वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ६२ ॥

* छिपाया । † बखान करना ।

मैं बिरहन तुम दर्श धुमानी* ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ६३ ॥
मैं पल पल तुम दर्श दिवानी† ।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ६४ ॥
तुम्हरे बचन मद झूम झुमानी‡ ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ६५ ॥
तुम स्वाँती मैं सीप निमानी§ ।
यों मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ६६ ॥
तुम्हरी गति मति गोप‖ छिपानी ।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ६७ ॥
तुमही सब बिधि लीला ठानी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ६८ ॥
ज्यों पपिहा स्वाँती तरसानी ।
मैं रहुँ मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ६९ ॥
तुम चुम्बक मैं लोह कठिनानी ।
खिँच रहुँ मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ७० ॥
मैं मृगनी तुम नाद समानी ।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ७१ ॥

*मतवाली । † मस्त । ‡ मतवाली हुई । § दीन । ‖ गुप्त ।

मैं मछली तुम हुए मेरे पानी ।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ७२ ॥

राम न जाना कृष्ण न जानी ।
तुम को मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ७३ ॥

सीता रुक्मिन और पटरानी* ।
सुने न मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ७४ ॥

ईसा मूसा मरियम† मानी ।
चूके मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ७५ ॥

कुलकर‡ और सुरादेवी§ रानी ।
पाये न मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ७६ ॥

कुतुब|| पैग़म्बर ग़ौस|| ख्वानी|| ।
मिले न मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ७७ ॥

हिन्दू मुसलमान क्या जानी ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ७८ ॥

ध्रू प्रहलाद न मरम पिछानी ।
ऐसे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ७९ ॥

नहिँ धरती नहिँ वहाँ असमानी ।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ८० ॥

---

* महारानी । † ईसा की मा । ‡ जैनियों के देवता । § जैनियों की आदि माता । || फ़कीर, मुसलमानों के महात्मा ।

पवन न अग्नी और नहिँ पानी ।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ८१ ॥
तीनों गुन महा तत्त न जानी ।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ८२ ॥
नहिँ आलम परमातम धामी ।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ८३ ॥
सुन्न और महा सुन्न अलगानी ।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ८४ ॥
भँवरगुफा संतलोक निचानी ।
ऊँचे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ८५ ॥
अलख लोक और अगम ठिकानी ।
तिस परे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ८६ ॥
और न कोइ रहे नाम निशानी* ।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ८७ ॥
महिमा वहाँ की तुले न तुलानी ।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ८८ ॥
षट शास्तर नहिँ आदि पुरानी ।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ८९ ॥

* रेखा ।

तीन लोक नहिँ चौथे धामी ।
जहाँ बसैं मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ९० ॥
पंडित भेष न शेख़ पिछानी ।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ९१ ॥
ऐसे चरन पर हुई मस्तानी ।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ९२ ॥
कामादिक सब दीन लुटानी ।
तब मिले मेरे प्यारे राधास्वामी ॥९३॥
हुई सफ़ाई गगन चढ़ानी ।
तब लिये मेरे प्यारे राधास्वामी ॥९४॥
पंथ चली गई अधर ठिकानी ।
मिल गये मेरे प्यारे राधास्वामी ॥९५॥
अति बिलास आनन्द हुलसानी* ।
मिल गये मेरे प्यारे राधास्वामी ॥९६॥
जहाँ तहाँ बज्र कपाट खुलानी ।
देखे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ९७ ॥
सतजुग त्रेता द्वापर† छिपानी ।
कलि प्रगटे प्यारे राधास्वामी ॥ ९८ ॥

*खुश हुआ । † द्वापर ।

खोज दिया और किया अपनामी ।
ऐसे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ ९९ ॥
तिमर* हटाया रैन बिहानी† ।
भानु रूप प्यारे राधास्वामी ॥ १०० ॥
भानु अनन्त उगे‡ घट आनी ।
ऐसे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १०१ ॥
कोइ गति मति उन जाने न जानी ।
जस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १०२ ॥
अङ्ग अङ्ग में प्रेम रँगानी ।
बसे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १०३ ॥
चरण न भूले देह भुलानी ।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १०४ ॥
मम हिरदे तुम रहो लुकानी§ ।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १०५ ॥
जुग‖ नाहिँ छूटै रहूँ जुगानी ।
बर दो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥१०६॥
कालि सराप तुम दूर बहानी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १०७ ॥

* अन्धेरा । † बीती । ‡ उदय हुए । §गुप्त । ‖ज़ोड़ा ।

जस कमोदनी* चन्द्र दिवानी ।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १०८ ॥
गुरु स्वरूप आये राधास्वामी ।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ॥ १०९ ॥

॥ दूसरा शब्द ॥

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
गुन गाऊँ उनका सार ॥ १ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
मुख देखूँ नैन निहार ॥ २ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
करूँ सरवन बचन अधार ॥ ३ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
सब सेवा करूँ सम्हार ॥ ४ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
नित हाज़िर खड़ी दरबार ॥ ५ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
हुई दासी चरन निहार ॥ ६ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
लइ सरना अब की बार ॥ ७ ॥

* कोई का फूल ।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
उन कीन्ही दया अपार ॥ ८ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सब छूट गया संसार ॥ ९ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
फिर त्यागा कुल परिवार ॥ १० ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
लज्जा जग दई निवार* ॥ ११ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मैं पकड़ी उनकी लार† ॥ १२ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
कामादिक दिये निकार ॥ १३ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मल धोये सब ही झाड़‡ ॥ १४ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
ईरषा दई चित्त से डार ॥ १५ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मान मद भागे बड़े गँवार ॥ १६ ॥

* निकाल दी। † संग। ‡सब।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
सफ़ाई हो गई हिये मँझार ॥ १७ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
घट आई उलटी धार ॥ १८ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
मैं छोड़े अब नौ द्वार ॥ १९ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
फिर हुई वार से पार ॥ २० ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
नभ* आई मन को मार ॥ २१ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
तिल देखूँ अजब बहार ॥ २२ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की
जहाँ झिल मिल जोत उजार ॥ २३ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
पचरंगी गुल† गुलज़ार‡ ॥ २४ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
यह लीला लखी नियार§ ॥ २५ ॥

*चिदाकाश। †फूल। ‡फुलवारी, बाग़ीचा। §जुदा, न्यारी।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
कंज* में करती आज बिहार ॥ २६ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
चली आगे को पग धार ॥ २७ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
चढ़ खोला बंक दुआर ॥ २८ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
त्रिकुटी में देख बहार ॥ २९ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
सुन्न चढ़ आई दसवें द्वार ॥ ३० ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
महासुन्न खेली खेल अपार ॥ ३१ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
गुफा में सुनी एक झनकार ॥ ३२ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
अमर पद पहुँची खोल किवाड़ ॥३३॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
बीन की सुनी जहाँ धधकार ॥ ३४ ॥

* सहसदल कंवल ।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
व्याल सँग पाया काल बिडार* ॥ ३५ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
शब्द का चढ़ गया आज खुमार† ॥३६॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
अलख में पहुँची लगन सुधार ॥ ३७ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
अगम का पाया अब भंडार ॥ ३८ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
राधास्वामी देखा मैं दीदार ॥ ३९ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
मिटा मेरे घट का सबही खार‡ ॥४०॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
लगी मेरी नौका आन किनार ॥ ४१ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
उतर गया जनम जनम का भार ॥४२॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
ममत और माया डाली मार ॥ ४३ ॥

* दूर करके । † नशा । ‡ मैल, कड़वाई ।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
मिटाया कर्म भर्म गुब्बार* ॥ ४४ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
मिले अब मेरे निज दिलदार† ॥४५॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
हुई मैं उनके गल की हार ॥ ४६ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
बिरोधी बैठे सबही हार ॥ ४७ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
लिया अब ऐसा अगम बिचार ॥४८॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
बहूँ नहिँ कबही भौ की धार ॥ ४९ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
रहूँ मैं निस दिन अब हुशियार ॥५०॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
तिमर भी नासा हुआ उजियार ॥५१॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
हुई अब छिन छिन शुकरगुज़ार‡ ॥५२॥

* अन्धकार । † प्रीतम । ‡ धन्यधन्य ।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
डारिया उन पर तन मन वार ॥५३॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
दिया औघट* से घाट उतार ॥ ५४ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
किया राधास्वामी यह सिंगार ॥५५॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
हुई मैं अब उन नाम अधार ॥ ५६ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
गई मैं अपने निज घरबार ॥ ५७ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
लगी मैं रूप निहार निहार ॥ ५८ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
हुआ मैं† सेवा संग पियार ॥ ५९ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
मिली निज बस्ती छुटा उजाड़‡ ॥६०॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
सुन्न में खेलूँ शब्द सम्हार ॥ ६१ ॥

* उलटा घाट । † मोहिं । ‡ जंगल ।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
सुनूँ धुन किंगरी सारँग सार ॥ ६२ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
जलाऊँ सभी काल का जार* ॥ ६३ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
जगत का घटा सभी विस्तार ॥ ६४ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
लगी अब सूरत तज अहंकार ॥ ६५ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
लोभ भी मारा बड़ा लबार† ॥ ६६ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
मोह भी भागा अजब असार ॥ ६७ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
काम पर पड़ी बहुत धिरकार ॥ ६८ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
काल दल जीता जीती नार‡ ॥ ६९ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
देखती घट में अब गुलज़ार§ ॥ ७० ॥

* जाल । † झूँठा । ‡ माया । § फुलवार ।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
काट अब डारा सब जंजार ॥ ७१ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
सुनूँ मैं तन में राग धमार* ॥ ७२ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
सुरत अब हुई बहुत सरशार† ॥ ७३ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
मूल गह‡ छोड़ दई सब डार ॥ ७४ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
चढ़न को आगे हूँ तइयार ॥ ७५ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
सिंघ§ भी भागा देख सियार‖ ॥ ७६ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
शब्द की बाँधी कमर कटार ॥ ७७ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
गुरू ने दीन्ही अस तलवार ॥ ७८ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
सूरमा** सुरत चढ़ी ललकार†† ॥ ७९ ॥

*राग का नाम । †मस्त । ‡पकड़ कर । §काल । ‖जीव । **शूरवीर । ††पुकार ।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
करम दल* भागा सुनत पुकार ॥ ८० ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
भरम भी भागा बाजी तार† ॥ ८१ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
दूर हुई मन से जम की कार‡ ॥ ८२ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
गई अब सूरत गगन मँझार ॥ ८३ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
चाँदनी घट में खिली अगार§ ॥ ८४ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
सुरत अस चढ़ती बारम्बार ॥ ८५ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
खोलिया सुन का बज्र किवाड़ ॥ ८६ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
हुई अब हलकी उतरा भार ॥ ८७ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
सुनी धुन घट में रारंकार ॥ ८८ ॥

* फ़ौज । † शब्द । ‡ करतूत । § प्रकाशवान ।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
अमीजल भरा हुई पनिहार* ॥ ८९ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
बंद सब टूटे हुआ छुटकार ॥ ९० ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
मिला अस मौसम† सदा बहार ९१॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
ख़िज़ाँ‡ का काँटा दिया निकार ॥ ९२ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
गुरू ने लीन्हा गोद बिठार ॥ ९३ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
सुनाई पहिले धुन ओंकार ॥ ९४ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
करूँ मैं सेवा इक इक न्यार ॥ ९५ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
छुटाई गुरु ने जग बेगार ॥ ९६ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
मिला अब प्रेम भक्ति औज़ार§ ॥ ९७ ॥

*पानी भरने वाली । †ऋतु । ‡पतझड़ । §हथियार ।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
दिया सब घट का कूड़ा टार ॥ ९८ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
चली अब सुरत शब्द की लार ॥ ९९ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
दिया मैं तन मन अपना वार ॥१००॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
गुफा चढ़ सुनी बीन झनकार ॥१०१॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
किया मैं अलख अगम को पार ॥१०२॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
दिया राधास्वामी पार उतार ॥१०३॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
हुई मैं उन पर अब बलिहार ॥१०४॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
नाम रस पाया किया अहार ॥१०५॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
सब अटक मिटा आचार ॥ १०६ ॥

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
भोग सब हो गये अब बीमार ॥ १०७ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
करूँ नहिं उनका कुछ तीमार* ॥१०८॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
भँवर मन बैठा सुन गुंजार ॥ १०९ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
अगम सुख पाया नहीं शुमार† ॥११०॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
मौन होय बैठी तज गुफ़्तार‡ ॥१११॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
मिला मोहिं आज सार का सार§ ॥११२॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
सोई है सब का सत करतार ॥ ११३ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
रहूँ मैं उसको सदा चितार‖ ॥ ११४ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
हंस जहाँ बैठें बहुत क़तार** ॥ ११५ ॥

*ख़ातिरदारी, ग़मख़्वारी । † गिनती । ‡ बोलना । § खुलासा, जौहर । ‖ याद रखना । ** पंक्ती ।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
आनँद अब मिला मोहिं बिसियार* ॥११६॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
किया मैं सब से आज किनार† ॥११७॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
करूँ मैं गुरु सँग बहुत पियार ॥११८॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
मिले राधास्वामी अति दातार ॥११९॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
गही मैं सरना आज तुम्हार ॥ १२० ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
बोझ मैं डाला सभी उतार ॥ १२१ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
तीन तज पाया मैं पद चार ॥ १२२ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
छुटाया मुझ से खेल असार‡ ॥ १२३ ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
किया मैं मन का आज शिकार ॥१२४॥

* अधिक । † जुदा । ‡ असत्त, झूठा ।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की ।
गई मैं राधास्वामी की सरकार ॥१२५॥

॥ शब्द तीसरा ॥

राधास्वामी नाम सुनाया राधास्वामी ।
राधास्वामी रूप दिखाया राधास्वामी ॥१॥
राधास्वामी धाम लखाया राधास्वामी ।
राधास्वामी खेल खिलाया राधास्वामी ॥२॥
राधास्वामी मेल मिलाया राधास्वामी ।
राधास्वामी पंथ चलाया राधास्वामी ॥३॥
राधास्वामी सेव कराई राधास्वामी ।
राधास्वामी भेव* जनाई राधास्वामी ॥४॥
राधास्वामी मौज चलाई राधास्वामी ।
राधास्वामी सिफ़त† कहाई राधास्वामी ॥५॥
राधास्वामी गुन मैं गाऊँ राधास्वामी ।
राधास्वामी महिमा सुनाऊँ राधास्वामी ॥६॥
राधास्वामी आरत बनाई राधास्वामी ।
राधास्वामी जोत जगाई राधास्वामी ॥७॥
राधास्वामी मर्म लखावैं राधास्वामी ।

*भेद । †महिमा ।

राधास्वामी भेद सुनावैं राधास्वामी ॥८॥
राधास्वामी सुरत शब्द राधास्वामी ।
राधास्वामी धुनन† बुलाई राधास्वामी ॥९॥
राधास्वामी संग कराया राधास्वामी ।
राधास्वामी रंग चढ़ाया राधास्वामी ॥१०॥
राधास्वामी बूझ* बुझाई राधास्वामी ।
राधास्वामी सूझ सुझाई राधास्वामी ॥११॥
राधास्वामी भान‡ किरन राधास्वामी ।
राधास्वामी सिंध बुन्द राधास्वामी ॥१२॥
राधास्वामी चन्द कला राधास्वामी ।
राधास्वामी गगन गिरा§ राधास्वामी ॥१३॥
राधास्वामी धरनि नीर राधास्वामी ।
राधास्वामी अग्नि पवन राधास्वामी ॥१४॥
राधास्वामी तीन‖ चार** राधास्वामी ।
राधास्वामी एक†† दोय‡‡ राधास्वामी ॥१५॥
राधास्वामी सात§§ बीस‖‖ राधास्वामी ।
राधास्वामी सहस*** दसम††† राधास्वामी ॥१६॥

---

* समझ । † निरनय । ‡ सूरज । § बानी, शब्द । ‖ तीन गुन । ** चार अन्तः करन । †† सत्तपुरुष राधास्वामी । ‡‡ ब्रह्म माया । §§ सात द्वारे । ‖‖ दस इन्द्री और उनके दस देवता । *** सहस दल कँवल । ††† दसवाँ द्वार ।

राधास्वामी कंजश्याम* राधास्वामी ।
राधास्वामी सेत सुन्न राधास्वामी ॥१७॥
राधास्वामी ओंग रंग राधास्वामी ।
राधास्वामी सोहँग सत्त राधास्वामी ॥१८॥
राधास्वामी अलख अगम राधास्वामी ।
राधास्वामी आप हुए राधास्वामी ॥१९॥
राधास्वामी महिमा कहें राधास्वामी ।
राधास्वामी अस्तुत करें राधास्वामी ॥२०॥
राधास्वामी सार लखावें राधास्वामी ।
राधास्वामी प्यार करावें राधास्वामी ॥२१॥
राधास्वामी चरन पुजावें राधास्वामी ।
राधास्वामी पाट† खुलावें राधास्वामी ॥२२॥
राधास्वामी शब्द बतावें राधास्वामी ।
राधास्वामी देस बुझावें राधास्वामी ॥२३॥
राधास्वामी गुप्त प्रकाशें राधास्वामी ।
राधास्वामी तेज निहारें राधास्वामी ॥२४॥
राधास्वामी सम देखें राधास्वामी ।
राधास्वामी गम‡ खोलें राधास्वामी ॥२५॥

* तीसरा तिल । † परदा । ‡ भेद ।

राधास्वामी गाऊँ ध्याऊँ राधास्वामी ।
राधास्वामी पुर्ष अर्श* राधास्वामी ॥२६॥
राधास्वामी गीत नाद राधास्वामी ।
राधास्वामी गान गवाया राधास्वामी॥२७॥
राधास्वामी छान† छनाई राधास्वामी ।
राधास्वामी प्रीत लगाई राधास्वामी॥२८॥
राधास्वामी मथन मथाई राधास्वामी ।
राधास्वामी आद अन्त राधास्वामी॥२९॥
राधास्वामी मद्ध बिराजैं राधास्वामी ।
राधास्वामी जुक्त जतन राधास्वामी ॥३०॥
राधास्वामी रतन लाल राधास्वामी ।
राधास्वामी दयाल कृपाल राधास्वामी॥३१॥
राधास्वामी आन‡ सनाई राधास्वामी ।
राधास्वामी आन जगाई राधास्वामी॥३२॥
राधास्वामी पीव§ पिता राधास्वामी ।
राधास्वामी गुरू संत राधास्वामी ॥ ३३ ॥
राधास्वामी अजर अमर राधास्वामी ।
राधास्वामी कुरम‖ शेष** राधास्वामी॥३४॥

* चेतन्न आकाश । † निरनय । ‡ हुकम । § पति । ‖ ब्रह्म । **पारब्रह्म ।

राधास्वामी चेत मिलो राधास्वामी ।
राधास्वामी खेत जिताया राधास्वामी॥३५॥
राधास्वामी भक्ति सिखाई राधास्वामी ।
राधास्वामी भाव बढ़ाया राधास्वामी॥३६॥
राधास्वामी सुमिर सुमिर राधास्वामी ।
राधास्वामी लगन लगाई राधास्वामी॥३७॥
राधास्वामी तोल तुलावैं राधास्वामी ।
राधास्वामी मोल अमोल राधास्वामी॥३८॥
राधास्वामी नेम प्रेम राधास्वामी ।
राधास्वामी धरम करम राधास्वामी ॥३९॥
राधास्वामी जुक्त जोग राधास्वामी ।
राधास्वामी भुक्त भोग राधास्वामी ॥४०॥
राधास्वामी रैन दिवस राधास्वामी ।
राधास्वामी निमख* जाम† राधास्वामी॥४१॥
राधास्वामी धूप छाँव राधास्वामी ।
राधास्वामी सूर‡ सोम§ राधास्वामी ॥४२॥
राधास्वामी जाप मौन राधास्वामी ।
राधास्वामी नैन हृदय राधास्वामी ॥४३॥

* पल । † पहर । ‡ सूरज । § चांद ।

राधास्वामी अन्तर बाहर राधास्वामी ।
राधास्वामी गोप्य* प्रत्यक्ष† राधास्वामी ॥४४॥
राधास्वामी अधर धरनि राधास्वामी ।
राधास्वामी व्याप व्यापक राधास्वामी ॥४५॥
राधास्वामी दात दाता राधास्वामी ।
राधास्वामी करन कारन राधास्वामी ॥४६॥
राधास्वामी तरन तारन राधास्वामी ।
राधास्वामी सृष्ट सृष्टा राधास्वामी ॥ ४७ ॥
राधास्वामी दृष्ट दृष्टा राधास्वामी ।
राधास्वामी ब्रत तीरथ राधास्वामी ॥४८॥
राधास्वामी बेद कतेब राधास्वामी ।
राधास्वामी गाय गवाओ राधास्वामी ॥४९॥
राधास्वामी पूज पुजाओ राधास्वामी ।
राधास्वामी अपर अपार राधास्वामी ॥५०॥
राधास्वामी अधर अधार राधास्वामी ।
राधास्वामी अगम अगाध राधास्वामी ॥५१॥
राधास्वामी परम अगार राधास्वामी ।
राधास्वामी कँवल भँवर राधास्वामी ॥५२॥

* गुप्त । † प्रगट ।

राधास्वामी उधर इधर राधास्वामी ।
राधास्वामी अघड़ सुघड़ राधास्वामी॥५३॥
राधास्वामी डाल मूल राधास्वामी ।
राधास्वामी गाऊँ सब गाओ राधास्वामी॥५४॥

॥ शब्द चौथा ॥

राधास्वामी आय प्रगट हुए जब से ।
राधास्वामी नाम सुनावें तब से ॥१॥
राधास्वामी नाम जपूँ मैं मन से ।
राधास्वामी दरस मिला अब तन से ॥२॥
राधास्वामी दरस करूँ नैनन से ।
राधास्वामी बचन सुनूँ सरवन से ॥ ३ ॥
राधास्वामी कहत रहूँ हियरे से ।
राधास्वामी सुनत रहूँ जियरे से ॥ ४ ॥
राधास्वामी नाम धरूँ प्रानन से ।
राधास्वामी नाम गहूँ इन्द्रिन से ॥ ५ ॥
राधास्वामी राह चलूँ पाँवन* से ।
राधास्वामी सेव करूँ दोउ कर से ॥ ६ ॥
राधास्वामी संग करूँ सब घर† से ।
राधास्वामी पास बसूँ अति डर से ॥ ७ ॥

* पैरों । †देह ।

राधास्वामी गाय रही मैं उमँग से ।
राधास्वामी ध्याय रही कोइ दिन से ॥८॥
राधास्वामी रटन लगी दम दम से ।
राधास्वामी याद बढ़ी छिन छिन से॥९॥
बिसरत नहिँ राधास्वामी जिगर* से ।
बिछड़त नहिँ राधास्वामी पलक से ॥१०॥
राधास्वामी रूप देख दोउ तिल से ।
राधास्वामी प्रीत लगी मेरे दिल से ॥११॥
राधास्वामी बोले इक दिन मुझ से ।
राधास्वामी पर बल† गई उस दिन से ॥१२॥
राधास्वामी महिमा क्या कहुँ किस से ।
राधास्वामी सरन छुड़ावत जम से ॥१३॥
राधास्वामी अलग किया भरमन से ।
राधास्वामी लिया छुटा करमन से ॥१४॥
राधास्वामी लिया लगा चरनन से ।
राधास्वामी आये देश अगम से ॥ १५ ॥
राधास्वामी हंस किया मोहिँ नर से ।
राधास्वामी दान दिया निज घर से ॥१६॥

* कलेजा । † बलिहार हुई ।

राधास्वामी भेद सुनाया धुर से ।
राधास्वामी मोहिँ छुड़ाया हम से ॥१७॥
राधास्वामी अपना किया जक्त से ।
राधास्वामी निपट* बचाया छल से ॥१८॥
राधास्वामी पार किया भौजल से ।
प्रेम लगा राधास्वामी गुरु से ॥ १९ ॥
मैं चकोर राधास्वामी चन्द से ।
मैं कँवला राधास्वामी भान से ॥ २० ॥
मैं कोकिल राधास्वामी अम्ब† से।
मैं भौंरा राधास्वामी कँवल से ॥ २१ ॥
मैं दिनकर‡ राधास्वामी गगन से ।
मैं फनधर§ राधास्वामी मणि से ॥ २२ ॥
मैं बाली राधास्वामी मात से ।
मैं कुमार राधास्वामी तात‖ से ॥ २३ ॥
मैं दरदी राधास्वामी शान्ति से ।
मैं चकवी राधास्वामी क्रान्ति** से ॥२४ ॥
मैं घायल राधास्वामी बिरह से ।
मैं मायल†† राधास्वामी तरह‡‡ से ॥ २५ ॥

* बिलकुल । † आम का दरख़्त । ‡ सूरज । § साँप । ‖ पिता । ** सूरज का प्रकाश । †† मोहित । ‡‡ छवि, अन्दाज़ ।

राधास्वामी शब्द लखाया जुक्ति से ।
राधास्वामी नाम कमाया भक्ति से ॥ २६ ॥
मैं प्यारी राधास्वामी प्यार से ।
मैं मीना राधास्वामी धार से ॥ २७ ॥
मैं अंडा राधास्वामी कुरम* से ।
मैं तरंग राधास्वामी सिन्ध से ॥ २८ ॥
मैं गगरी राधास्वामी नीर से ।
मैं कमान† राधास्वामी तीर से ॥ २९ ॥
मैं भई बन राधास्वामी सिंघ से ।
मैं हुई तन राधास्वामी जान से ॥ ३० ॥
मैं बृक्षा राधास्वामी सुफल से ।
मैं साखा राधास्वामी फूल से ॥ ३१ ॥
मैं दीपक राधास्वामी जोत से ।
मैं समुँदर राधास्वामी सोत से ॥ ३२ ॥
मैं धरनी राधास्वामी मेघ से ।
मैं सूरा राधास्वामी तेग़‡ से ॥ ३३ ॥
मैं देही राधास्वामी नैन से ।
मैं रसना राधास्वामी बैन से ॥ ३४ ॥

*कछुवा जो पानी में रहता है। † धनुष। ‡ तलवार।

मैं लोहा राधास्वामी नाव से।
मैं निरधन राधास्वामी साव* से। ३५॥
मैं सीपी राधास्वामी स्वाँति से।
मैं मोहित राधास्वामी भाँति से॥ ३६॥
मैं जीती राधास्वामी दाँव† से।
मैं तिरपत राधास्वामी भाव से॥ ३७॥
मैं ब्यंजन राधास्वामी नोन से।
मैं अंकुर राधास्वामी पौन से॥ ३८॥
मैं तारा राधास्वामी ब्योम‡ से।
मैं कमुदन§ राधास्वामी सोम॥ से॥ ३९॥
राधास्वामी मेहर चली मैं घट से।
राधास्वामी चरन पकड़ मेरी हठ से॥४०॥
राधास्वामी मोहिं हटाया कपट से।
राधास्वामी पार किया तिल पट से॥४१॥
राधास्वामी बंक चढ़ाया झट से।
राधास्वामी घाट मिला औघट से॥४२॥
राधास्वामी द्वार खुलाया त्रिकुट से।
राधास्वामी हन्स किया सर तट** से॥४३॥

* साहूकार, धनवान। † बाज़ी। ‡ आकाश। § कोई का फूल। ॥ चाँद।
** मानसरोवर तीर।

चढ़ी महासुन राधास्वामी बल से ।
राधास्वामी शुद्ध किया कलमल से ॥४४॥
राधास्वामी आज मिलाया सोहँग से ।
सत्तलोक आई राधास्वामी सँग से ॥४५॥
राधास्वामी अलख लखाया मौज से ।
राधास्वामी अगम दिखाया चौज* से ॥४६॥
राधास्वामी रूप लखा सूरत से ।
लगा प्रेम राधास्वामी मूरत से ॥ ४७ ॥
मिली जाय राधास्वामी चरन से ।
हुआ उद्धार राधास्वामी सरन से ॥४८॥
राधास्वामी धाम गई मैं धज† से ।
राधास्वामी मोहिं सिंगारी सज से ॥४९॥
राधास्वामी अङ्ग लगाया उमँग से ।
राधास्वामी भेद मिला सतसँग से ॥ ५० ॥
पार हुई राधास्वामी लगन से ।
राधास्वामी आज हटाया मलन‡ से ॥५१॥
उपमा राधास्वामी कहूँ कौन से ।
राधास्वामी काढ़ा सभी जोन से ॥५२॥

* विलास । † शान, सिंगार । ‡ मलीनता ।

राधास्वामी पाये बहुत कठिन से ।
मिल गये राधास्वामी बड़े जतन से ॥५३॥
पिऊँ अमी राधास्वामी धुन से ।
जाय रलूँ* राधास्वामी सुन से ॥ ५४ ॥

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

राधास्वामी लिया अपनाय सखी री ।
शोभा अद्भुत आज लखी री ॥ १ ॥
राधास्वामी बचन अगाध सुने री ।
राधास्वामी नाम अराध गुने† री ॥ २ ॥
राधास्वामी अगम अनाम लखे री ।
राधास्वामी गति कस बुद्धि सखे‡ री ॥३॥
राधास्वामी चरन सपर्श करे री ।
राधास्वामी हिरदे माहिँ धरे री ॥ ४ ॥
राधास्वामी सँग भौजाल भने§ री ।
राधास्वामी सङ्गत काल हने‖ री ॥ ५ ॥
राधास्वामी काढ़ लिया जग से री ।
राधास्वामी हन्स किया खग** से री ॥६॥

* एक रस होऊँ । † सुमिरन । ‡ कहे । § काटे । ‖ नाश किया । ** काग ।

राधास्वामी अजब सँदेस दिया री।
राधास्वामी कहत अँदेस गया री ॥ ७ ॥
राधास्वामी गोद बिठाया मुझे री।
राधास्वामी लेहैं उबार तुझे री ॥ ८ ॥
राधास्वामी शाम सुबह रट ले री।
राधास्वामी आठ जाम भज ले री ॥९॥
राधास्वामी पल पल हिये बसे री।
राधास्वामी मेहर जताऊँ किसे री ॥१०॥
राधास्वामी सङ्ग न कोई करे री।
राधास्वामी रङ्ग न कोई धरे री ॥ ११ ॥
राधास्वामी जिस पर मेहर करैं री।
राधास्वामी उसको पकड़ धरैं री ॥ १२ ॥
राधास्वामी मेहर बिना क्या गत री।
कस समझे राधास्वामी मत री ॥ १३ ॥
राधास्वामी चौथा लोक कहैं री।
राधास्वामी अलख अलोक भनैं † री ॥१४॥
राधास्वामी अगम सुगम करदें री।
राधास्वामी धाम जाय फिर ले री ॥१५॥

*सन्सय। † कहैं।

राधास्वामी मिले भाग से अब री ।
राधास्वामी पकड़ असो फिर कब री ॥१६॥
राधास्वामी लाग बढ़ा छिन छिन री ।
राधास्वामी तेज देख दिन दिन री ॥१७॥
राधास्वामी देह धरी आ जग री ।
राधास्वामी काल हटावैं ठग री ॥ १८ ॥
तू राधास्वामी सरन मत तज री ।
तू राधास्वामी चरन नित भज री ॥१९ ॥
राधास्वामी नाम कटैं सब अघ* री ।
राधास्वामी काया मथ ली सगरी† ॥२०॥
राधास्वामी शब्द रूप तू सुन री ।
राधास्वामी सुरत साथ ले धुन री ॥ २१॥
राधास्वामी संग मार ले मन री ।
राधास्वामी काटैं नागिन‡ फन री ॥२२ ॥
राधास्वामी से गुरु फिर न मिलैं री ।
राधास्वामी छोड़ैं न जिसे गहैं री ॥ २३ ॥
राधास्वामी महिमा कौन कहे री ।
बेद थके और शेष रहे री ॥ २४ ॥

* पाप। † कुल, सब। ‡ माया।

राधास्वामी गुप्त प्रगट हुए अब री ।
राधास्वामी भेद दिया मोहिं सब री ॥२५॥
राधास्वामी चमन* दिखाया घट री ।
राधास्वामी खोल दिये सब पट री ॥२६॥
राधास्वामी कला† खिलाई नट‡ री ।
राधास्वामी गगन चढ़ाया झट§ री ॥२७॥
राधास्वामी संग गई सुन तट री ।
राधास्वामी रंग लिया जग हट री ॥२८॥
राधास्वामी भरी आज सुत गगरी ।
राधास्वामी अजब दिखाई नगरी ॥२९॥
राधास्वामी संग रही मैं पंग‖ री ।
राधास्वामी दमक** लखी मैं सगरी ॥३०॥
राधास्वामी मिले भाग उठा जग री ।
अमर हुई राधास्वामी सँग लग री ॥३१॥
राधास्वामी सरन प्रीत हुई जिगरी ।
राधास्वामी अजब सुनाई धुन किंगरी॥३२॥
राधास्वामी किया मोहिं अपना री ।
राधास्वामी दिया मिटा खपना†† री ॥३३॥

* फुलवारी । † बाज़ी । ‡ मन । § जल्दी । ‖ मिलना । ** चमक ।
†† विरथा मिहनत करना ।

राधास्वामी जगत किया सुपना री ।
राधास्वामी दूर किया तपना री ॥ ३४ ॥
राधास्वामी नाम सदा जपना री ।
राधास्वामी दरस आज तकना री ॥ ३५ ॥
राधास्वामी भेद न काहु कहना री ।
राधास्वामी बिन जग बिच बहना री ॥ ३६ ॥
राधास्वामी दिया शब्द गहना* री ।
राधास्वामी चंद नहीं गहना† री ॥ ३७ ॥
राधास्वामी संग न दुख सहना री ।
राधास्वामी संग सुखी रहना री ॥ ३८ ॥
राधास्वामी परम बिलास दिया री ।
राधास्वामी भौजल पार किया री ॥ ३९ ॥
राधास्वामी कर्म भर्म काटे री ।
राधास्वामी चरन जभी चाटे री ॥ ४० ॥
राधास्वामी आरत नित्त करूँ री ।
राधास्वामी कहें सो चित्त धरूँ री ॥ ४१ ॥
राधास्वामी प्रेम जगाय रहूँ री ।
राधास्वामी राधास्वामी नित्त भजूँ री ॥ ४२ ॥

* जेवर । † ग्रहण ।

राधास्वामी कहना मान चली री ।
राधास्वामी ध्यान अब जाय मिली री ॥४३॥
राधास्वामी सीत* मिला मोहिं जब री ।
राधास्वामी शुद्ध किया मोहिं तब री ॥४४॥
राधास्वामी गुन कस गाऊँ अली† री ।
राधास्वामी गगन दिखाई गली री ॥ ४५ ॥
राधास्वामी कमर बँधाई भली री ।
राधास्वामी धुन में जाय पिली री ॥४६॥
राधास्वामी सब बिधि काज किया री ।
राधास्वामी अचरज साज‡ दिया री ॥४७॥
राधास्वामी आसन अधर धरा री ।
राधास्वामी दर्शन वहाँ करा री ॥ ४८ ॥
राधास्वामी सोभा अजब बनी री ।
राधास्वामी छबि पर दृष्ट तनी§ री ॥४९॥
राधास्वामी जीव उद्धार करें री ।
राधास्वामी संत औतार धरें री ॥ ५० ॥
राधास्वामी मत कुछ अजब चला री ।
राधास्वामी भेद अब दिया भला री ॥ ५१॥

* परशादी। † सखी। ‡ सामान। § खिंची।

राधास्वामी गिनें न ब्रह्मज्ञान री ।
राधास्वामी थापें न जोग ध्यान री ॥५२॥
राधास्वामी मानें न राम कृष्न री ।
राधास्वामी मानें न ब्रह्मा बिश्नु री ॥५३॥
राधास्वामी पूजें न शिव गनेश री ।
राधास्वामी पूजें न गौर शेष री ॥ ५४ ॥
राधास्वामी मानें न कर्म धर्म री ।
राधास्वामी जप तप जानें भर्म री ॥५५॥
राधास्वामी मानें न तीर्थ बर्त री ।
राधास्वामी मानें न शास्त्र स्मृत री ॥५६॥
राधास्वामी मानें न सूर चंद री ।
राधास्वामी मानें न गंग जमन री ॥५७॥
राधास्वामी काटें पिछली टेक री ।
राधास्वामी भर्म न राखें एक री ॥ ५८ ॥
राधास्वामी बुत* पूजा न धार री ।
राधास्वामी पित्र पूजा न कार री ॥५९॥
राधास्वामी कहें गुरु भक्ति साध री ।
राधास्वामी भजन बतावें नाद[1] री ॥६०॥

* मूर्ती । [1] शब्द ।

राधास्वामी सतसँग करो कहैं री ।
राधास्वामी वक्त गुरू थरपैं री ॥ ६१ ॥
राधास्वामी ज़ात न पाँत रखैं री ।
राधास्वामी हिंदू न तुर्क गहैं री ॥ ६२ ॥
राधास्वामी बर्न आस्रम न गायें री ।
राधास्वामी मिथ्या भर्म सुनायें री ॥ ६३ ॥
राधास्वामी भक्ती बर्न बतायें री ।
राधास्वामी गुरु की भक्ति दृढ़ायें री ॥ ६४ ॥
राधास्वामी बेद कतेब उड़ायें री ।
राधास्वामी मुरशिद* क़ौल† ठहरायें री ॥ ६५ ॥
राधास्वामी मुरशिद ख़ुदा दिखायें री ।
राधास्वामी पीर‡ परस्ती§ सिखायें री ॥ ६६ ॥
राधास्वामी रोज़ा नमाज़ उठायें री ।
राधास्वामी मसजिद बाँग छुड़ायें री ॥ ६७ ॥
राधास्वामी काबा न हज्ज‖ करायें री ।
राधास्वामी क़ुराँ न वज़ीफ़ा** पढ़ायें री ॥ ६८ ॥
राधास्वामी दिल पर क़ाबू दिलायें री ।
राधास्वामी नफ़स अमारा†† गिरायें री ॥ ६९ ॥

* गुरू । † वचन । ‡ गुरू । § पूजा । ‖ जात्रा । ** जाप । †† मलीन मन ।

राधास्वामी रूह[*] असमान चढ़ायें री।
राधास्वामी घट में अर्श[†] दिखायें री ॥७०॥
राधास्वामी रूह मेराज[‡] दिलायें री।
राधास्वामी तन में खुदा मिलायें री ॥७१॥
राधास्वामी फ़क़र[§] को बड़ा बतायें री।
राधास्वामी कहत रसूल[‖] न पायें री ॥७२॥
राधास्वामी सात मुक़ाम लखायें री।
राधास्वामी फ़क़र मरातिब[**] गायें री ॥७३॥
राधास्वामी शग़ल[††] अवाज़ करायें री।
राधास्वामी रूह को सौत[‡‡] सुनायें री ॥७४॥
राधास्वामी सुरत और शब्द मथें री।
राधास्वामी रूह और सौत कथें री ॥७५॥
राधास्वामी अनहद नाद कहें री।
राधास्वामी सौतसरमदी[§§] गहें री ॥ ७६ ॥
राधास्वामी आद धाम से आये री।
राधास्वामी सब से ऊँच धाये री ॥ ७७ ॥
राधास्वामी की है प्रथम मँज़िल री।
सो सब मत सिद्धान्त समझ री ॥ ७८ ॥

* सुरत। † चैतन्न आकाश। ‡ चढ़ाई। § संत गती। ‖ पैग़म्बर। ** दर्जे। †† अभ्यास। ‡‡ शब्द। §§ आवाज़ अनहद।

राधास्वामी पहिली मँज़िल कही री ।
सब मत का सिद्धान्त वही री ॥ ७९ ॥
राधास्वामी मत अब बहुल बड़ा री ।
राधास्वामी मत यह जान पड़ा री ॥८०॥
राधास्वामी सात मँज़िल* बरनैं री ।
राधास्वामी भिन भिन कहैं निरनेरी ॥८१॥
राधास्वामी गति सब भाँति बड़ी री ।
राधास्वामी चरनन सुरत अड़ी री ॥ ८२ ॥
राधास्वामी हैरत धाम रहैं री ।
राधास्वामी अचरज नाम कहैं री ॥ ८३ ॥
राधास्वामी चुंबक मैं लोहा री ।
राधास्वामी रूप निरख मोहा री ॥ ८४ ॥
राधास्वामी भृंगी मैं कीड़ा री ।
राधास्वामी सकल हरी पीड़ा री ॥ ८५ ॥
राधास्वामी पहुँचे दूर देश री ।
राधास्वामी अपना दिया सँदेस री ॥८६॥
राधास्वामी कँवला मैं भँवरा री ।
राधास्वामी दरस देख सँवरा† री ॥ ८७॥

* स्थान । † सँवारा गया ।

राधास्वामी कहैं सोई करना री।
राधास्वामी चरन सीस धरना री ॥ ८८ ॥
राधास्वामी उपमा कौन करे री ।
राधास्वामी सरन जीव उधरे री ॥ ८९ ॥
राधास्वामी सूरत देख जिऊँ री ।
राधास्वामी अमृत नाम पिऊँ री ॥ ९० ॥
राधास्वामी सँग घट खोज करूँ री ।
राधास्वामी सँग पट मौज लहूँ री ॥ ९१ ॥
राधास्वामी सँग अब सुरत भरूँ री ।
राधास्वामी सँग धुन शब्द सुनूँ री ॥ ९२ ॥
राधास्वामी सँग तिल तोड़ चलूँ री ।
राधास्वामी सँग नभ फोड़ मिलूँ री ॥ ९३ ॥
राधास्वामी सँग फिर जोत लखूँ री ।
राधास्वामी सँग सुन भेद तकूँ री ॥ ९४ ॥
राधास्वामी सँग नल बंक धसूँ री ।
राधास्वामी सँग चढ़ गगन हँसूँ री ॥ ९५ ॥
राधास्वामी सँग दस द्वार गहूँ री ।
राधास्वामी सँग महासुन्न चढ़ूँ री ॥ ९६ ॥

राधास्वामी सँग मैं गुफा रहूँ री ।
राधास्वामी सँग सतनाम लगूँ री ॥ ९७ ॥
राधास्वामी सँग मैं अलख लखूँ री ।
राधास्वामी सँग अब अगम भखूँ री ॥९८॥
राधास्वामी राधास्वामी रँग रँगूँ री ।
राधास्वामी राधास्वामी धाम बसूँ री ॥९९॥
राधास्वामी कहैं सो कार करूँ री ।
राधास्वामी राधास्वामी पकड़ धरूँ री१००
राधास्वामी लीला ताक तकूँ री ।
राधास्वामी महल अब जाय पकूँ री ॥१०१॥
राधास्वामी सोभा अजब कहूँ री ।
राधास्वामी आगे खड़ी रहूँ री ॥ १०२ ॥
राधास्वामी तख़्त बिराज रहे री ।
राधास्वामी सख़्त बिकार दहे री ॥१०३॥
राधास्वामी जीव निवाज़* रहे री ।
राधास्वामी पीव हमार भये री ॥ १०४ ॥
राधास्वामी अति कर दयाल हुए री ।
राधास्वामी दया जम कालमुए† री ॥१०५॥

* दया करने वाले । † मरे ।

राधास्वामी अब मोहिं अमर किया री।
राधास्वामी पद मोहिं अजर दिया री॥१०६॥
राधास्वामी गुन गाऊँ नित नित री।
राधास्वामी मात हुए और पित री॥१०७॥
राधास्वामी सब से अलग किया री।
राधास्वामी सब बल तोड़ दिया री॥१०८॥

---

॥ बचन चौथा ॥

महिमा दर्शन परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी की और बर्नन दशा प्रेम और आनन्द की उसकी प्राप्ती में॥

॥ शब्द पहिला ॥

देव री सखी मोहिं उमँग बधाई।
अब मेरे आनँद उर* न समाई॥ १॥
छिन छिन हरखूँ पल पल निरखूँ।
छबि राधास्वामी मो से कही न जाई॥२॥
आरत थाली लीन सजाई।
प्रेम सहित रस भर भर गाई॥ ३॥

* हिरदय।

चरन सरन गुरु लाग बढ़ाई ।
अधिक बिलास रहा मन छाई ॥ ४ ॥
कहा कहूँ यह घड़ी सुहाई ।
सुरत हंसनी गई है लुभाई ॥ ५ ॥
शब्द गुरू धुन गगन सुनाई ।
अमी धार धुर से चल आई ॥ ६ ॥
रोम रोम और अँग अँग न्हाई ।
बरन बिनोद* कहूँ कस भाई ॥ ७ ॥
लिख लिख कर कुछ सैन जनाई ।
जानेंगे मेरे जो गुरु भाई ॥ ८ ॥
राधास्वामी कहत बनाई ।
चार लोक में फिरी है दुहाई† ॥ ९ ॥
सत्तनाम धुन बीन बजाई ।
काल बली अति मुरछा खाई ॥ १० ॥
अलख अगम दोउ मेहर कराई ।
राधास्वामी राधास्वामी दरस दिखाई ११ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

आज बधावा राधास्वामी गाऊँ ।
चरन कँवल गुरु प्रेम बढ़ाऊँ ॥ १ ॥

* आनन्द । † हुक्म । ‡ आनन्द गीत ।

हरख अधिक अब हिये समाऊँ ।
राधास्वामी रूप चित्त मैं लाऊँ ॥ २ ॥
आज दिवस मेरा भाग अनोखा* ।
दरशन राधास्वामी मन को पोखा† ॥३॥
सतगुरु पूरे अंग लगाया ।
राधास्वामी अचरज खेल दिखाया ॥४॥
बाजत घट मैं अनहद तूरा ।
राधास्वामी राधास्वामी खुला ज़हूरा॥५॥
जगा भाग मेरा अति गम्भीरा ।
राधास्वामी नाम कहत मन धीरा ॥६॥
खुल गये बज्र किवाड़ अर्श‡ के ।
दर्शन पाये राधास्वामी पुर्ष के ॥ ७ ॥
सोभा अधिक कहाँ लग भाखूँ ।
राधास्वामी मूरत नैनन ताकूँ ॥ ८ ॥
दरस अधार जिऊँ छिन छिन मैं ।
राधास्वामी गुन गाऊँ पल पल मैं ॥९॥
गुन गावत मन होत हुलासा ।
राधास्वामीच रन बँधी मम आसा ॥१०॥

* अचरज । † शांत किया । ‡ चेतन्य आकाश ।

मीन मगन जस जल के माहीँ ।
राधास्वामी सरन छुटत अब नाहीँ ॥११॥
केल* करूँ नित उनके संगा ।
राधास्वामी किये भरम सब भंगा† ॥१२॥
निरमल होय चरन लिपटानी ।
राधास्वामी गति अति अगम बखानी ॥१३॥
आनँद मंगल अब रहा छाई ।
राधास्वामी आगे गाऊँ बधाई ॥ १४ ॥
अजब बधावा राधास्वामी गाया ।
उलट पलट राधास्वामी रिझाया ॥१५॥

॥ शब्द तीसरा ॥

आज मेरे धूम भई है भारी ।
कहूँ क्या राधास्वामी रूप निहारी ॥१॥
घाट अब होगया सुखमन‡ जारी ।
आरती राधास्वामी करूँ सँवारी ॥ २ ॥
प्रेम रँग भीज गई सुत सारी ।
निरत§ सँग राधास्वामी कीन पुकारी ॥३॥
हुई जाय सुन मैं शब्द अधारी ।
चरन मैं राधास्वामी माथ धरा री ॥४॥

* कलोल । † दूर । ‡ मध्य की धार । § सुरत का निरनय करने वाला अङ्ग ।

कहूँ क्या आरत गावत न्यारी ।
लगी मोहिं राधास्वामी धुन अब प्यारी ॥५॥
अगम गत कैसे कोइ बिचारी ।
रीत कुछ राधास्वामी अचरज धारी ॥६॥
छोड़ अब तन मन चढ़त अटारी ।
जहाँ राधास्वामी तख़्त बिछा री ॥७॥
टहल मैं रहती निस दिन ठाढ़ी ।
अमी रस राधास्वामी दीन अहारी ॥८॥
बड़ा अब भाग अपार जगा री ।
तेज राधास्वामी बहुत बढ़ा री ॥ ९ ॥
कौन यह पावे घट उजियारी ।
दई राधास्वामी लाभ अपारी ॥ १० ॥
धुनन की होत सदा झनकारी ।
कीन राधास्वामी मोहिं अपना री ॥११॥
इड़ा तज पिँगला खोज करा री ।
सिखर चढ़ राधास्वामी घोर सुनारी ॥१२॥
सोहँग मैं बंसी आन पुकारी ।
अजब गत राधास्वामी देखी न्यारी ॥१३॥

काल पुनि हारा कर्म कटा री ।
लगी ऐसी राधास्वामी नाम कटारी* ॥१४॥
सत्त सर गई सुरत पनिहारी† ।
भरी राधास्वामी गगरी भारी ॥ १५ ॥
हन्सनी हो गई हन्सन प्यारी ।
पिया अब राधास्वामी नाम सुधा‡ री॥१६॥
कहत मैं महिमा राधास्वामी हारी ।
करी मैं आरत राधास्वामी सारी ॥१७॥

॥ शब्द चौथा ॥

जुगनियाँ§ चढ़ी गगन के पार ।
सुनी राधास्वामी धूम अपार ॥ १ ॥
लगनियाँ|| मगन हुई दस द्वार ।
ठगनियाँ** मारी राधास्वामी झाड़ ॥२॥
सुँघनियाँ†† सूँघत मलय‡‡ निहार ।
नाम राधास्वामी पाया सार ॥ ३ ॥
सुजनियाँ लखी शब्द की धार ।
राधास्वामी गावत राग मलार ॥ ४ ॥

* हथियार । † पानी भरने वाली । ‡ अमृत । § जोग करने वाली, मिलने वाली । || लगने वाली यानी प्रेमी सुरत । ** धोखा देने वाली यानी माया । †† [illegible]ने वाली सुरत । ‡‡ मलयागिर चन्दन ।

बैरागिन भइओ सुरत हमार ।
चरन राधास्वामी मोर अधार ॥ ५ ॥
सुहागिन चली नाम की लार ।
लई राधास्वामी सेज सँवार ॥ ६ ॥
पिया घर पहुँची मौज निहार ।
हुई राधास्वामी के बलिहार ॥ ७ ॥
जाय जहँ देखी लीला सार ।
राधास्वामी चरन पखार पखार ॥ ८ ॥
गई और झाँकी खिड़की पार ।
राधास्वामी रूप किया दीदार ॥ ९ ॥
दृष्टि अब उलटी करत जुहार* ।
राधास्वामी परसे तज हंकार ॥ १० ॥
गये अब मन के सभी बिकार ।
दई अस राधास्वामी दृष्टी डार ॥ ११ ॥
कामना रही न अब संसार ।
राधास्वामी दीन्हा संसय टार ॥ १२ ॥
जुक्ति से डारा मन को मार ।
चलाई राधास्वामी पैनी† धार ॥ १३ ॥

* डंडवत । † तेज़ ।

सिरगनी* भागी बन से हार ।
राधास्वामी छोड़ा बान सम्हार ॥ १४ ॥
कहूँ क्या देखी अजब बहार ।
दिखाया राधास्वामी इक गुलज़ार† ॥१५॥
शब्द गुल‡ खिल गये वार और पार ।
लगा राधास्वामी से अब प्यार ॥ १६ ॥
घोर जहाँ अनहद उठत अपार ।
सुरत राधास्वामी दई सुधार ॥ १७ ॥

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

राधास्वामी का दरस मैं आज करूँगी ।
पल पल छिन छिन पार रहूँगी ॥ १ ॥
जगत जाल से बहुत बचूँगी ।
कर्म काल को मार धरूँगी ॥ २ ॥
सुरत चढ़ाय असमान भरूँगी ।
गगन मँडल की सैर करूँगी ॥ ३ ॥
धुन धधकार अनन्त सुनूँगी ।
शब्द अमी रस अगम पिऊँगी ॥ ४ ॥
पुष्ट होय गुरु चरन गहूँगी ।
सुखमन सङ्ग बिलास करूँगी ॥ ५ ॥

* माया । † चमन, बग़ीचा । ‡ फूल ।

बंक नाल में सहज धसूँगी ।
त्रिकुटी जा मैं आँग गहूँगी ॥ ६ ॥
सुन्न महासुन पार सजूँगी ।
भँवरगुफा सतलोक रहूँगी ॥ ७ ॥
अलख अगम धुन लिख भजूँगी ।
राधास्वामी चरन स्पर्श करूँगी ॥ ८ ॥

॥ शब्द छठवाँ ॥

देखत रही री दरस गुरु पूरे ।
चाखत रही री प्रेम रस मूरे ॥ १ ॥
सोभा सतगुरु बरनी न जाई ।
बाजत घट में अनहद तूरे ॥ २ ॥
बुंद चढ़ी तज पिंड असारा ।
पहुँची जाय सिन्ध सत नूरे ॥ ३ ॥
गरजत गगन बिरह उठ जागी ।
मन कायर अब होवत सूरे ॥ ४ ॥
चरन कँवल गुर हिरदे धारी ।
करत तमोगुन दम दम चूरे ॥ ५ ॥
कृपा दृष्टि सतगुरु अब धारी ।
काल चक्र डारत अब तोड़े ॥ ६ ॥

समुँद सोत घस सुरत समानी ।
मान सरोवर दरसत हूरे* ॥ ७ ॥
सुरत चढ़ाय गई सत नामा ।
पहुँची राधास्वामी चरन हजूरे ॥ ८ ॥

॥ शब्द सातवाँ ॥

गुरु के दरस पर मैं बलिहारी ।
गुरु के चरन मेरे प्रान अधारी ॥ १ ॥
गुरु के बचन मेरे हिये सिँगारी ।
गुरु स्वरूप दिन रैन सम्हारी ॥ २ ॥
गुरु का सँग कर छिन छिन प्यारी ।
गुरु का रँग ले नैन निहारी ॥ ३ ॥
गुरु के धाम पर सुरत लगा री ।
नील सिखर† चढ़ श्याम† लखा री ॥ ४ ॥
सेत सूर जहँ नूर लखा री ।
शब्द अनाहद तूर बजा री ॥ ५ ॥
मुरली धमक और बीन सुना री ।
अद्भुत रस अचरज सुख भारी ॥ ६ ॥
बिरले सन्त यह भेद पुकारी ।
तू भी सरन पड़ उन की जारी ॥ ७ ॥

* अप्सरा । † नाम मुकाम ।

ज्यों मीना जल धार समा री ।
ज्यों चकोर चन्दा निरखा री ॥ ८ ॥
अस पिरीत सतगुरु सँग ला री ।
कर प्रतीत घट होत उजारी ॥ ९ ॥
भाग बिना क्या करे बिचारी ।
यह भी भाग गुरू से पा री ॥ १० ॥
राधास्वामी कही जुक्ति यह सारी* ।
उन के चरन से प्रेम लगा री ॥ ११ ॥

॥ शब्द आठवाँ ॥

गुरु का दरस तू देख री ।
तिल आसन डार ॥ १ ॥
शब्द गुरू नित सुनो री ।
मिल बासन† जार ॥ २ ॥
गुरु रूप सोहावन अति लगे ।
घट भान उजार ॥ ३ ॥
कँवल खिलत सुख पावई ।
भौंरा कर प्यार ॥ ४ ॥
गुरु ज्ञान न पाया हे सखी ।
जिन घट अँधियार ॥ ५ ॥

* सार और खुलासा । † वासना ।

पूरा सतगुरु ना मिला ।
भरमत भौ जार* ॥ ६ ॥
मैं तो सतगुरु पाइया ।
जाऊँ बलिहार ॥ ६ ॥
ज्यौं चकोर चन्दा गहे ।
रहूँ रूप निहार ॥ ८ ॥
सतगुरु शब्द स्वरूप हैं ॥
रहैं अर्श मँझार ॥ ९ ॥
तू भी सुरत स्वरूप है ।
रहो गुरु की लार ॥ १० ॥
नैनन मैं गुरु रूप है ।
तू नैन उघार† ॥ ११ ॥
सरवन मैं गुर शब्द है ।
सुन गगन पुकार ॥ १२ ॥
राधास्वामी कह रहे ।
यह मारग सार ॥ १३ ॥
जो जो मानैं भाग से ।
सो उतरैं पार ॥ १४ ॥

* जाल । † खोलना ।

## ॥ वचन पाँचवाँ ॥

### बर्णन भेद मारग और शोभा सत्तलोक की और महिमा निज स्वरूप और निज स्थान परम पुरुष पूरनधनी राधास्वामी की।

### ॥ शब्द पहिला ॥

आरत गावै सेवक तेरा ।
संसय भरम नें चित को घेरा ॥ १ ॥
अब स्वामी किरपा करो ऐसी ।
संसय जड़ सब जायँ बिनासी ॥ २ ॥
निरसंसय चित शब्द समाई ।
दसवें द्वार रहे ठहराई ॥ ३ ॥
आगे महासुन्न मैदाना ।
मौज होय तो करे पयाना* ॥ ४ ॥
आगे भँवरगुफा की खिड़की ।
सोहँग धुन जहाँ निस दिन खड़की† ॥ ५ ॥
तहाँ जाय कर आनँद पाऊँ ।
आगे को फिर सुरत चढ़ाऊँ ॥ ६ ॥
सत्तनाम सतशब्द ठिकाना ।
चौथा पद सोइ संत बखाना ॥ ७ ॥

* चलना । † आवाज़ हुई ।

हन्सन सोभा कही न जाई ।
खोड़स* चन्द्र सूर छबि छाई ॥ ८ ॥
अद्भुत रूप पुरुष कहा बरनूँ ।
कोटि सूर चन्दा इक रोमूँ ॥ ९ ॥
दीपन सोभा अजब सँवारी ।
हन्स हन्स प्रति† दीप निरारी‡ ॥१०॥
अमी कुंड जहाँ भर रहे भारी ।
पुरुष दरस का करैं अहारी ॥ ११ ॥
नित नित लीला नई जहाँ की ।
महिमा कहँ लग बरनूँ वहाँ की ॥१२॥
अलख लोक तिस आगे थापा ।
गई सुरत तहाँ तज कर आपा ॥ १३ ॥
अलख पुरुष सोभा कहा गाई ।
अरब कोटि शशि सूर लजाई ॥ १४ ॥
सुरत रूप वहाँ ऐसा पाई ।
कोटि भान छबि ऐसी गाई ॥ १५ ॥
सुरत चली आगे पग धारा ।
अगम लोक को जाय निहारा ॥१६॥

* सोलह । † वास्ते । ‡ न्यारे ।

अगम पुरुष की सोभा न्यारी ।
कोटिन खरब सूर उजियारी ॥ १७ ॥
आगे ता के पुरुष अनामी ।
ता को अकह अपार बखानी ॥ १८ ॥
सन्त बिना वहाँ और न जाई ।
सन्तन निज घर वह ठहराई ॥ १९ ॥
हे स्वामी यह बिनती हमारी ।
भेद दिया तुम अति से भारी ॥ २० ॥
पहुँचूँ कैसे सो भी गाओ ।
मन मेरे को बहुत उमाओ* ॥ २१ ॥
सुरत शब्द की राह बताई ।
दया बिना नहिँ पहुँचे भाई ॥ २२ ॥
संसय भरम न राखो कोई ।
धीरे धीरे सुरत समोई† ॥ २३ ॥
शब्द खोज तुम निस दिन राखो ।
बार बार स्वामी यह भाखो ॥ २४ ॥
अब आरत पूरन कह गाई ।
सन्त मता सब दिया लखाई ॥ २५ ॥

* उमगाओ । † प्रवेश या लीन करना ।

॥ शब्द दूसरा ॥

आज आरती इक करूँ भारी ।
सुमिरन राधास्वामी करूँ अधारी ॥१॥
तिल का थाल जोत हुइ बाती ।
प्रेम भरी सन्मुख स्वामी आती ॥ २ ॥
रूप अनूप हिये में लाली ।
दरशन राधास्वामी निज कर पाती ॥३॥
मैं चकवी सतगुरु हुए चकवा ।
रैन भई तो हुआ बिछोहा* ॥४॥
मैं अज्ञान रैन बस पड़ी ।
वार रही और धीर न धरी ॥ ५ ॥
सतगुरु पार बसेरा कीन्हा ।
क्योंकर मिलूँ राह नहिं चीन्हा ॥६॥
तड़पूँ छिन छिन पिय के बियोग ।
कस पाऊँ अब पिय संजोग ॥ ७ ॥
अति आतुर† घबराय पुकारी ।
तब स्वामी मेरी कीन सम्हारी ॥ ८ ॥
रात बिताई हुआ बिहाना ।
घट के भीतर भान उगाना‡ ॥ ९ ॥

* वियोग । † तड़पती । ‡ उदय हुआ ।

चक्र* के वार पड़ी थी थोथी† ।
गुरु चक्र पार सुनाई पोथी‡ ॥ १० ॥
गुरु से मिली खोल कर पाट ।
घाट बाट घट बाँधा ठाट ॥ ११ ॥
लोहा ज्यौं चुम्बक सँग मिली ।
सुरत शब्द से जाकर रली ॥ १२ ॥
सुरत दृष्टि कर द्वारा झाँका ।
तोड़ा जाय सुई का नाका§ ॥ १३ ॥
भीतर धस जो लीला देखी ।
बरनूँ कैसे बात अगम की ॥ १४ ॥
अन्तरजामी सतगुरु जाने ।
और भेदी पुनि आप पहिचाने ॥१५॥
श्याम सेत के मद्ध समानी ।
घंटा सङ्ख सुनी धुन बानी ॥ १६ ॥
सूर चाँद दोउ दिस देखे ।
सुखमन गगना तारे पेखे ॥ १७ ॥
आगे धसी बंक की नाल ।
अवगत काल बिछाया जाल ॥ १८ ॥

* चक्षु आँख । † बेकाम । ‡ आकाश वानी, शब्द । § मुख ।

आगे पहुँची त्रिकुटी द्वार ।
लाल रूप जहँ धुन ओंकार ॥ १९ ॥
सुन्न मैं गई महल दस माहिँ ।
हंसन साथ मानसर न्हाहिं ॥ २० ॥
सेत सेत वह सुन्न दिखाई ।
चंद्र चाँदनी चौक लखाई ॥ २१ ॥
सिखर चढ़ी पच्छिम के द्वार ।
महासुन्न के हो गई पार ॥ २२ ॥
भँवरगुफा का ताक़ उघारा ।
सोहँग मुरली सुनी पुकारा ॥ २३ ॥
चौक परे सत लोक समानी ।
सत्तपुरुष धुन बीन बखानी ॥ २४ ॥
कोटिन सूर* लगे इक रोम ।
कोटि कोटि जहँ ऊगे सोम† ॥ २५ ॥
सत्तपुरुष की आयस‡ पाय ।
अलख लोक मैं पहुँची धाय ॥ २६ ॥
अरब सूर शशि§ जहाँ लजायँ ।
ऐसी सोभा देखी आय ॥ २७ ॥

* सूरज । † चाँद । ‡ आज्ञा । § चन्द्रमा ।

वहाँ से आज्ञा लेकर चली ।
अगम पुरुष से जाकर मिली ॥ २८ ॥
खरबन चंद्र सूर उजियारा ।
और कहूँ क्या अगम पसारा ॥ २९ ॥
वहाँ से भी फिर आगे बढ़ी ।
सुरत निरत निज पद में धरी ॥ ३० ॥
निज पद है वह राधास्वामी ।
फिर फिर कहूँ मैं राधास्वामी ॥ ३१ ॥

॥ सोरठा ॥

क्योंकर करूँ बखान
महिमा मैं उस धाम की ।
नील नील शशि भान
इक इक कँगुरे* लग रहे ॥ ३२ ॥
पदमन† मणी जड़ी महलन में ।
सोभा वहँ की कहूँ क्योंकर मैं ॥ ३३ ॥
संख और महासंख शशि भान ।
गिर्द सिंहासन देखे आन ॥ ३४ ॥
जल स्वरूप राधास्वामी धारा ।
सोभा वा की अकह अपारा ॥ ३५ ॥

* कंगूरा । † अनेक पदम ( संख्या विशेष ) ।

क्या दृष्टान्त देउँ मैं सही ।
गिनती भी बाक़ी नहिँ रही ॥ ३६ ॥
यह आरत मैं बड़की कही ।
कस बरनूँ अब मोरी* भई ॥ ३७ ॥

शब्द तीसरा ॥

नगरिया झाँक रही मैं न्यारी ।
गुरू ने मोहिँ दीन्ही अचरज तारी† ॥१॥
सुनो मैं अनहद धुन झनकारी ।
रूप अब निरखा अद्भुत भारी ॥ २ ॥
कहूँ क्या गुरु की मेहर करारी‡ ।
हुई मैं राधास्वामी चरन दुलारी§ ॥३॥
छोड़ कर देस पराया आई ।
महल में राधास्वामी आन बसाई ॥४॥
भेद यह दीन्हा मोहिँ मेरे भाई ।
कहूँ कस महिमा उनकी गाई ॥ ५ ॥
सरन अब राधास्वामी दृढ़ कर पाई ।
छोट मुख क्योंकर करूँ बड़ाई ॥ ६ ॥
भाग मेरा जागा शब्द सुहाई ।
नाम रस पाया करूँ कमाई ॥ ७ ॥

---

* अव्वल नम्बर । † कुन्जी । ‡ तेज़ । § प्यारी ।

सुरत हुई निरमल सुखमन पाई ।
चली और नभ पर करी चढ़ाई ॥८॥
नैन दोउ फेरे जोत दिखाई ।
सहसदल कँवल मध्य धस आई ॥९॥
श्याम तज सेत रूप दरसाई ।
बंक चढ़ त्रिकुटी आन समाई ॥१०॥
ओंग धुन गरज भली समझाई ।
सूर जहँ लाल लाल दिखलाई ॥११॥
सुन्न चल मानसरोवर न्हाई ।
ररँग धुन किंगरी खूब सुनाई ॥ १२॥
हन्स होय आगे पन्थ चलाई ।
महासुन सूरत अजब सजाई ॥ १३ ॥
धमक सुन भँवरगुफा ढिंग आई ।
बाँसरी सोहँग संग बजाई ॥ १४ ॥
वहाँ से सचखँड पहुँची धाई ।
पुरुष का रूप अनोखा पाई ॥१५॥
बीन धुन सुनकर बहुत रिझाई ।
मेहर हुई भारी कहा न जाई ॥ १६ ॥

* पास ।

गुरु मोहिं दीन्हा अलख लखाई।
अगम का पर्दा खोला जाई ॥ १७ ॥
वहाँ से राधास्वामी धाम दिखाई।
गई और चरन सरन लिपटाई ॥ १८ ॥
आरती अद्भुत लीन सजाई।
बंगला अचरज रूप बनाई ॥ १९ ॥
बैठ कर राधास्वामी छबि दिखलाई।
उमँग और प्रेम रहा मेरा छाई ॥ २० ॥
सखी सब मिल कर देत बधाई।
आज मेरा जन्म सुफल हुआ भाई ॥ २१ ॥
ब्रह्म और माया दोउ लजाई।
काल और कर्म रहे मुरझाई ॥ २२ ॥
जोग और ज्ञान थके पछताई।
कहूँ क्या कोई मर्म न पाई ॥ २३ ॥
सन्त मत ठीक यही ठहराई।
सुरत और शब्द राह दरसाई ॥ २४ ॥
बेद नहिं पावे सन्त बड़ाई।
कही अब राधास्वामी यह गति गाई ॥ २५ ॥

॥ शब्द चौथा ॥

गुरु मता अनोखा दरसा ।
मन सुरत शब्द जाय परसा ॥ १ ॥
लीला घट देखी भारी ।
हुइ सुरत गगन पनिहारी ॥ २ ॥
अमृत रस भर भर पीया ।
तन मन सब सीतल हूआ ॥ ३ ॥
चोरी अब चोरन त्यागी ।
घर उनके अगनी लागी ॥ ४ ॥
साहू अब घट में जागे ।
पहरा दे शब्द अनुरागे ॥ ५ ॥
गुन गावत मन हुलसाया ।
धुन धावत अधर चढ़ाया ॥ ६ ॥
जगमग हुइ जोत उजियारी ।
घट खिल गइ कँवल कियारी ॥ ७ ॥
सुन्दर की खिड़की खोली ।
सुखमन में धुन नित बोली ॥ ८ ॥
चढ़ बंक किवाड़ी खोली ।
त्रिकुटी जा हुई अमोली ॥ ९ ॥

ज्यों फेरत पान तमोली ।
यों धुन घट सूरत रोली* ॥ १० ॥
क्या महिमा गुरु पद गाऊँ ।
छिन छिन में उमँग बढ़ाऊँ ॥ ११ ॥
सुर नर मुनि गति नहिँ जानी ।
यह अचरज अकथ कहानी ॥ १२ ॥
सुन में जा शब्द समानी ।
अद्भुत धुन किँगरी छानी ॥ १३ ॥
गइ महासुन्न के नाके ।
गुरु दया अचंभा† ताके ॥ १४ ॥
फिर भँवरगुफा लगी डोरी ।
सोहँग जा सूरत जोड़ी ॥ १५ ॥
सतगुरु पद सत कर जाना ।
गति मति क्या कहूँ बखाना ॥ १६ ॥
शशि सूर अनेकन पाँती ।
देखे और आगे जाती ॥ १७ ॥
लख अलख अगम दरसाना ।
मिला राधास्वामी नाम निशाना ॥१८॥

* छांटी । † अचरज ।

यह अजब परम पद पाया ।
अब तक कोइ भेद न गाया ॥ १९ ॥
नहिं बेद कतेब सुनाया ।
जोगी नहिं ज्ञानी धाया ॥ २० ॥
यह बस्तु अमोलक पाई ।
कोइ बिरले संत बताई ॥ २१ ॥
मेरे राधास्वामी परम दयाला ।
जिन कीन्हा मोहिं निहाला ॥ २२ ॥
मैं आरत उनकी करता ।
तन मन दोउ चरनन धरता ॥ २३ ॥
मैं हर दम यही पुकारूँ ।
मत अगम अगाध सम्हारूँ ॥ २४ ॥
मेरा भाग उदय हो आया ।
राधास्वामी चरन धियाया ॥ २५ ॥
जग स्वाद लगा सब फीका ।
राधास्वामी नाम मैं सीखा ॥ २६ ॥
गति मति मेरी उल्टी पल्टी ।
गुरु कर दई सूरत सुल्टी* ॥ २७ ॥

* सीधी ।

मेरा काज हुआ सब पूरा ।
मैं राधास्वामी चरनन धूरा ॥ २८ ॥

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

सुख समूह* अंतर घट छाया ।
आरत सामाँ† आन सजाया ॥ १ ॥
आनँद हर्ष अधिक हिये आया ।
गुरु चरनन में चित्त समाया ॥ २ ॥
दर्शन कर गुरु महिमा गाया ।
छबि अनूप नैनन में लाया ॥ ३ ॥
प्रेम सूर निज गगन उगाया ।
भर्म तिमर सब दूर बहाया ॥ ४ ॥
जगे भाग धुन अनहद पाया ।
अंतर सुखमन तीरथ न्हाया ॥ ५ ॥
सहसकँवल तिल उलट फिराया ।
मन को छोड़ सुरत सँग धाया ॥ ६ ॥
जोत निरंजन रूप दिखाया ।
अति हुलास कुछ कहा न जाया ॥ ७ ॥
घंटा नाद और संख सुनाया ।
चाँद सूर तारा दरसाया ॥ ८ ॥

* बहुत । † सामान, पदारथ ।

बंकनाल का द्वार खुलाया ।
त्रिकुटी चढ़ गुरु शब्द मिलाया ॥ ९ ॥
सूरज मंडल बेद पढ़ाया ।
अर्ध मात्रा मूल जनाया ॥ १० ॥
सुन्न सिखर धुन ररँग जगाया ।
माया काल दोऊ सुलवाया* ॥ ११ ॥
सेत चन्द्रमा फूल खिलाया ।
मानसरोवर अमी पिलाया ॥ १२ ॥
हंसन साथ मिलाप बढ़ाया ।
किँगरी सारंगी धूम मचाया ॥ १३ ॥
महासुन्न धुन गुप्त लखाया ।
महाकाल बल छीन कराया ॥ १४ ॥
भँवर गुफा अमृत बरसाया ।
सोहँग बंसी नाद बजाया ॥ १५ ॥
चढ़ी सुरत सतपुरुष गजाया ।
सचखंड जा तख़्त बिछाया ॥ १६ ॥
पुरुष मेहर दुरबीन दिलाया ।
अलख रूप सोभा परखाया ॥ १७ ॥

* निद्रित किया । † ऊँची आवाज़ से बुलाया ।

अगम पुरुष फिर अमी चुवाया ।
राधास्वामी भेद बताया ॥ १८ ॥
भक्त धाम येही ठहराया ।
आरत कर राधास्वामी रिझाया ॥१९॥
फल अपार दुख दूर गँवाया ।
रसक रसक रस शब्द रसाया ॥ २० ॥
जन्म जन्म के कर्म नसाया ।
काल दाव अब खूब चुकाया ॥ २१ ॥
राधास्वामी चरनन माथ नवाया ।
राधास्वामी सूरत हिये बसाया ॥२२॥
तज बिकार मन को समझाया ।
नाम पकड़ अब काम हटाया ॥ २३ ॥
सील छिमा दृढ़ थान जमाया ।
मन बिहंग को अधर उड़ाया ॥ २४ ॥
गुरु भृङ्गी यह कीट चिताया ।
राधास्वामी चरन निपट लिपटाया॥२५॥

॥ बचन छठवाँ ॥

आरती परम पुरुष पूरन धनी राधा-
स्वामी के चरण कँवल में

अब सतगुरु की आरत गाऊँ ।
कथ कथ आरत बहुत सुनाऊँ ॥ १ ॥
आरत बानी आगे भनी* ।
बिबिध भाँत की आरत बनी ॥ २ ॥
राधास्वामी करत बखाना ।
सतसंगी सुनैं देकर काना ॥ ३ ॥

॥ शब्द पहिला ॥

हे राधा तुम गति अति भारी ।
हे स्वामी तुम धाम अपारी ।
राधास्वामी दोउ मोहिं गोद बिठारी॥१॥
राधा चरन गहे मैं आरी ।
स्वामी सरन हुई गति न्यारी ।
राधास्वामी की हुइ मैं प्यारी॥ २ ॥
राधा अंतर दया बिचारी ।
स्वामी परगट किया उबारी ।
राधास्वामी मिलकर मोहिं सँवारी॥३॥

* कही ।

राधा पल पल नाम रटा री ।
स्वामी तिल तिल रूप निहारी ।
राधास्वामी मुझ को किया अपना री ॥४॥
राधा गुन क्या कहूँ पुकारी ।
स्वामी महिमा अकह अपारी ।
राधास्वामी अब मोहिं लीन सुधारी ॥५॥
राधा दरस कठिन गहिरा री ।
स्वामी बचन सुनत मोहा री ।
राधास्वामी अबके लिया उबारी ॥ ६ ॥
राधा बल मन हार गया री ।
स्वामी बल मैं गगन चढ़ा री ।
राधास्वामी कीन्ही मेहर करारी* ॥ ७ ॥
राधा आरत करूँ सिंगारी ।
स्वामी संग आरती धारी ।
राधास्वामी आरत करन बिचारी ॥ ८ ॥
राधा चरन सिंघासन धारी ।
स्वामी चरन सरूहार पखारी† ।
राधास्वामी चरन अब मिला अधारी ॥९॥

* तेज । † धोया ।

राधा दृष्टि दया कर डारी ।
स्वामी मेहर करी अब न्यारी ।
राधास्वामी कीन मोर उपकारी ॥१०॥
राधा गल अब हार चढ़ा री ।
स्वामी सीतल तिलक लगा री ।
राधास्वामी पूजन आज करा री ॥११॥
राधा आगे भोग धरा री ।
स्वामी सन्मुख थाल भरा री
राधास्वामी दोनों मान लिया री ॥१२॥
राधा अमर चीर पहिना री ।
स्वामी अजर बस्त्र तन धारी ।
राधास्वामी सोभा अगम अपारी ॥१३॥
राधा आरत अब हुइ भारी ।
स्वामी चित्त में हर्ष बढ़ा री ।
राधास्वामी चरनन आन पड़ा री ॥१४॥
राधा दिया परशाद दया री ।
स्वामी मेहर करी कुछ न्यारी ।
राधास्वामी पर मैं जाउँ बलिहारी ॥१५॥

परथम आरत राधा धारी।
फिर आरत मैं स्वामी सम्हारी।
राधास्वामी आरत कर लइ सारी ॥१६॥
राधा अपना धाम दिया री।
स्वामी चरनन माहिँ लिया री।
राधास्वामी दोनौं पार किया री ॥१७॥

॥ शब्द दूसरा ॥

राधास्वामी मेरे सिंध गंभीर।
कोइ थाह न पावत बीर ॥ १ ॥
रतनन के भरे भंडार।
जहाँ लाल अमोलक सार ॥ २ ॥
सुत मीन करे जहाँ केल*।
कल काल धरे जहाँ पेल॥ ३ ॥
घट प्रेम धार अब उमँगी।
रस सार पिये कोइ संगी ॥ ४ ॥
तिल उलट चली सुर्त प्यारी।
देखो वहाँ जोत उजारी ॥ ५ ॥
दल द्वार खोल कर पैठी†।
नल पार अविद्या ऐंठी‡ ॥ ६ ॥

*आनंद। †घुसी। ‡अकड़ गई, मुरझा गई।

माया का चक्र हटाया ।
ब्रह्म दरस सहज में पाया ॥ ७ ॥
धुन अनहद सार बजाया ।
सुन भीतर शब्द जगाया ॥ ८ ॥
गुरु पर अब तन मन वारूँ ।
गुन गावत कभी न हारूँ ॥ ९ ॥
क्या महिमा गुरु पद गाऊँ ।
मैं नित नित बल बल जाऊँ ॥ १० ॥
गुरु मूरत हिदे* छिपाऊँ ।
मन अंदर द्वार खुलाऊँ ॥ ११ ॥
गुरु संग लिये मोहिं जावें ।
सत रूप अधर दरसावें ॥ १२ ॥
कँवलन के बाग़ दिखावें ।
हंसन संग केल करावें ॥ १३ ॥
वह आनँद कहत न जाई ।
सुर्त भोज रही छबि छाई ॥ १४ ॥
अमृत रस झड़ी लगाई ।
छिन छिन पर धार चुवाई ॥ १५ ॥

* हृदय ।

मन ग़ोता* खावत भारी ।
सुर्त जागी मिटी अँधियारी ॥ १६ ॥
कोइ सज्जन प्रेम बिलासी ।
देखत और खेलत पासी ॥ १७ ॥
गुरु बचन सुनत मैं हाँसी ।
हुइ राधास्वामी चरन निवासी ॥१८॥
दम दम में प्रेम बढ़ाती ।
गुरु मूरत अजब दिखाती ॥ १९ ॥
मैं नैन परान गँवाती ।
तन मन की सुध बिसराती ॥ २० ॥
गुरु मूरत अधिक सुहाती ।
ज्यौं चन्द्र चकोर समाती ॥ २१ ॥
राधास्वामी मौज दिखाई ।
मैं चरन धूर होय धाई ॥ २२ ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

आज दिवस सखि मंगल खानी ।
मैं राधास्वामी सँग आरत ठानी ॥ १ ॥
तन मन थाल बिरह कर जोती ।
सुरत निरत धुन माल† परोती‡ ॥ २ ॥

* डुबकी लगाना । † माला । ‡ गुथती ।

गगन शिखर चढ़ अचरज देखूँ ।
हंसन साथ महासुन पेखूँ* ॥ ३ ॥
चरन गहूँ अब राधास्वामी के ।
आरत गाऊँ प्यारे जिय के ॥ ४ ॥
छिन छिन निरखूँ छबि राधास्वामी ।
तन मन अरपूँ दुख हर नामी ॥ ५ ॥
छिन छिन निरखूँ छबि प्रीतम की ।
तन मन अरपूँ दुख हर हिये की ॥ ६ ॥
कहाँ लग बरनूँ चोट बिरह की ।
कोइ न जाने साल† जिगर की ॥ ७ ॥
बिरह अगिन तन मन मेरा फूँका ।
झाल उठी जग दीन्हा लूका ॥ ८ ॥
बिन राधास्वामी मोहिँ कौन सम्हारे ।
लोक चार मेरे ज़रा न अधारे ॥ ९ ॥
मैं भइ देही तुम भये स्वाँसा ।
तुम बिन नहिँ जीवन की आसा ॥१०॥
तुम भये मेघा मैं भई मोरा ।
तुम्हरे दरस मैं करती शोरा ॥ ११ ॥

* देखूँ । † चोट का दुख ।

मैं बुलबुल तुम गुल की क्यारी ।
मैं क़ुमरी* तुम सर्व† अपारी ॥ १२ ॥
तुम चंदा मैं रैन अँधियारी ।
तुम से सोभा भई हमारी ॥ १३ ॥
प्रेम सिन्ध जब लहर उठाई ।
भरम कोट सब दीन बहाई ॥ १४ ॥
काम क्रोध की बस्ती उजड़ी ।
आसा मनसा तन से बिछड़ी ॥ १५ ॥
लोभ मोह सब दूर निकारी ।
बिषय बासना घट से टारी ॥ १६ ॥
राज बिबेक हुआ अब भारी ।
सुख पाया तन रइयत सारी ॥ १७ ॥
मैं दासी सतगुरु चरनन की ।
किये हैं मनोरथ पूरन अब की ॥ १८ ॥
कहाँ लग बरनूँ महिमा उनकी ।
ख़बर पड़ी अब अनहद धुन की ॥ १९ ॥
सुरत चढ़ी पहुँची ब्रह्मण्डा ।
छोड़ गई यह ख़ाकी पिंडा ॥ २० ॥

* एक कबूतर की क़िस्म की चिड़िया । † एक तरह का दरख़्त । ‡ मना ।

गगन मँडल जाय बैठक पाई ।
सुन्न महल में धधक चढ़ाई ॥ २१ ॥
द्वार दसम का पाया मरमा ।
दूर किये सब कंटक करमा ॥ २२ ॥
कर्म काट निज घर को चाली ।
माया ठगनी दूर निकाली ॥ २३ ॥
महासुन्न का खेल दिखाना ।
क्या कहुँ वहाँ का हाल पुराना ॥ २४ ॥
सिंध नाग जहाँ चौकी लाये ।
बिन सतगुरु कोइ पार न पाये ॥ २५ ॥
अन्ध घोर तिस आगे भारी ।
शब्द गुरू तहाँ कीन उजारी ॥ २६ ॥
झँझरी पार झरोखा देखा ।
संतन जा का बरना लेखा ॥ २७ ॥
दायें बाट गइ दीप अचिंता ।
बाईं दिसा जहाँ सहज बसंता ॥ २८ ॥
मध्य होय सूरत चढ़ी आगे ।
भँवर गुफा जहाँ सोहँग जागे ॥ २९ ॥

सोहँग से जाय भेंटा कीन्हा ।
सत्तनाम धुन ता पर चीन्हा ॥ ३० ॥
अलख पुरुष की धुन सुन पाई ।
तहाँ से अगम पुरुष को धाई ॥ ३१ ॥
अगम लोक जाय डेरा डाला ।
अब पाई पूरी टकसाला ॥ ३२ ॥
अब रहा आगे एक अनामी ।
कहा कहूँ वह अकह कहानी ॥ ३३ ॥
अब आरत पूरन भइ मेरी ।
दया करो स्वामी मैं बल तेरी ॥ ३४ ॥

॥ शब्द चौथा ॥

आज साज कर आरत लाई ।
प्रेम नगर बिच फिरी है दुहाई ॥ १ ॥
बिरह बिथा के लुट गये डेरे ।
मिल गये राधास्वामी बिछड़े मेरे ॥२॥
हिरदा थाल सुरत की बाती ।
शब्द जोत मैं नित्त जगाती ॥ ३॥
आरत फेरूँ सन्मुख ठाढ़ी ।
प्रीत उमँग मेरी छिन छिन बाढ़ी ॥ ४ ॥

तन नगरी बिच बजत ढँढोरा ।
भागे चोर ज़ोर भया थोड़ा ॥ ५ ॥
सील छिमा आय थाना गाड़ा ।
काम क्रोध पर पड़ गया धाड़ा* ॥ ६ ॥
स्वामी मेहर करी अब भारी ।
मैं भी उन चरनन बलिहारी ॥ ७ ॥
अब तो सरन पड़ी राधास्वामी ।
राखो सँग सदा अन्तरजामी ॥ ८ ॥
मेरे और न कोई दूजा ।
मेरे निस दिन तुम्हरी पूजा ॥ ९ ॥
तुम बिन और न कोई जानूँ ।
छिन छिन मन में तुम को मानूँ ॥ १० ॥
मैं मछली तुम नीर अपारा ।
केल करूँ मैं तुम्हरी लारा ॥ ११ ॥
मैं पपिहा तुम स्वाँति के बादल ।
सुख पाये दुख गये हैं रसातल† ॥ १२ ॥
तुम चंदा मैं कमोदन हीनी ।
तुम्हरी लगन में निस दिन भीनी‡ ॥ १३ ॥

* आफ़त । † नीचे । ‡ भींजो हुई ।

मैं धरनी तुम गगन बिराजे।
कैसे मिलूँ मैं तुम सँग आजे ॥ १४ ॥
सुरत निरत से चढ़ कर धाऊँ।
कभी न छोड़ूँ अस लिपटाऊँ ॥ १५ ॥
मैं गुरबर्ती राधास्वामी के चरन की।
लाज रखो मेरी काल से अब की ॥१६॥
तुम्हरे बल से भइ हूँ निचिंती।
अब मन मैं नहिं संका धरती ॥ १७ ॥
सूर किया स्वामी खेत जिताया।
मार लिया मैं ने मन और माया ॥१८॥
खाक मिला सब कपट ख़ज़ाना।
भाग गया दल मोह पुराना ॥ १९ ॥
गढ़ त्रिकुटी अब चढ़ कर लीन्हा।
सुन्न शिखर पर डंका दीन्हा ॥ २० ॥
सिंध महासुन बीच मैं आया।
सतगुरु कृपा ने दीन तराया ॥ २१ ॥
भँवरगुफा के महल बिराजी।
सत्तलोक चढ़ अचरज गाजी ॥ २२ ॥

अलखलोक में सूरत साजी ।
अगमलोक को छिन में भाजी* ॥ २३ ॥
पोहप† सिंहासन क्या कहूँ महिमा ।
जहाँ राधास्वामी ने धारे चरना ॥ २४ ॥
उन चरनन पर जाय लिपटानी ।
आगे अकह की क्या कहूँ बानी ॥ २५ ॥
अब आरत मैं कीन्ही पूरी ।
भाषा भेद अगम गम सूरी ॥ २६ ॥
राधास्वामी की चरन धूर धर ।
आय गई अपने मैं निज घर ॥ २७ ॥

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

यह आरत दासी रची,
प्रेम सिंध की धार ।
धारा उमँगी प्रेम की,
जा का वार न पार ॥ १ ॥
सन्मुख ठाड़ी होय कर,
बिन्ती करूँ पुकार ।
भागहीन मैं क्यों हुई,
स्वामी तुम दरबार ॥ २ ॥

* भागी । † फूल ।

तुम से दाता कोइ नहीं,
सब को लीन्हा तार।
मुझ अपराधिन हीन को,
अभी न आई बार ॥ ३ ॥
मैं तड़पी तुम दरस को,
जैसे चंद चकोर।
सीप चहे जिम* स्वाँति को,
मोर चहे घन घोर ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

तुम दीपक मैं भइ हूँ पतङ्गा।
भस्म किया मन तुम्हरे संगा ॥ ५ ॥
तुम भृङ्गी मैं कीट अधीना।
मिल गये राधास्वामी अति परबीना ॥६॥
तुम चंदन मैं भइ हुँ भुवंगन†।
सीतल भइ लग तुम्हरे चरनन ॥ ७ ॥
तुम समुद्र मैं लहर तुम्हारी।
तुम से उठ फिर तुमहिं सम्हारी ॥ ८ ॥
तुम सूरज मैं किरनी आई।
तुम से निकसी तुमहिं समाई ॥ ९ ॥

* जैसे। † सर्प।

तुम मोती मैं श्री अङ्ग धागा ।
संग तुम्हारा कभी न त्यागा ॥ १० ॥
अब तो कृपा करो राधास्वामी ।
तुम हो घट घट अंतरजामी ॥ ११ ॥
तुम चन्दा मैं कला तुम्हारी ।
घाट बाढ़ तुम्हरी आधारी ॥ १२ ॥
मैं बाली तुम पित और माता ।
तुम्हरी गोद खेलूँ दिन राता ॥ १३ ॥
नैन थाल और दृष्टी जोती ।
पलकन छड़ी खड़ी कर लेती ॥ १४ ॥
प्रेम नीर का घी अब डारूँ ।
आरत तुम्हरे सन्मुख वारूँ ॥ १५ ॥
घंटा सङ्ख नाद धुन गाजा ।
बीन बाँसरी अचरज बाजा ॥ १६ ॥
ताल मृदङ्ग किंगरी धधकी ।
ढोल पखावज छिन छिन खड़की ॥ १७ ॥
सहस धार अमृत की बरषा ।
गगन मँडल फिरे जैसे चरखा ॥ १८ ॥

घुमँड घुमँड होवै बलिहारी ।
आरत सोभा अब भइ भारी ॥ १९ ॥
समा बँधा कुछ कहा न जाई ।
सतसंगी मिल आरत गाई ॥ २० ॥
हीरे लाल नौछावर* होई ।
माणिक मोती लड़ियाँ पोई ॥ २१ ॥
फल और फूल जहाँ अति राजैं ।
राधास्वामी जहाँ बिराजैं ॥ २२ ॥
मगन हुआ अब तन मन मेरा ।
राधास्वामी छिन छिन हेरा† ॥ २३ ॥
आरत कीन्ही अब मैं पूरी ।
देखो परशाद अमी रस मूरी‡ ॥ २४ ॥
प्रेम धजा अब गगन फहराई ।
धुन धधकार अगम से आई ॥ २५ ॥

॥ शब्द छठवाँ ॥

आनँद मंगल आज,
साज सब आरत लाई ।
राधास्वामी हुए हैं दयाल,
काल डर दूर बहाई ॥ १ ॥

* वार दिया । † देखा । ‡ मूल ।

सुखमन थाल सजाय,
बंक की खोल किवाड़ी।
चन्द्र कटोरी आन,
भान की जोत सँवारी ॥ २ ॥
सुरत निरत की छड़ी,
अमी का भोग धराई।
सेत चँदरवा तान*
सेत की तान[†] सुनाई ॥ ३ ॥
कर्म रेख मिट गई,
सुन्न मैं बजी बधाई।
स्वामी किरपा करी
रूप अद्भुत दरसाई ॥ ४ ॥
सत्तनाम धुन अगम,
हिये बिच आन समाई।
काया नगर मँझार,
पुरुष की फिरी दुहाई ॥ ५ ॥
छोड़ कुटँब और तोड़ जक्त से
पोढ़[‡] पर पद पाई।

* खैंचकर। † राग। ‡ मज़बूत।

राधास्वामी राधास्वामी,
निस दिन रटना लाई ॥ ६ ॥
प्रेम मगन मन हुआ,
कहा अब कछू न जाई ।
सतसंगी मिल आरत गावें,
तन मन सुध बिसराई ॥ ७ ॥
स्वामी किरपा करी
सुरत अब लीन जगाई ।
शब्द अगम का भेद,
दीन सतगुरु दरसाई ॥ ८ ॥
उमँग उमँग कर उमँग उमँग कर,
आरत गाई ।
पंच शब्द धुन पंच शब्द धुन,
पूरन आई ॥ ९ ॥

॥ शब्द सातवाँ ॥

करूँ आरती राधास्वामी
तन मन सुरत लगाय ।
थाल बना सतशब्द का,
अलख जोत फहराय ॥ १ ॥

हंस सभी आरत करैं,
सन्मुख दर्शन पाय।
राधास्वामी दया कर,
दीन्हा अगम लखाय ॥ २॥
अनहद धुन घंटा बजे,
संख बजे मिरदंग।
औंकार मण्डल बँधा,
मेघनाद गरजन्त ॥ ३ ॥
सुन्न मण्डल धुन सारँगी,
किंगरी बजे अनूप।
कोट भान छबि रोम इक,
ऐसा पुरुष स्वरूप ॥ ४ ॥
कँवलन की क्यारी बनी,
भँवर करैं गुंजार ।
सेत सिंघासन बैठ कर,
देखैं पुरुष सम्हार ॥ ५ ॥
बीन बाँसरी मधुर धुन,
बाजै पुरुष हजूर।
सुन सुन हंसा मगन होयँ,
पियैं अमी रस मूर ॥ ६ ॥

रंग महल सतपुरुष का,
सोभा अगम अपार।
हंस जहाँ आनँद करैं,
देखैं बिमल बहार ॥ ७ ॥
अब आरत पूरन भई,
मन पाया बिसराम।
राधास्वामी चरन पर,
कोट कोट परनाम ॥ ८ ॥

॥ शब्द आठवाँ ॥

सुरत सखी आज करत आरती।
शब्द गुरू मन अपने धारती ॥ १ ॥
निरत दीप का किया उजाला।
रोई माया झुर गया काला ॥ २ ॥
बिरत* बिबेक थाल लिया हाथा।
मद और मोह झुकाया माथा ॥ ३ ॥
दीन गरीबी आन समाई।
कुटिल कपट अब दूर बहाई ॥ ४ ॥
प्रेम भक्ति की जोत जगाई।
लेकर सन्मुख स्वामी आई ॥ ५ ॥

* वृत्ती।

फेरत आरत घेरत मन को ।
टेरत* राधास्वामी चली धुन घन को ॥६॥
घोर उठा घट भीतर भारी ।
उमगा हिरदा चोट करारी ॥ ७ ॥
जिगर फटा दिल टुकड़े हुआ ।
तब राधास्वामी का दर्शन लिया ॥८॥
ऐसे कठिन स्वामी दर्शन पाये ।
कर्म भर्म सब दूर नसाये ॥ ९ ॥
प्रेम भक्ति की धारा छूटी ।
काम क्रोध की गठरी लूटी ॥ १० ॥
मान मनी की मटकी फूटी ।
जक्त बासना सबही छूटी ॥ ११ ॥
तत्त पाँच परकिर्त पचीसा ।
गुन तीनों धुर पटको सीसा ॥ १२ ॥
सुरत छूट चढ़ी गगन मँडल को ।
घेर लिया जाय काल मँडल को ॥१३॥
जीत लिया गढ़ सुन्न मँडल को ।
धार लिया मन अगम मँडल को ॥१४॥

* पुकारती हुई ।

मैं लोहा पारस राधास्वामी ।
पारस परस गई निज धामी ॥ १५ ॥
मैं भुवंग* तुम हो मणि मेरे ।
तेज तुम्हारे सुक्ख घनेरे ॥ १६ ॥
मैं कँवला तुम सूर प्रकाशी ।
दरस तुम्हारे पाऊँ हुलासी ॥ १७ ॥
मैं सरवर तुम कँवल अनूपा ।
सोभा पाऊँ मैं तुम्हरे रूपा ॥ १८ ॥
तुम सरवर मैं भइ हूँ हंसला† ।
मोती चुगूँ और देखूँ लीला ॥ १९ ॥
मैं प्यासी तुम अमृत धारा ।
मैं भूखी तुम्हरा अगम भँडारा ॥२०॥
अगम आरती ऐसी गाई ।
बिरह भाव की धार बहाई ॥ २१ ॥
कूड़ा करकट‡ सभी जलाया ।
महल आपना साफ़ कराया ॥ २२ ॥
मुझसी बिरहन और न कोई ।
मैं सब अपनी गति मति खोई ॥ २३ ॥

* सर्प । † हंस । ‡ कूड़ा ।

घर फूँका और लीन्हा लूका* ।
तीन लोक को छिन में थूका ॥ २४ ॥
सत्तलोक का पाया कूका† ।
अब कीन्हा मैंने काल का टूका‡ ॥२५॥
पाया सतगुरु चरन निवासा ।
होत सदा अब बिमल बिलासा ॥२६॥
महिमा ता की कही न जाई ।
गूँगे§ का गुड़ हो गया भाई ॥ २७ ॥

॥ शब्द नवाँ ॥

भर भर प्रेम आरती गाऊँ ।
नई उमँग अब चित्त समाऊँ ॥ १ ॥
भक्ति सिंध अति लहर उठाई ।
प्रीत रीत मोती उपजाई ॥ २ ॥
सुरत चमेली घट में खिलाई ।
निरत रँगीली संग मिलाई ॥ ३ ॥
शब्द गुरू गल हार पिन्हाया ।
गगन मँडल धुन अजब सुनाया ॥ ४ ॥

*पलीता, जिस से आग लगाई जावे । † आवाज़ । ‡ टुकड़ा ।
§ जो बोल न सके, मूक ।

पीत सेत और लाल बखाना ।
हरा श्याम पचरंगी बाना ॥ ५ ॥
पाँच रंग फुलवार खिलानी ।
देख देख दृष्टी हरखानी ॥ ६ ॥
जोत जगी हिये भया उजाला ।
श्याम निरख फिर सेत सम्हाला ॥ ७ ॥
अनहद बानी सुनी गगन में ।
मगन हुई सुर्त पहुँची धुन में ॥ ८ ॥
घंटा संख सूर दिस* छाँटा ।
बंक नाल का खोला घाटा ॥ ९ ॥
आरत एक करी त्रिकुटी में ।
गुरु स्वरूप निरखा अब घट में ॥ १० ॥
दूसर आरत सतगुरु कीन्ही ।
सत्तलोक गइ सुरत प्रबीनी ॥ ११ ॥
तीसर आरत राधास्वामी ।
निजकर करी देख निज धामी ॥ १२ ॥
महिमा उनकी क्योंकर गाऊँ ।
चरन सरन में निस दिन धाऊँ ॥ १३ ॥

* सूरज की दिशा यानी दाहिनी तरफ़ ॥

राधास्वामी धाम दिखाई ।
अद्भुत सोभा कही न जाई ॥ १४ ॥
राधास्वामी पुरुष अपारा ।
कहूँ कहा कुछ अजब बहारा ॥ १५ ॥

॥ शब्द दसवाँ ॥

सुरत आज लगी चरन गुरु धाय ।
श्याम लज सेत ग्राम ठहराय ॥ १ ॥
देख निज नाली बंक समाय ।
तिर्कुटी चढ़कर पहुँची आय ॥ २ ॥
हिये बिच पंकज अजब खिलाय ।
सेत पद धजा अगम फहराय ॥ ३ ॥
हंस जहाँ बाजे रहे बजाय ।
गुरू अस लीला दई दिखाय ॥ ४ ॥
रागनी नइ नइ नित्त सुनाय ।
भेद सब अक्षर* दीन बताय ॥ ५ ॥
घाट निःअक्षर† पाया जाय ।
गुफा में धुन इक सुनी बनाय ॥ ६ ॥
पदम सत निरखा भरम नसाय ।
बीन धुन पाई सुरत लगाय ॥ ७ ॥

* सुन्न । † महासुन्न ।

अलख और अगम रहा दरसाय ।
परे तिस राधास्वामी धाम मिलाय ॥८॥
जहाँ अब आरत साज सजाय ।
लिये मैं राधास्वामी खूब रिझाय ॥९॥
कहूँ क्या महिमा बरनी न जाय ।
सुरत मेरी छिन छिन रही मुसकाय* ॥१०॥
राधास्वामी लीला कहूँ छिपाय ।
लिया मोहिं अपने अंग लगाय ॥११॥
आरती पूरी कीन्ही आय ।
कहूँ क्या अस्तुत राधास्वामी गाय ॥१२॥
परम पद पाया काल भजाय† ।
बेद भी रहा बहुत भरमाय ॥ १३ ॥
भेद यह मिला न अब तक काय ।
दया कर राधास्वामी दिया जनाय ॥१४॥
करूँ अब आरत उनकी गाय ।
सुरत मेरी राधास्वामी लीन जगाय ॥१५॥
जोग और ज्ञान रहे मुरझाय ।
संत कोइ बिरले दिया सुझाय ॥ १६ ॥

* हँसती हुई । † दूर करके ।

राधास्वामी अचरज खेल दिखाय।
  चरन में राधास्वामी गई समाय॥१७॥

॥ शब्द ग्यारहवाँ ॥

चरन गुरु हिरदे धार रही ॥ टेक ॥

भौ की धार कठिन अति भारी।
  सो अब उलट बही ॥ १ ॥

गुरु बिन कौन सम्हारे मन को।
  सुरत उमँग अब शब्द गही ॥ २ ॥

कोटिन जन्म भरमते बीते।
  काहू मेरी आन न बाँह गही ॥ ३ ॥

अब के सतगुरु मिले दया कर।
  शब्द भेद उन सार दई ॥ ४ ॥

नौ को छोड़ द्वार दस लागी।
  अक्षर मथ नौनीत* लई ॥ ५ ॥

नौका पार चली अब गुरु बल।
  अगम पदारथ लीन सही ॥ ६ ॥

क्या क्या कहूँ कहन गति नाहीं।
  सुरत शब्द मिल एक हुई ॥ ७ ॥

* मक्खन।

रहन गहन की बात नियारी ।
संत बिना कोइ नाहिँ कही ॥ ८ ॥
सुन्न शिखर चढ़ महासुन्न लख ।
भँवर गुफा पर ठाट ठई* ॥ ९ ॥
सत्त नाम सत धाम निरख धुर ।
अलख अगम गति पाय गई ॥ १० ॥
सुरत निरत सँग चली अगाड़ी ।
राधास्वामी राधास्वामी चरन मई॥११॥
अब आरत सिंगार सुधारी ।
प्रेम उमँग भी बहुत चही ॥ १२ ॥
काल कला सब दूर बिडारी ।
दयाल सरन अब आन लई ॥ १३ ॥
पचरँग बाना† पहन‡ बिराजे ।
सोभा धारी आज नई ॥ १४ ॥
जीव काज निज भवन छोड़कर ।
जमा दूध फिर होत दही ॥ १५ ॥
मथ मथ माखन काढ़ निकारा ।
बिरले गुरुमुख चाख चखी ॥ १६ ॥

* मुक़ाम किया । † बरतर । ‡ पहिर कर ।

राधास्वामी दीन अवाज़ा ।
चढ़ो अधर निज धाम पई ॥ १७ ॥

॥ शब्द बारहवाँ ॥

अपने स्वामी की मैं करत आरती ।
कुल कुटंब सब अपना तारती ॥ १ ॥
काल कर्म सिर धौल* मारती ॥ ।
ममता चादर छिन में फाड़ती ॥ २॥
हँस हँस स्वामी हिये में धारती ।
रोग दोष सब छिन में जारती ॥ ३ ॥
थाल सजाया उमँग प्रेम का ।
दीपक बाला दरस नेम का ॥ ४ ॥
भोग धराया भाव भक्ति का ।
राग सुनाया ध्यान जुक्ति का ॥ ५ ॥
दृष्टि जोड़ कर दर्शन करती ।
नैनन में ज्यों पुतली धरती ॥ ६ ॥
छबि स्वामी की बड़ी चहीती† ।
मैं दरबारी स्वामी दर की ॥ ७ ॥
लौ लगाय चरनन में रहती ।
लउआ‡ नाम मैं अपना धरती ॥ ८ ॥

* थप्पड़ । † प्यारी । ‡ जो लव लगावे ।

श्याम कंज मैं त्यागा येही ।
सेत पद्म मैं सूरत देई ॥ ९ ॥
सुरत चढ़ाय गई आकाशा ।
खिल खिल देखूँ बिमल तमाशा ॥१०॥
राधास्वामी चरन निहारूँ ।
तन मन अपना उन पर वारूँ ॥११॥
आरत पूरन भइ है हमारी ।
पहुँच गई सतगुरु दरबारी ॥ १२ ॥

॥ शब्द तेरहवाँ ॥

आरत गावे दरसो* अपनी ।
छिन छिन राधास्वामी २ रटनी ॥ १ ॥
थाल इल्म† का जोत अमल‡ की ।
पढ़ पढ़ आयो राधास्वामी की सरनी ॥२॥
क़लम लगन और प्रेम दवाता ।
लिख २ राधास्वामी हिये बिच गाता ॥३॥
पढ़ी फारसी पढ़ी अँगरेजी ।
हुई मेहर बुध पाई तेज़ी ॥ ४ ॥
देखा सब जग झूठ पसारा ।
पाया नाम राधास्वामी का सारा ॥ ५ ॥

* जिसको दरशन की इच्छा है । † विद्या । ‡ अभ्यास ।

सुरत चढ़ी खुला शब्द अपारा ।
कुमत हटी और मन को गारा* ॥ ६ ॥
प्रेम बदरिया घुमड़न लागी ।
बरस बरस धुन अनहद जागी ॥ ७ ॥
चाँद सुरज दोउ गये छिपाई ।
सुखमन नदी उमँड कर आई ॥ ८ ॥
खुला द्वार फूटा घट गगना ।
सुन्न सिखर देखत मन मगना ॥ ९ ॥
बाल अवस्था खेल कूद की ।
खेल दिखाया साँचा अब की ॥ १० ॥
दया हुई अब स्वामी भारी ।
आरत पूरन हुई हमारी ॥ ११ ॥

॥ शब्द चौदहवाँ ॥

एक आरती कहूँ बनाई ।
राधास्वामी हुए सहाई ॥ १ ॥
शाँति थाल और सत मत जोती ।
समता सील धरे जहँ मोती ॥ २ ॥
रतनन माल परोई भाई ।
गल मैं स्वामी आन चढ़ाई ॥ ३ ॥

* गला दिया। † छा जाना।

हीरे लाल थाल भर लाई ।
माणिक पन्ना भेंट धराई ॥ ४ ॥
गहने कपड़े बहु पहिनाई ।
चोवा चंदन अङ्ग लगाई ॥ ५ ॥
अस अस सब सिंगार बनाई ।
कँवल देख ज्यों मधुकर* आई ॥ ६ ॥
स्वामी सन्मुख ठाढ़ी भई ।
आरत थाली कर में लई ॥ ७ ॥
आरत कर कर अति हरखाई ।
राग रागनी नइ नइ गाई ॥ ८ ॥
बाजे बजेँ गगन के द्वार ।
उमँग बढ़ी सुन सुन झनकार ॥ ९ ॥
अग्नि पवन और जल भंडार ।
तीनों पाये छोड़े वार ॥ १० ॥
इनके पार सुरत जब भई ।
चाँद सूर तज सुखमन गही ॥ ११ ॥
जोत निहारत मन हुलसाना ।
रूप निरंजन अलख पहिचाना ॥ १२ ॥

* भँवरा ।

घंटा नाद सुनी और पहुँची ।
संख नाद फिर सूरत खैंची ॥ १३ ॥
यहाँ से छूटी बंक पट खोला ।
त्रिकुटी जाय औंग धुन तोला ॥ १४ ॥
गरज गरज आकाश पुकारी ।
आव सुरत मैं तुझ पर वारी ॥ १५ ॥
लीला देखत चली अगाड़ी ।
सुन्न सरोवर कँवलन बाड़ी* ॥ १६ ॥
हंसन साथ महा सुख पाई ।
महासुन्न मैं जाय समाई ॥ १७ ॥
भँवरगुफा गई सोहं पास ।
मुरली धुन सुन करे बिलास ॥ १८ ॥
यहाँ से चढ़ पहुँची सतपुर मैं ।
सतगुरु पूरे मिले अधर मैं ॥ १९ ॥
नाना† धुन सुन बीन बजाई ।
सत्तपुरुष दुरबीन लखाई ॥ २० ॥
द्वारे धस गई अलख लोक मैं ।
अगम लोक फल पाया छिन मैं ॥ २१ ॥

* बगीचा । † अनेक तरह की ।

राधास्वामी घट दरसाना ।
क्या कहुँ महिमा अजब ठिकाना ॥२२॥
कहना था सो अब कह चुकी ।
आरत पूरन अब मैं करी ॥ २३ ॥
राधास्वामी हुए दयाल ।
दे परशादी किया निहाल* ॥ २४ ॥
हीरे लाल निछावर करती ।
तन मन धन तो तुच्छ समझती ॥२५॥

॥ शब्द पंद्रहवाँ ॥

आरत करूँ आज सतगुरु की ।
तन मन भेंट चढ़ाऊँ अब की ॥ १ ॥
ममता छोड़ूँ मैं अब सब की ।
प्रीत करूँ राधास्वामी चरनन की ॥२॥
सुमिरन नाम नेम से करूँ ।
प्रेम सहित अनहद धुन सुनूँ ॥ ३ ॥
सुन सुन धुन फिर आगे चलूँ ।
सहस कँवलदल बानी पढ़ूँ† ॥ ४ ॥
श्याम सेत तक आगे चलूँ ।
बंकनाल के भीतर धसूँ ॥ ५ ॥

* परिपूर्ण । † सुन्न और त्रिकुटी के शब्द ।

वहाँ से त्रिकुटी धाम सम्हारूँ ।
ओंग ओंग सँग बहुत पुकारूँ ॥ ६ ॥
ररंकार धुन सरवर तीर ।
हंसन की जहाँ देखी भीड़ ॥ ७ ॥
सेत सेत पद जहाँ गंभीर ।
सुरत निरत धस धारी धीर ॥ ८ ॥
जन्म जन्म की काटी पीड़ ।
छान करी जहाँ नीर और छीर ॥ ९ ॥
आतम अक्षर निरख निहारी ।
महासुन्न की करी तयारी ॥ १० ॥
अंध घोर जहाँ अति कर भारी ।
सतगुरु बल से पार सिधारी ॥ ११ ॥
भँवरगुफा पहुँची इक छिन में ।
बंसी की धुन पड़ी श्रवन में ॥ १२ ॥
सोहं सोहं सुनी पुकार ।
हंसन रूप देख उजियार ॥ १३ ॥
वहाँ से चली अमर पद आई ।
सत्तनाम धुन बीन सुनाई ॥ १४ ॥

अलख अगम का नाका* लिया ।
जहाँ अमी रस अद्भुत पिया ॥ १५ ॥
आगे को फिर सूरत धाई ।
राधास्वामी धाम समाई ॥ १६ ॥
अभेद आरती करी बनाई ।
भेद तासु कोइ संत जनाई ॥ १७ ॥
नहिँ वहाँ थाल न दीपक बाती ।
सदा आरती बहु बिधि गाती ॥ १८ ॥
चरन सेव चरनामृत पीती ।
उमँग सहित परशादी लेती ॥ १९ ॥
छिन छिन राधास्वामी रूप निहारूँ ।
पल पल राधास्वामी हिरदे धारूँ॥२०॥
सुरत शब्द सँग आई जाग ।
राधास्वामी मिले बड़े मेरे भाग ॥२१॥

॥ शब्द सोलहवाँ ॥

राधास्वामी दया प्रेम घट आया ।
बंधन छूटे भर्म गँवाया ॥ १ ॥
सीतल शब्द जोत लख पाई ।
गगन मँडल में सुरत समाई ॥ २ ॥

* हद, सीमा ।

उमगत हिरदा सुध बिसराई ।
तन मन धन्न सब भेंट चढ़ाई ॥ ३ ॥
अब रक्षा मेरि तुम्हरे हाथा ।
चरन तुम्हार मोर रहे माथा ॥ ४ ॥
सुमिरन नाम करूँ निस* बासर† ।
शब्द जोग का पाया औसर ॥ ५ ॥
देखत रहूँ रूप गुरु प्यारा ।
काम बाम‡ को धर धर मारा ॥ ६ ॥
आरत करूँ प्रेम रँग पूरी ।
पास रहूँ गुरु के तज दूरी ॥ ७ ॥
प्रेम उमँग धारा घट बढ़ती ।
सुरत निरत नित ऊँचे चढ़ती ॥ ८ ॥
भूल भरम धोखा सब भागा ।
राधास्वामी चरन बढ़ा अनुरागा ॥९॥

॥ शब्द सत्रहवाँ ॥

प्रेम प्रीत घट धार ।
आरती राधास्वामी कीजे ॥ १ ॥
मन माधो§ तन बास ।
सुरत चरनन में दीजे ॥ २ ॥

* रात । † दिन । ‡ माया । §माया के पीछे दौड़नेवाला ।

थाल उमँग और जोत बिरह।
　घट परगट कीजे ॥ ३ ॥
सतगुरु होय दयाल।
　दान फिर शब्द मिलीजे ॥ ४ ॥
शब्द शब्द चढ़ गगन।
　सुन्न में अमृत पीजे ॥ ५ ॥
मानसरोवर बास।
　हंस सँग खेल खिलीजे ॥ ६ ॥
कँवल द्वार धस जाय।
　सेत पद आस धरीजे ॥ ७ ॥
महासुन्न का घाट।
　दया सतगुरु से लीजे ॥ ८ ॥
भँवर गुफा धुन बाँसरी।
　आश्चर्य्य सुनीजे ॥ ९ ॥
सत्तनाम धुन बीन।
　ताहि में सूरत दीजे ॥ १० ॥
अलख अगम दरबार।
　देख घट प्रेम भरीजे ॥ ११ ॥
सुरत सोहागिन हुई।
　काल बल सब ही छीजे ॥ १२ ॥

घोखा सब ही मिटा ।
पुरुष सँग छिन छिन रीझे ॥ १३ ॥
संत कृपा जब होय ।
सुरत अपने घर सीझे ॥ १४ ॥
सतसँग करो बनाय ।
अमी का छींटा लीजे ॥ १५ ॥
राधास्वामी नाम ।
हिये में आन धरीजे ॥ १६ ॥
रोम रोम मन मगन ।
आरती पूरन कीजे ॥ १७ ॥

॥ शब्द अठारहवाँ ॥

तिल भीतर दिल जोड़ ।
कँवल* में आसन करिये ॥ १ ॥
दृष्टि उलट असमान ।
जोत फुलवारी खिलिये ॥ २ ॥
बाजे शब्द अनाहदी ।
घट मंगल भरिये ॥ ३ ॥
सुरत शिखर चढ़ गई ।
बंक में छिन छिन धरिये ॥ ४ ॥

* सहसदल कँवल ।

कँवल तिरकुटी पाय ।
  भँवर मन कारज सरिये ॥ ५ ॥
ररंकार धुन सुनी ।
  काल दल मार गिरइये ॥ ६ ॥
संत कृपा अब हुई ।
  घाट घट सब ही खुलिये ॥ ७ ॥
यह मारग निज पीव का ।
  बिन भाग न मिलिये ॥ ८ ॥
कौतुक कुदरत धार ।
  प्रेम का खेल खिलइये ॥ ९ ॥
घट पट लीला देख।
  अमीरस धार बहइये ॥ १० ॥
निज भक्तन के काज ।
  पंथ यह नया चलइये ॥ ११ ॥
बेद न जाने भेद ।
  कर्म बस योंही बहिये ॥१२॥
यह मारग निज सन्त का
  सतसँग से पइये ॥ १३ ॥

*खेल या करतूत ।

सतगुरु की कर आरती ।
उन बहुत रिझइये ॥ १४ ॥
राधास्वामी दया से
पूरन पद पइये ॥ १५ ॥

॥ शब्द उन्नीसवाँ ॥

उमँग आज हुई हिये में भारी ।
सरन में राधास्वामी जाय पुकारी ॥१॥
करूँ अब आरत बिबिध प्रकारी ।
होय जो मेहर अपार तुम्हारी ॥ २ ॥
वहीं राधास्वामी दृष्टि निहारी ।
कहा कर आरत लेकर थारी ॥ ३ ॥
सुरत से निरखो तिलकर यारी* ।
खोल यह खिड़की पार सिधारी ॥ ४ ॥
गई नभ अन्दर जोत लखा री ।
देखकर तारा शब्द सुना री ॥ ५ ॥
बंक चढ़ त्रिकुटी आन पुकारी ।
सुन्न में अक्षर धुन धर धारी ॥ ६ ॥
महासुन पहुँची खोल किवाड़ी ।
भँवर का राग सुना अति भारी ॥ ७ ॥

* मीत ।

सत्त पद आई अमर अटारी*।
अलख और अगम जाय परसा री ॥८॥
कही यह आरत राधास्वामी सारी।
करे कोइ सज्जन सुरत सम्हारी ॥ ९ ॥
प्रेम की धारा बही नियारी।
शब्द घट पाया सुरत करारी ॥ १० ॥
नाम रँग लागा अजब बहारी।
मगन होय बैठी काज सँवारी ॥ ११ ॥
सन्त बिन सब ही पच पच हारी।
मिला नहिँ भेद रहे सब वारी† ॥१२॥
दई राधास्वामी वस्तु अपारी।
मेहर अब होगइ मुझ पर न्यारी ॥१३॥

॥ शब्द बीसवाँ ॥

सुरत आज चली आरती धार।
गुरुन पै चली आरती धार ॥ १ ॥
नाना बिधि के भूषण पहिने।
कर अपना सिंगार ॥ २ ॥
मन के मोती चित की चुन्नी।
बिरह नथनिया डार ॥ ३ ॥

* महल। † इस पार, माया की हद में।

नेह* नौगरी† चेतन चुटकी† ।
बिछुवा† पहिर बिचार ॥ ४ ॥
पाँच मुंदरा‡ मुँदरी† पहिरी ।
हिरदे हार सँवार ॥ ५ ॥
करनफूल† करुणा गुरु पाई ।
पहुँची गुरु दरबार ॥ ६ ॥
छल्ला† पछेली† छान ज्ञान की ।
नौनग† तज नौ द्वार ॥ ७ ॥
पाँच तत्त पचलड़ी† बनाई ।
सीसफूल† लख गगन मँझार ॥ ८ ॥
बैना† बैन§ सुने अनहद के ।
अधर चंद्र† का खोला द्वार ॥ ९ ॥
जुगनी† जुग बाँधा सतगुरु से ।
चली आरसी† पार ॥ १० ॥
अनवट† बाट** खुली अंदर में ।
मंदिर जोत निहार ॥ ११ ॥
झूमर† अमर नगीना‡ देखा ।
झूमी झूमके† डार ॥ १२ ॥

*स्नेह, प्रीत । †नाम गहने का । ‡ चाचरी, भूचरी, खेचरी, अगोचरी, उनमुनी । § वानी, आवाज़ । ** रास्ता ।

सुमिरन नाम गुलूबंद* डाला ।
　　हँसली* सील सम्हार ॥ १३ ॥
मोह तोड़ तोड़ा* गल डारा ।
　　सतलड़* हुई सत्त की लार ॥ १४ ॥
घुँघरू* झाँझ* बजे घट भीतर ।
　　सोभा पायज़ेब* उजियार ॥ १५ ॥
बाँक* बंक के द्वार समानी ।
　　टीका टेक अधार ॥ १६ ॥
तिल के छल्ले* पिलकर† पहिरे ।
　　कड़े* कड़क§ धुन सार ॥ १७ ॥
चंपाकली* कँवल की कलियाँ ।
　　दल पर अजब बहार ॥ १८ ॥
चौकी* चौक निहार सुन्न का ।
　　चमक दामिनी पार ॥ १९ ॥
मन इन्द्री बस छब्बा* पहिना ।
　　लटकन* लटक सम्हार ॥ २० ॥
बेसर* सरवर सुरत लगाई ।
　　हंसन साथ किया जाय प्यार ॥ २१ ॥

* नाम गहने का । † संग । ‡ धस कर । § ज़ोर से आवाज़ करती हुई ।

महासुन्न चढ़ भँवर गुफा पर ।
भँवरकली* मुरली झनकार ॥ २२ ॥
सुन सुन धुन सतलोक सिधारी ।
मिली पुरुष से नार सुनार† ॥२३॥
सत्तपुरुष सँग आरत कीन्ही ।
हाथ लिया सत सोहं थार ॥ २४ ॥
कोट चंद्रसा सूर करोड़ों ।
जोत जगाई अधिक सुधार ॥ २५ ॥
पूरन पद पूरन परशादी ।
दइ राधास्वामी निरख निहार॥२६॥
हीरे लाल निछावर‡ कीन्हे ।
उमँग बढ़ी जा का वार न पार ॥ २७ ॥

॥ शब्द इक्कीसवाँ ॥

गुरुमुख प्यारा गुरू अधारा ।
आरत धारा री ॥ १ ॥
चरन निहारा सरन सम्हारा ।
शब्द सिँगारा री ॥ २ ॥
राग निकारा बिरह पुकारा ।
सुरत सँवारा री ॥ ३ ॥

* नाम गहने का । † उत्तम स्त्री । ‡ अर्पण ।

काल बिडारा* मन को मारा ।
इन्द्री जारा री ॥ ४ ॥
गगन सिधारा नाम सिहारा† ।
सुन्न मँझारा री ॥ ५ ॥
रूप अपारा नैन उघाड़ा ।
देख पसारा री ॥ ६ ॥
खोल किवाड़ा पाट उघाड़ा‡ ।
श्याम दुआरा री ॥ ७ ॥
कर दीदारा सेत अखाड़ा ।
कर्म पछाड़ा री ॥ ८ ॥
निरमल धारा अगम अगारा§ ।
अमी अहारा री ॥ ९ ॥
चौक अपारा अजब बहारा ।
कीन बिहारा री ॥ १० ॥
धुन धधकारा छाँटी सारा ।
गुरु दरबारा री ॥ ११ ॥
मनुआँ हारा लीन किनारा ।
शब्द कटारा‖ री ॥ १२ ॥

* दूर किया । † परखा, देखा । ‡ खोला । § रोशन, अविनाशी । ‖ नाम हथियार ।

गुरू दुलारा नाम चितारा ।
सूर करारा री ॥ १३ ॥
धुन ओंकारा सूर अकारा* ।
बजत चिकारा† री ॥ १४ ॥
तुम दीनदयारा फाँसी टारा ।
कर उपकारा री ॥ १५ ॥
मैं नीच निकारा अति नाकारा ।
औगुन भारा री ॥ १६ ॥
तन अहंकारा काम लबारा ।
पड़ा उजाड़ा री ॥ १७ ॥
लोभ गँवारा मोह बिजारा‡ ।
कुछ न बिचारा री ॥ १८ ॥
हुआ तुम्हारा सब से न्यारा ।
सीस चरन पर डारा री ॥ १९ ॥
चाह चमारा नहिं आचारा§ ।
तौभी पार उतारा री ॥ २० ॥
सहस कँवल दल त्रिकुटी चढ़ चल ।
खोला दसवाँ द्वारा री ॥ २१ ॥

* आकार। † एक तरह का बाजा। ‡ सांड़, बैल। § शुद्ध।

सुन्न परे महासुन्न अँधारा* ।
देखा भँवर उजारा री ॥ २२ ॥
गुफा परे सतपुरुष हमारा ।
पाया अब पद चारा री ॥ २३ ॥
अलख अगम को जाकर निरखा ।
तन मन उन पर वारा री ॥ २४ ॥
सुरत निरत दोउ चले अगाड़ी ।
धाम मिला निज सारा री ॥ २५ ॥
आरत कर कर प्रेम बढ़ाऊँ ।
धृग धृग सब संसारा री ॥ २६ ॥
राधास्वामी सतगुरु पाये ।
उन पर मैं बलिहारा री ॥ २७ ॥
कहा कहूँ कुछ कहत न आवे ।
मैं अब उन की लारा† री ॥ २८ ॥

॥ शब्द बाईसवाँ ॥

जीव चिताय रहे राधास्वामी ।
सतपुर निज पुर अगम अधामी ॥ १ ॥
भाग उदय उन जीवन भारी ।
राधास्वामी जिन घर चरन पधारी ॥२॥

* अँधेरा । † साथ ।

कौन कहे महिमा इस औसर ।
हारे ब्रह्मा बिश्नु महेशर ॥ ३ ॥
इक इक जीव काज किया अपना ।
गुरु आरत कर हुए अति मगना ॥ ४ ॥
गुरु सँग हंस फ़ौज़ चल आई ।
कर सन्मान हार पहिनाई ॥ ५ ॥
भोजन बस्त्र देख सब हरखे ।
अति कर प्रीत भाव इन परखे ॥ ६ ॥
हुए प्रसन्न सतगुरु अबिनाशी ।
दिया दान किया सतपुर बासी ॥ ७ ॥
अन धन और सन्तान भोग रस ।
जक्त भोग और मिला जोग रस ॥ ८ ॥
पर किरपा सतगुरु अस रहई ।
मोह न ब्यापे जग नहिँ फसई* ॥ ९ ॥
रहे सुरत निरमल गुरु साथा ।
शब्द मिले रहे चरनन माथा ॥ १० ॥
अपनी दया से गुरु दियो दाना ।
सेवक तो कुछ माँग न जाना ॥ ११ ॥

*बन्धन में पड़े।

दया करें जब सतगुरु अपनी ।
बिना माँग करवावें करनी ॥ १२ ॥
नाम अनाम पदारथ न्यारा ।
सो सतगुरु दीन्हा कर प्यारा ॥ १३ ॥
अब देवे को कुछ न रहाई ।
सतगुरु ही तेरे हुए भाई ॥ १४ ॥
राधास्वामी कहा बनाई ।
सदा रहे सतनाम सहाई ॥ १५ ॥

॥ बचन सातवाँ ॥

बिनती और प्रार्थना परमपुरुष पूरनधनी राधास्वामी के चरन कँवल में ।

॥ शब्द पहिला ॥

करूँ बेनती दोउ कर जोरी ।
अर्ज़* सुनो राधास्वामी मोरी ॥ १ ॥
सत्त पुरुष तुम सतगुरु दाता ।
सब जीवन के पितु और माता ॥२॥
दया धार अपना कर लीजे ।
काल जाल से न्यारा कीजे ॥ ३ ॥

* प्रार्थना ।

सतजुग त्रेता द्वापर बीता ।
काहु न जानी शब्द की रीता ॥ ४ ॥
कलजुग में स्वामी दया बिचारी ।
परगट करके शब्द पुकारी ॥ ५ ॥
जीव काज स्वामी जग में आये ।
भौसागर से पार लगाये ॥ ६ ॥
तीन* छोड़ चौथा† पद दीन्हा ।
सत्तनाम सतगुरु गत चीन्हा ॥ ७ ॥
जगमग जोत होत उजियारा ।
गगन सोत‡ पर चंद्र निहारा ॥ ८ ॥
सेत सिंघासन छत्र बिराजै ।
अनहद शब्द गैब§ धुन गाजै ॥ ९ ॥
क्षर अक्षर निहअक्षर पारा ।
बिनती करै जहाँ दास तुम्हारा ॥१०॥
लोक अलोक पाऊँ सुख धामा ।
चरन सरन दीजै बिसरामा ॥ ११ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

रोम रोम मेरे तुम आधार ।
रग रग मेरी करत पुकार ॥

* त्रिलोकी । † सत्तलोक । ‡ भंडार । § गुप्त ।

अङ्ग अङ्ग मेरा करे गुहार* ।
बंद बंद से करूँ जुहार† ॥
हे राधास्वामी अधम उधार ।
मैं किंकर तुम दीनदयार ॥ १ ॥
इन्द्री मन मेरे भरे बिकार ।
तन भी बँधा जक्त की लार ॥
मैं सब बिधि बहता भौ धार ।
तुमही पार उतारनहार ॥
हे राधास्वामी सुख भंडार ।
मैं अति दीन फँसा संसार ॥ २ ॥
काढ़ि निकारो मोहिं दातार ।
दात तुम्हारी अगम अपार ॥
दयासिंध जीवन आधार ।
तुम बिन कोइ न सम्हारनहार ॥
हे राधास्वामी सरन तुम्हार ।
गही आन मैं नीच नकार ॥ ३ ॥
सदा रहूँ तुम चरन अधार ।
कभी न बिछडूँ यही पुकार ॥

* पुकार । † बंदगी ।

निस दिन राखूँ हिये सम्हार ।
चरन तुम्हार मोर आधार ॥
हे राधास्वामी अपर अपार ।
मोहिँ दिखाओ निज दरबार ॥ ४ ॥
मम करनी कहिँ करो बिचार ।
तो मैं ठहरन जोग न द्वार ॥
तुम गंभीर धीर जग पार ।
मैं डूबत हूँ भौजल वार ॥
हे राधास्वामी लगाओ किनार ।
तम खेवटिया सब से न्यार ॥ ५ ॥
चोर चुग़ल बरतूँ अहंकार ।
कपट कुटिलता बड़ा लबार ॥
काम क्रोध और मोह पियार ।
क्या क्या बरनूँ भरा बिकार ॥
हे राधास्वामी छिमा सम्हार ।
लीजे मुझको अभी उबार ॥ ६ ॥
तुम महिमा का वार न पार ।
शेष गनेश रहे सब हार ॥

माया ब्रह्म नहीं औतार ।
कर न सके बहे काली धार ॥
हे राधास्वामी सब के पार ।
इन सब के तुमहीं आधार ॥ ७ ॥
मैं तुम चरन जाउँ बलिहार ।
देख न सकूँ रूप उजियार ॥
तेज पुंज तुम अगम अपार ।
चाँद सूर की जहाँ न शुमार ॥
हे राधास्वामी तुम दीदार ।
बिना मेहर को करे अधार ॥ ८ ॥
राधास्वामी राधास्वामी नाम तुम्हार ।
यही मेरा कुल और यही परिवार ॥
राधास्वामी राधास्वामी बारंबार ।
कहत रहूँ और रहूँ हुशियार ॥
हे राधास्वामी मर्म तुम्हार ।
तुम्हरी दया से पाऊँ सार ॥ ९ ॥
गुरु स्वरूप धर लिया औतार ।
जीव उबारन आये संसार ॥

* गिनती ।

नर स्वरूप धर किया उपकार ।
तुम सतगुरु मेरे परम उदार ॥
हे राधास्वामी शब्द दुवार ।
खोल दिया तुम बज्र किवाड़ ॥ १० ॥
लीला तुम्हरी अजब बहार ।
कह न सके कोइ वार न पार ॥
जिसे दिखाओ सो देखनहार ।
तुम बिन कोई न परखनहार ॥
हे राधास्वामी गुरू हमार ।
तुम बिन कौन करे निरवार ॥ ११ ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

करूँ बेनती राधास्वामी आज ।
काज करो और राखो लाज ॥ १ ॥
मैं किंकर तुम चरन नमामी ।
पाऊँ अगमपुर और अनामी ॥ २ ॥
कहँ लग बिनती कह कर गाऊँ ।
तुम्हरि सरन स्वामी मैं बल जाऊँ ॥३॥
बिनती करनी भी नहिँ जानूँ ।
तुम्हरे चरन को पल पल मानूँ ॥४॥

तुम बिन और न दूजा कोई ।
सेवक मुझ सा और न होई ॥ ५ ॥
मैं जंगी तुम हो राधास्वामी ।
जोड़ मिलाया तुम अन्तरजामी ॥ ६ ॥

॥ शब्द चौथा ॥

स्वामी सुनो हमारी बिनती ।
मैं करूँ तुम्हारी बिनती ॥ १ ॥
मेरे औगुन मत करो गिनती ।
मैं तन मन अपना हनती ॥ २ ॥
मैं किंकर कुटिल कुपंथी ।
मैं हीन करूँ अति चिंती ॥ ३ ॥
महिमा अगम तुम्हारी सुनती ।
तुम दयाल दाता निज संती ॥ ४ ॥
नित कुमति जाल उरझंती* ।
तुम समरथ पुरुष महा मतवंती ॥५॥
मैं बिरह अगिन बिच रहूँ जलंती ।
क्योंकर भौसागर पार परंती ॥ ६ ॥
मेरी सुरत करो सतवंती ।
तुम चरन सरन की रहूँ दृढवंती ॥७॥

* फंसती ।

सब कर्म धर्म ज्यों दाल दलंती ।
सुझे करो भक्त कुलवंती ॥ ८ ॥
रोग सोग दुख रहूँ सहंती ।
दूर करो ऐसी मान महंती* ॥ ९ ॥

॥ बचन आठवाँ ॥

॥ महिमा सतगुरु स्वरूप राधास्वामी की॥

॥ शब्द पहिला ॥

गुरू गुरू मैं हिरदे धरती ।
गुरु आरत की सामाँ करती ॥ १ ॥
गुरु मेरे पूरण पुरुष बिधाता ।
तिन चरनन पर मन मेरा राता ॥ २॥
गुरु हैं अगम अपार अनामी ।
गुरु बिन दूसर और न जानी ॥ ३ ॥
नहिँ ब्रह्मा नहिँ बिष्णु महेशा ।
नहिँ ईश्वर परमेश्वर शेषा ॥ ४ ॥
राम कृष्ण नहिँ दस औतारी ।
व्यास बशिष्ट न आदि कुमारी† ॥५॥

* बड़ाई । † आद्या ।

ऋषि मुनि देवी देव न कोई ।
तीरथ बर्त धर्म नहिँ होई ॥ ६ ॥
जोगी जती तपी ब्रम्हचारी ।
जनक सनक सन्यास बिचारी ॥ ७ ॥
आतम परमातम नहिँ मानूँ ।
अक्षर निहअक्षर नहिँ जानूँ ॥ ८ ॥
सत्तनाम जानूँ न अनामी ।
लिख गिरंथ सब करत बखानी ॥ ९ ॥
सब को करूँ प्रनाम जोड़ कर ।
पर कोई नहिँ सतगुरु सम सर* ॥
सतगुरु कृपा सबन को जाना ॥ १० ॥
बिन सतगुरु कैसे पहिचाना ॥ ११ ॥
सतगुरु भेद दिया इक इक का ।
तब जाना इन सब का ठेका ॥ १२ ॥
सतगुरु सब का भेद बखानैँ ।
अब किस को गुरु से बढ़ जानैँ ॥१३॥
गुरु ने सब का पद दरसाई ।
जस जस जिन की गति तस गाई ॥१४॥

* बराबर ।

तातें सतगुरु सब के करता ।
सतगुरु ही हैं सब के हरता ॥ १५ ॥
यातें सतगुरु का पद भारी ।
सतगुरु सम नहिं कोइ बिचारी ॥१६॥
जब जिव सरन गुरू की आवे ।
कर्म धर्म और भर्म नसावे ॥ १७ ॥
जो गुरु मारग देहिं लखाई ।
सोइ निज कर्म धर्म हुआ भाई ॥१८॥
गुरु आज्ञा से जो शिष करई ।
वह करतूत भक्ति फल देई ॥ १९ ॥
तातें पिरथम गुरु को खोजो ।
शब्द बतावें सो गुरु सोधो* ॥ २० ॥
अस गुरु सम कोइ और न आना ।
गुरु मिले फिर कहा कमाना ॥ २१ ॥
या तें मो मत निश्चय येही ।
गुरु बिन दूसर और न सेई ॥ २२ ॥
जाके हिरदे गुरु परतीती ।
काल कर्म वा से नहिं जीती ॥ २३ ॥

* छांट करो ।

सब के सिर पर उस का डंका ।
काहू की उस के नहिं संका ॥ २४ ॥
बड़े बड़े उधरें उस संगा ।
गुरुमुख है इन सब से चंगा ॥ २५ ॥
गुरुमुख की गति सब से भारी ।
गुरुमुख कोटिन जीव उबारी ॥ २६ ॥
कहँ लग महिमा गुरुमुख गाऊँ ।
कोई न जाने किस समझाऊँ ॥ २७ ॥
जग में पड़ा काल का घेरा ।
जीव करें चौरासी फेरा ॥ २८ ॥
जो चौरासी छूटन चावें ।
तो गुरुमुख सेवा चित लावें ॥ २९ ॥
और काम सब देहिं बहाई ।
शब्द गुरू को करें कमाई ॥ ३० ॥
कोटिन जन्म रहे कोइ काशी ।
बेद पाठ और तीरथ बासी ॥ ३१ ॥
जप तप संजम बहु बिधि करई ।
भेष बनावे बिद्या पढ़ई ॥ ३२ ॥

पिछलों की जो धारें टेका* ।
जिनको कभी आँख नहिं देखा ॥ ३३ ॥
पोथिन में सुनी उनकी महिमा ।
टेक बाँध मन सब का भरमा ॥ ३४ ॥
अब इन को जो कोइ समझावे ।
टेक छोड़ते जिव सा जावे ॥ ३५ ॥
कोई शिव और कोई बिष्णु की ।
कोई राम और कोई कृष्ण की ॥ ३६ ॥
कोइ देबी कोइ गंगा जमना ।
कोइ मूरत कोइ चारों धामा† ॥ ३७ ॥
कोइ मथुरा कोइ टेक मुरारी ।
मदनमोहन कोइ कुंजबिहारी ॥ ३८ ॥
कोइ गोकुल कोइ बलभाचारी ।
कोइ कंठी माला गल धारी ॥ ३९ ॥
कोइ अचार कोइ संध्या तर्पन ।
गया गायत्री करें समर्पन ॥ ४० ॥
कोइ गीता कोइ भागवत पढ़ते ।
कथा पुरान नेम से सुनते ॥ ४१ ॥

---

* पक्ष । † चार तीर्थ के स्थान, बद्रीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ और रामेश्वर ।

क्या दादू क्या नानकपंथी ।
क्या कबीर क्या पलटू संती ॥ ४२ ॥
सब मिल करते पिछली टेका ।
वक्त गुरू का खोज न नेका* ॥ ४३ ॥
बिन गुरु वक्त भक्ति नहिं पावे ।
बिना भक्ति सतलोक न जावे ॥ ४४ ॥
यह कहना उन जीवन कारन ।
जिन के बिरह अनुराग की धारन ॥४५॥
बिषई संसारी और रागी ।
इन को टेक न चहिये त्यागी ॥ ४६ ॥
इन को टेक सहारा भारी ।
टेक बिना कुछ नाहिं अधारी ॥ ४७ ॥
उन को नहिं उपदेश हमारा ।
उन को जक्त कामना मारा ॥ ४८ ॥
कोइ कुटम्ब कोइ धन आधीना ।
कोइ कोइ मान प्रतिष्ठा लीना ॥४९॥
मारे डर के टेक न छोड़ैं ।
वक्त गुरू में मन नहिं जोड़ैं ॥ ५० ॥

* कुछ ।

जो अनुरागी बिरही भाई ।
भक्ति गुरू की उन प्रति गाई ॥ ५१ ॥
वक़्त गुरू जब लग नहिं मिलई ।
अनुरागी का काज न सरई ॥ ५२ ॥
पिरथम सीढ़ी भक्ति गुरू की ।
दूसर सीढ़ी सुरत नाम की ॥ ५३ ॥
जब लग गुरु भक्ती नहिं पूरी ।
मन मनसा यह होयँ न चूरी ॥ ५४ ॥
मन चूरे बिन सुरत न निर्मल ।
कैसे चढ़े और लगे शब्द चल ॥ ५५ ॥
गुरु भक्ती अस कैसे आवे ।
सतसँग कर गुरु सेवा धावे ॥ ५६ ॥
गुरु को पल पल माहिं रिझावे ।
गुरु प्रसन्नता नित्त कमावे ॥ ५७ ॥
गुरु जब इसको प्यारे होईं ।
गुरु को प्यारा जब यह होई ॥ ५८ ॥
पूरन दया गुरू जब करईं ।
भक्ति पदारथ जबही मिलई ॥ ५९ ॥
यह भी जोग मेहर से होगा ।
दया मेहर बिन जानो धोखा ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

क्या हिंदू क्या मुसलमान, क्या ईसाई जैन।
गुरुभक्ती पूरन बिना, कोइ न पावै चैन ॥६१॥

पिरथम सीढ़ी है गुरु भक्ती।
गुरु भक्ती बिन काज न रत्ती ॥ ६२ ॥
और उपाय अनेकन करते।
गुरु भक्ती को मुख्य न रखते ॥ ६३ ॥
यही कसर है सब के मत में।
सिद्धांत न पावैं ओछे चित में ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥

गुरुभक्ती दृढ़ के करो, पीछे और उपाय।
बिन गुरुभक्ती मोह जग कभी न काटा जाय ६५
मोटे बंधन जगत के, गुरु भक्ती से काट।
झीने* बंधन चित्त के, कटैं नाम परताप ॥६६॥
मोटे जब लग जायँ नहिं, झीने कैसे जायँ।
ताते सब को चाहिये, नित गुरुभक्ति कमायँ ६७
एक जन्म गुरु भक्ति कर, जन्म दूसरे नाम।
जन्म तीसरे मुक्तिपद, चौथे मैं निज धाम ६८

*सूक्ष्म।

अब आरत गुरु करूँ सँवारा।
काया थाल मन दीपक बारा ॥ ६९ ॥
भक्ति जोत और भोग अनुरागा।
दृष्टि जोड़ चित चरनन लागा ॥ ७० ॥
यों आरत अब करी बनाई।
सतगुरु पूरे रहें सहाई ॥ ७१ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

गुरु मिले परम पद दानी।
क्या गतिमति उनको करूँ बखानी ॥१॥
मैं अजान महिमा नहिँ जानी।
बिना मेहर क्योंकर पहिचानी ॥ २ ॥
गति अति गोप* न जाने बेदा।
ज्ञान जोग कर मिले न भेदा ॥ ३ ॥
पद उनका इन से रहे दूरी।
यह तो थक रहे काल हजूरी ॥ ४ ॥
वह दयाल पद अगम अपारा।
तीन सुन्न आगे रहा न्यारा ॥ ५ ॥
संत बिना कोइ भेद न जाने।
उस घर से वह आय बखानें ॥ ६ ॥

* गुप्त।

मैं भी उन चरनन कर दासा ।
भइ परतीत बँधी पद आसा ॥ ७ ॥
सुरत शब्द मारग मोहिं दीन्हा ।
किरपा कर अपना कर लीन्हा ॥ ८ ॥
नित अभ्यास करूँ मैं येही ।
इक दिन पाऊँ शब्द बिदेही ॥ ९ ॥
सतगुरु मेरे परम दयाला ।
करूँ आरती होउँ निहाला ॥ १० ॥
आतम थाल परमातम जोती ।
सत्तनाम पद पोया मोती ॥ ११ ॥
भाव भक्ति से आरत कीनी ।
पद सतगुरु जल मैं भइ मीनी ॥ १२ ॥
यह आरत अब पूरन भई ।
आगे कुछ कहनी नहिँ रही ॥ १३ ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

गुरु प्रीत बढ़ी चितवन मैं ।
सुर्त खैंच धरी चरनन मैं ॥ १ ॥
मेरी दृष्टि हरी दरशन मैं ।
अब प्रेम बढ़ा छिन छिन मैं ॥ २ ॥

* हुई ।

सतगुरु पर जाऊँ बलिहारी ।
सतगुरु मेरी सुद्ध सम्हारी ॥ ३ ॥
लीन्हा मोहिँ भुजा पसारी ।
दीन्ही मोहिँ भक्ति करारी ॥ ४ ॥
आरत अब उनकी करहूँ ।
तन मन धन सभी अरपहूँ ॥ ५ ॥
बिन गुरु कोइ और न मानूँ ।
बिन नाम ठौर नहिँ जानूँ ॥ ६ ॥
गुरु करैं होयगा सोई ।
गुरु बिन कोइ और न होई ॥ ७ ॥
गुरु करता सब जग कारज ।
गुरु ही सब जीव अचारज ॥ ८ ॥
गुरु तो मेरे प्रान अधारा ।
गुरु ही मेरा करैं उधारा ॥ ९ ॥
गुरु सम कोइ और न प्यारा ।
गुरु ही मोहिँ लेयँ सुधारा ॥ १० ॥
मेरे हिरदे गुरुहि बिराजैं ।
जम काल लजावत भाजैं ॥ ११ ॥

छाया घट गुरु परतापा ।
रहू* बलाय दूर त्रय तापा† ॥ १२ ॥
आरत गुरू कर कर भीजूँ ।
उमँग बढ़ाय प्रेम धुर खीचूँ ॥ १३ ॥
मीना सम लइ गुरु सरना ।
अब रहा न मोहिं कुछ करना ॥ १४ ॥
राधास्वामी गुरु हम पाये ।
पी चरन अंबु तृसाये ॥ १५ ॥

॥ शब्द चौथा ॥

आज मेरे आनँद होत अपार ।
आरती गावत हूँ गुरु सार ॥ १ ॥
किया मैं अचरज प्रेम सिँगार ।
बिराजे सतगुरु बस्तर धार ॥ २ ॥
दरस उन करू सम्हार सम्हार ।
गाऊँ गुन उनका बारम्बार ॥ ३ ॥
आओ री सखियो जुड़ मिल भाड़ ।
गाओ और दरशन करो निहार ॥ ४ ॥
गुरू मेरे बैठे पलँग सँवार ।
आज मेरा जागा भाग अपार ॥ ५ ॥

* नाश। † तीन ताप यानी आधि, व्याधि, उपाधि ।

रही मैं गुरु के सनमुख ठाड़ ।
करूँ मैं उन चरनन आधार ॥ ६ ॥
चाहूँ नहिं दूसर से उपकार ।
गुरू की बाँधी टेक सम्हार ॥ ७ ॥
गुरू पर डारूँ तन मन वार ।
बचन पर उनके रहूँ हुशियार ॥ ८ ॥
कर्म सब दीन्हे गुरु ने जार ।
उतारा नौका दे भौ पार ॥ ९ ॥
सुरत को शब्द सुनाई धार ।
गगन चढ़ पहुँची घर करतार ॥ १० ॥
पिंड को छोड़ा चढ़ी सुनार ।
हुई अति निरमल छुटा गुबार ॥ ११ ॥
नाम की सुनी जाय धधकार ।
बाँसरी सुनी नई झनकार ॥ १२ ॥
सुरत और निरत लगाया तार ।
गई अब चौथे पद के पार ॥ १३ ॥
मिला राधास्वामी का दीदार ।
करूँ अब निस दिन उन दरबार ॥१४॥

## ॥ शब्द पाँचवाँ ॥

आरत सतगुरु की अब करहूँ ।
छिन छिन सुरत शब्द में धरहूँ ॥ १ ॥
आरत सामाँ सजूँ बनाई ।
थाल सुचेती[*] कर में लाई ॥ २ ॥
जोत सुजानी लीन जगाई ।
रूप सुदर्शन घट में पाई ॥ ३ ॥
सतसंगी सब मीत सुमीता ।
घट परताप बढ़ा मन जीता ॥ ४ ॥
भक्ति भाव सँग भोग लगाऊँ ।
अमी सिंध जल अमृत लाऊँ ॥ ५ ॥
बैठ सिँघासन सतगुरु गाजे ।
जोत निरंजन दोनों लाजे ॥ ६ ॥
अब आरत सनमुख में फेरी ।
कृपा दृष्टि से सतगुरु हेरी ॥ ७ ॥
कहाँ लग महिमा उनकी गाऊँ ।
बार बार चरनन बल जाऊँ ॥ ८ ॥
मैं अति दीन हीन आधीनी ।
वे दयाल किरपाल क़दीमी[†] ९ ॥

* हुशियारी। † प्राचीन।

सुरत शब्द मारग लिया पूरा ।
घट में बजने लगा तँबूरा ॥ १० ॥
नौबत छिन छिन झड़ने लागी ।
सुरत निरत चढ़ चढ़ अब जागी ॥११॥
घाट त्रिबेनी किये अस्नाना ।
सुन्न मँडल चित जाय समाना ॥१२॥
आरत सब बिधि पूरी धारी ।
राधास्वामी किरपा कीन्ही भारी ॥१३॥

॥ शब्द छठवाँ ॥

गुरू की आरत ठानूँगी* ।
गुरू की सरन सम्हारूँगी ॥ १ ॥
गुरू की महिमा गाऊँगी ।
गुरू के चरन पखारूँगी ॥ २ ॥
गुरू पर मनुआ वारूँगी† ।
गुरू सँग सदही‡ धारूँगी ॥ ३ ॥
काल को छिन छिन टारूँगी ।
कर्म को तुरत पछाड़ूँगी ॥ ४ ॥
ध्यान गुरू हिरदे लाऊँगी ।
रूप रस छिन छिन पाऊँगी ॥ ५ ॥

* निश्चय करके करूँगी। † अर्पण करूँगी। ‡ हमेशा।

बचन सुन नित्त कमाऊँगी ।
सुरत फिर गगन चढ़ाऊँगी ॥ ६ ॥
सुन्न चढ़ शब्द जगाऊँगी ।
नाद दस द्वार बजाऊँगी ॥ ७ ॥
सत्त पद जाय समाऊँगी ।
उलट फिर जग में आऊँगी ॥ ८ ॥
कुटंब को अपने लाऊँगी ।
गुरू के चरन लगाऊँगी ॥ ९ ॥
प्रीत की रीत सिखाऊँगी ।
आरती बहुत कराऊँगी ॥ १० ॥
पित्र पुरखा तराऊँगी ।
गया की धूर उड़ाऊँगी ॥ ११ ॥
भर्म सब ही मिटाऊँगी ।
भटक सब ही छुड़ाऊँगी ॥ १२ ॥
बुद्धि निरमल कराऊँगी ।
संत मत अब दृढ़ाऊँगी ॥ १३ ॥
सुरत नैनन जमाऊँगी ।
सहसदल कँवल आऊँगी ॥ १४ ॥

जोत दर्शन दिखाऊँगी ।
शब्द में जा समाऊँगी ॥ १५ ॥
बंक द्वारा खुलाऊँगी ।
तिरकुटी जा बिठाऊँगी ॥ १६ ॥
मानसर चढ़ अन्हाऊँगी ।
सारँगी धुन सुनाऊँगी ॥ १७ ॥
महासुन पार पाऊँगी ।
गुफा धुन सर* लगाऊँगी ॥ १८ ॥
सोहं बंसी सुनाऊँगी ।
गैब† धुन भेद गाऊँगी ॥ १९ ॥
सत्त की राह धाऊँगी ।
नाम पद फिर जगाऊँगी ॥ २० ॥
दूर दुरबीन लगाऊँगी ।
अलख को जा लखाऊँगी ॥ २१ ॥
अगम गढ़ चढ़ दिखाऊँगी ।
भेद वहाँ का छिपाऊँगी ॥ २२ ॥
आरती अब सजाऊँगी ।
प्रेम अपना बढ़ाऊँगी ॥ २३ ॥

* तीर । † गुप्त ।

सुरत जोती चिताऊँगी ।
थाल भक्ती धराऊँगी ॥ २४ ॥
आरती राधास्वामी गाऊँगी ।
परम पद आज पाऊँगी ॥ २५ ॥

॥ शब्द सातवाँ ॥

गुरु आरत बिधि दीन बताई ।
मोह नींद से लिया जगाई ॥ १ ॥
शब्द अनाहद पता जनाई ।
सुरत इधर से उधर लगाई ॥ २ ॥
दृष्टि खुली और छबि दिखलाई ।
मगन होयकर निज घर आई ॥ ३ ॥
मानसरोवर थाल बनाया ।
जोत चंद्रमा दीप धराया ॥ ४ ॥
लगन लाग से आरत साजी ।
नाद अनाहद घट में बाजी ॥ ५ ॥
मन बैरी से जीती बाज़ी ।
सुमत समाई दुरमत भाजी* ॥ ६ ॥
गुरु चरनन पर मैं बलि जाऊँ ।
उनकी दया से सत पद पाऊँ ॥ ७ ॥

* भागी

डोर लगी और चढ़ी गगन को ।
उमँगा मन राधास्वामी कहन को ॥८॥

॥ शब्द आठवाँ ॥

गुरु चरनन पर जाउँ बलिहार ।
जिन घट जोत दिखाई सार ॥ १ ॥
गया तिमिर आया परकाश ।
गुरु सँग करता परम बिलास ॥ २ ॥
गुरु बिन और न जानूँ कोई ।
कर्म भर्म दुबिधा सब खोई ॥ ३ ॥
ऐसे गुरु के चरन निहारूँ ।
तन मन धन सबही तज डारूँ ॥ ४ ॥
क्या गुरु महिमा करूँ बनाई ।
रात दिवस रहुँ सुरत लगाई ॥ ५ ॥
गुरु शोभा भूषण नित गढ़ता ।
सुरत हथौड़ी मन अहरन* धरता ॥६॥
चित्त कुठाली† मोह गलाता ।
बिरह अगिन सुख नाल फुँकाता ॥७॥

* जिस पर गहना वगैरह हथौड़ी से गढ़ा जाता है। † चाँदी सोना गलाने का बर्तन, घरिया।

प्रेम जंतरी तार खिँचाता ।
सुरत निरत के पेच दिलाता ॥ ८ ॥
गढ़ तोड़ा* गल हार पिन्हाता ।
गुरु छबि देख मगन होय जाता ॥ ९ ॥
बाजूबंद* प्रीत गढ़वाता ।
मन परतीत कड़े* पहिनाता ॥ १० ॥
नाम रतन हीरा जड़वाता ।
अङ्ग अँगूठी* गुरु पहिनाता ॥ ११ ॥
राधास्वामी दीनदयाल ।
करूँ आरती चित्त सम्हाल ॥ १२ ॥

॥ शब्द नवाँ ॥

गुइयाँ री गुरु समझ सुनावैं ।
प्रेम भरी सखियाँ मिल गावैं ॥ १ ॥
अगम देश का पता जनावैं ।
सुरत शब्द मारग दरसावैं ॥ २ ॥
जिनके बिरह प्रेम अनुरागा ।
सो सुन सुन कर लगन बढ़ावैं ॥ ३ ॥
सतगुरु प्यार नाम रस पीवैं ।
अधर जाय निज भाग जगावैं ॥ ४ ॥

* नाम गहने का ।

कौन कहे महिमा अब उनकी ।
जिनको सतगुरु चरन लगावैं ॥ ५ ॥
घट का भेद अनाहद बानी ।
सुन्न मँडल का शब्द सुनावैं ॥ ६ ॥
जोगी जती नाथ सब थाके ।
सो पद अपने दास लखावैं ॥ ७ ॥
सतनाम सतधाम पिया का ।
सुरत निरत कर ले दरसावैं ॥ ८ ॥
अलख अगम का फोड़ निशाना ।
अकह अनामी सैन* जनावैं ॥ ९ ॥
यह अभेद गत कोइ न जाने ।
बिरले संत कोइ मर्म पिछानैं ॥ १० ॥
सो पद मिला सहज में हम को ।
किस आगे हम कहाँ बखानैं ॥ ११ ॥
अब आरत यह करी समापत ।
राधास्वामी सदा धियावैं ॥ १२ ॥

॥ शब्द दसवाँ ॥

प्रेमी सुनो प्रेम की बात ॥ टेक ॥

* इशारा ।

सेवा करो प्रेम से गुरु की ।
　　और दर्शन पर बल बल जात ॥१॥
बचन पियारे गुरु के ऐसे ।
　　जस माता सुत तोतरि बात ॥ २ ॥
जस कामी को कामिन प्यारी ।
　　अस गुरुमुख को गुरु का गात* ॥३॥
खाते पीते चलते फिरते ।
　　सोवत जागत बिसर न जात ॥४॥
खटकत† रहे भाल ज्यों हियरे ।
　　दर्दी के ज्यों दर्द समात ॥ ५ ॥
ऐसी लगन गुरू सँग जाकी ।
　　वह गुरुमुख परमारथ पात ॥ ६ ॥
जब लग गुरु प्यारे नहिँ ऐसे ।
　　तब लग हिरसी जानो जात ॥ ७ ॥
मनमुख फिरे किसी का नाहीँ ।
　　कहो क्योंकर परमारथ पात ॥ ८ ॥
राधास्वामी कहत सुनाई ।
　　अब सतगुरु का पकड़ो हाथ ॥ ९ ॥

* शरीर । † चुभता ।

॥ शब्द ग्यारहवाँ ॥

गुरु मेरे जान पिरान, शब्दका दीन्हा दाना ।
शब्दमेरा आधार, शब्दका मर्म पिछाना ॥१॥
क्या गुन गाऊँ शब्द, शब्दका अगम ठिकाना ।
बिनाशब्द सबजीव, धुँधमें फिरें भरमाना ॥२॥
जल पषान पूजत रहें, रहें कागज़अटकाना ।
मन मत ठोकर खाय, गये चौरासी खाना ॥३॥
बहु बिधि बिपता जीवको, बिनशब्दसुनाना ।
सतगुरुकी सेवा बिना, नहिँ लगे ठिकाना ॥४॥
शब्द भेद बिन सतगुरु, क्या कहैं अजाना ।
मन इन्द्री बस में नहीं, तो काल चबाना ॥५॥
राधास्वामी सरन ले, सब भाँति बचाना ।
मेहर दया छिन में करें, दें अगम ख़ज़ाना ॥६॥

॥ शब्द बारहवाँ ॥

गुरु चरन बसे अब मन में ।
मैं सेऊँ दम दम तन में ॥ १ ॥
फिर प्रीत लगी घट धुन में ।
चढ़ पहुँची पहिली सुन में ॥ २ ॥

अब सोल छिमा मन छाई।
गइ तपन काम दुखदाई ॥ ३ ॥
फिर क्रोध लोभ भी भागे।
अहंकार मोह सब त्यागे ॥ ४ ॥
धुन पाँच शब्द घट जागी।
मन हुआ सहज बैरागी ॥ ५ ॥
गुरु किरपा सूर उगाना।
अब हुआ जक्त बेगाना ॥ ६ ॥
घट बैठी तारी लाई।
बाहर की किरिया दूर बहाई ॥ ७ ॥
गुरु अद्भुत सुख दिखलाया।
क्या महिमा जाय न गाया ॥ ८ ॥
जग जीव अभागी सारे।
नर देही यौंही हारे ॥ ९ ॥
क्यौं गुरु से प्रीत न करते।
क्यौं जम के किंकर रहते ॥ १० ॥
मैं किस से कहूँ सुनाई।
फिर अपना मन समझाई ॥ ११ ॥

तू गुरुमत दृढ़ कर भाई ।
अब छोड़ो तात* पराई ॥ १२ ॥
चल रह तू त्रिकुटी घाटी ।
चढ़ सुन्न शिखर की बाटी† ॥ १३ ॥
महासुन्न की तोड़ो टाटी‡ ।
जा भँवरगुफा की हाटी§ ॥ १४ ॥
फिर सत्तपुरुष घर पाया ।
धुन बीना जाय बजाया ॥ १५ ॥
सुनी अलख अगम की बतियाँ** ।
शशि सूर खरब जहाँ थकियाँ†† ॥ १६ ॥
पिया परसे राधास्वामी ।
कुछ कहूँ न पुरुष अनामी ॥ १७ ॥
मेरी आरत सब से न्यारी ।
कोई समझेगी पिया प्यारी ॥ १८ ॥
यह भेद अथाह बखाना ।
बिन संत न कोई जाना ॥ १९ ॥
करमी जिव जग के अन्धे ।
सब फँसे काल के फन्दे ॥ २० ॥

* चिन्ता । † रास्ता । ‡ परदा । § बाज़ार । ** आवाज़ । †† लज्जित ।

उनसे नहिं कहना चहिये ।
मत गूढ़ छिपाये रहिये ॥ २१ ॥
सुन शब्द कमाई करना ।
सुमिरन में तन मन देना ॥ २२ ॥
गुरु दर्शन बहुत निरखना ।
धुन अनहद नित्त परखना ॥ २३ ॥
सतसँग की चाहत रखना ।
जब डौल* बने तब करना ॥ २४ ॥
उपदेश किया यह टीका ।
राधास्वामी नाम में सीखा ॥ २५ ॥

॥ शब्द तेरहवाँ ॥

सतगुरु सरन गहो मेरे प्यारे ।
कर्म जगात† चुकाय ॥ १ ॥
भूल भरम में सब जग पचता ।
अचरज बात न काहु सुहाय ॥ २ ॥
भागहीन सब जग माया बस ।
यह निरमल गति कोइ न पाय ॥ ३ ॥
जिन पर दया आदि करता की ।
सो यह अमृत पीवन चाहि ॥ ४ ॥

* मौका, सावकाश । † महसूल, कर ।

कहाँ लग महिमा कहुँ इस गति की ।
बिरले गुरुमुख चीन्हत ताहि ॥ ५ ॥
बिन गुरु चरन और नहिं भावे ।
इस आनँद में रहे समाय ॥ ६ ॥
दर्शन करत पिंड सुध भूली ।
फिर घर बाहर सुधि क्या आय ॥ ७ ॥
ऐसी सुरत प्रेम रंग भीनी ।
तिनकी गति क्या कहूँ सुनाय ॥ ८ ॥
जोग बैराग ज्ञान सब रूखे ।
यह रस उन में दीखे न ताय ॥ ९ ॥
बड़भागी कोइ बिरला प्रेमी ।
तिन यह न्यामत* मिली अधिकाय ॥ १० ॥
राधास्वामी कहत सुनाई ।
यह आरत कोइ गुरुमुख गाय ॥ ११ ॥

॥ शब्द चौदहवाँ ॥

गुरु सरन आज मैं पाई ।
मेरे आनँद अधिक बधाई ॥ १ ॥
गुरु कृपासिंध मैं पाये ।
मेरे घर दर बजत बधाये ॥ २ ॥

* उत्तम पदार्थ ।

गुरु परम पुरुष सुखदाता ।
उन चरन मोर मन राता ॥ ३ ॥
गुरु भक्ति करूँ दिन राती ।
मन चित से अति गुन गाती ॥ ४ ॥
गुरु दर्शन सुरत लगाऊँ ।
मन अन्तर प्रेम बढ़ाऊँ ॥ ५ ॥
गुरु मूरत नैनन ताकूँ ।
शशि भान कोटि छबि झाँकूँ ॥ ६ ॥
गुरु सम अब कोइ न दिखाई ।
मैं फेरूँ यही दुहाई ॥ ७ ॥
गुरु चरन पकड़ मेरे भाई ।
क्यों भरमे नर तन पाई ॥ ८ ॥
अब जन्म सुफल कर अपना ।
गुरु प्रेम करो जग सुपना ॥ ९ ॥
जग रैन अँधेरी भारी ।
गुरु मूरत चंद्र उगा री ॥ १० ॥
सीतलता हिरदे आई ।
गुरु बचन चाँदनी छाई ॥ ११ ॥

गुरु से कोइ बड़ा न मेरे ।
सब पड़े काल के घेरे ॥ १२ ॥
गुरुमुख कोइ सतगुरु हेरे* ।
मनमुख सब काल के चेरे ॥ १३ ॥
गुरु महिमा मुख से कहते ।
अन्तर में प्रीत न धरते ॥ १४ ॥
भरमों में भटके फिरते ।
गुरुपद में चित्त न धरते ॥ १५ ॥
वह जीव अभागी जानूँ ।
मैं गुरु बिन और न मानूँ ॥ १६ ॥
अब आरत गुरु की करता ।
राधास्वामी चरन पकड़ता ॥ १७ ॥

॥ शब्द पन्द्रहवाँ ॥

गुरु चरन धूर कर अंजन ।
हिये नैन खुलैं मन मंजन ॥ १ ॥
घट तिमिर† अनादी नाशन ।
गुरु रूप भान परकाशन ॥ २ ॥
मेरे हिरदे प्रेम बढ़ावन ।
पल पल में उमँग समावन ॥ ३ ॥

* खोजे । † अन्धेरा ।

सुत चढ़े गगन गुरु पावन[*] ।
सतगुरु पद शब्द सुनावन ॥ ४ ॥
सो सतगुरु जग माहिँ बिराजन ।
जग जीव अचेत चितावन ॥ ५ ॥
क्या महिमा सतगुरु गावन ।
जिव अधम नीच किये पावन[†] ॥ ६ ॥
मन माया ज़ोर चलावन ।
ठोकर दे दूर करावन ॥ ७ ॥
दासन का दास दसावन[‡] ।
सेवा पर तन मन वारन ॥ ८ ॥
मैं किंकर कुटिल अपावन[§] ।
गुरु गोद लिया और किया अपनावन ९
यह मानुष जन्म जितावन ।
गुरु रूप लखा मन भावन ॥ १० ॥
यह आरत दोना[**] गावन ।
राधास्वामी किया बखानन ॥ ११ ॥

* पावे । † पवित्र । ‡ कहलाया ( बोली पन्जाबी ) । § अपवित्र । ** जिसकी आरती है उसका नाम ।

॥ शब्द सोलहवाँ ॥

मैं कौन कुमति उरझाना* ।
गुरु दरस छोड़ घर जाना ॥ १ ॥
अब कौन जतन अस करिये ।
गुरु चरन चित्त मैं धरिये ॥ २ ॥
यह बचन कहाँ मैं पाऊँ ।
मन खेती बीज जमाऊँ ॥ ३ ॥
निस दिन रहे चित्त उदासी ।
क्यों छोड़ूँ चरन बिलासी ॥ ४ ॥
नर देह न बारम्बारी ।
क्यों भौजल डूबे आ री ॥ ५ ॥
सतगुरु सँग कभी न छोड़ूँ ।
मन तन से नाता तोड़ूँ ॥ ६ ॥
गुरु बल से करम निकारूँ ।
सतसँग से काल पछाड़ूँ ॥ ७ ॥
जो मेहर करें गुरु मुझ पर ।
यह बात बने अति दुस्तर† ॥ ८ ॥
मेरे मन मैं चाहत येही ।
गुरु चरन न छोड़ूँ कबही ॥ ९ ॥

* फँसा। † कठिन।

गुरु से कोइ अधिक न राखा ।
पुनि संत बेद अस भाषा ॥ १० ॥
गुरु महिमा सबहिन गाई ।
मैं दीन अधीन जनाई ॥ ११ ॥
मेरी लाग लगी गुरु चरनन ।
नख सोभा क्या करूँ बरनन ॥ १२ ॥
कोटिन रबि चन्द्र लजाई ।
उस नख की गति नहिं पाई ॥ १३ ॥
यह तिमिर बाहरी खोवैं ।
वह अन्तर मोती पोवैं ॥ १४ ॥
हिरदे में सदा उजारी ।
गुरु नख पर जाउँ बलिहारी ॥ १५ ॥
अब आरत उनकी करता ।
मन चरन कँवल में धरता ॥ १६ ॥
सुत फेरो सतगुरु मेरी ।
घर जाउँ करूँ फिर फेरी* ॥ १७ ॥
राधास्वामी काटो बेड़ी ।
यह बिनती सुनिये मेरी ॥ १८ ॥

* लौट कर आऊँ ।

मैं दासन दास तुम्हारा ।
तुम बचन मोर निस्तारा ॥ १९ ॥

॥ शब्द सत्रहवाँ ॥

काल ने जक्त अजब भरमाया।
मैं क्या कथा करूँ बखान ॥ १ ॥
जो साधन थे पिछले जुग के ।
सो कलजुग में किये प्रमान ॥ २ ॥
मूरख प्रानी मन सैलानी ।
सो अटके जल और पषान ॥ ३ ॥
बुद्धिमान अभिमानी जो नर ।
बिद्या नार के हुए गुलाम ॥ ४ ॥
बाक़ी जीव बीच के जितने ।
ना मूरख ना अति बुधिमान ॥ ५ ॥
जप तप ब्रत संजम बहु धोखे ।
पंच अग्नि में जले निदान ॥ ६ ॥
देखो चरित्र काल करता के ।
कोई सिर कोई पैर रूँधान* ॥ ७ ॥
भटक भटक भटकाया सब जग ।
कोइ न लगाया ठौर ठिकान ॥ ८ ॥

* खूँदा ।

ऐसी हालत देख जगत की ।
संत सतगुरू प्रगटे आन ॥ ९ ॥
गुरु सेवा और नाम महातम ।
सतसँग सतगुरु किया बखान ॥१०॥
साधन तीन सार उन बरने ।
और साधन सब थोथे मान ॥ ११ ॥
बेद शास्त्र और स्मृत पुराना ।
पढ़ना इनका बिरथा जान ॥ १२ ॥
पंडित भेष पेट के मारे ।
वे संतन पर करते तान ॥ १३ ॥
हित कर संत उन्हें समझावें ।
वे मानी नहिँ मानैं आन ॥ १४ ॥
उनके चाह मान और धन की ।
परमारथ से ख़ाली जान ॥ १५ ॥
वे चौरासी चक्कर मारैं ।
फिर फिर गिरते चारों खान ॥१६॥
पिछले जुग की बिद्या पढ़ते ।
कोई न्याय बेदान्त बखान ॥ १७ ॥

ना साधन अधिकार न परखैं ।
पढ़ने का करते अभिमान ॥ १८ ॥
इस जुग की बिद्या नहिँ पढ़ते ।
ताते उलटे गिरे निदान ॥ १९ ॥
दीन ग़रीबी मत इस जुग का ।
और गुरुभक्ती कर परमान ॥ २० ॥
ताते निरमल निश्चल चित होय ।
गगन चढ़ाओ शब्द निशान ॥२१ ॥
सुरत शब्द मारग अन्तरमुख ।
पाँच शब्द का गहो ठिकान ॥२२॥
शब्द शब्द पौड़ी* पै चढ़ कर ।
पहुँचो सचखंड सतनाम ॥ २३ ॥
ताते पहिले गुरु को ध्याओ ।
और काम सब पीछे जान ॥ २४ ॥
गुरु की मूरत हृदे बसाओ ।
चंद्र चकोर प्रीत घट आन ॥ २५ ॥
जब लग ऐसी प्रीत न होवे ।
तब लग साधन यही बखान ॥२६॥

* सीढ़ी, मंज़िल ।

गुरु भक्ती जब पूरन हो ले ।
तब सुत चढ़े अधर असमान ॥२७॥
गुरु भक्ती बिन शब्द में पचते ।
सो भी मानुष मूरख जान॥ २८ ॥
शब्द खुलेगा गुरू मेहर से ।
खैंचें सुरत गुरू बलवान ॥ २९ ॥
गुरुमुखता बिन सुरत न चढ़ती ।
फूटे गगन न पावे नाम ॥ ३० ॥
गुरुमुखता है मूल सबन की ।
और साधन सब शाखा जान॥३१॥
माता को जस पुत्र पियारा ।
और कामी को कामिन जान ॥३२॥
मछली को जस नीर अधारा ।
चात्रिक* को जस स्वाँति समान॥३३॥
ऐसा गुरु प्यारा जब होगा ।
तब कुछ आगे पंथ चलान ॥ ३४ ॥
कहना था सो सब कह दीन्हा ।
अब तू चाहे मान न मान॥ ३५ ॥

* पपीहा ।

यह आरत गुरुमुख की गाई ।
　गुरुमुख होय सो करे प्रमान ॥३६॥
राधास्वामी भक्ति बताई ।
　गुरु की भक्ति करो यह जान ॥३७॥
और भक्ति सब दूर बहाओ ।
　क्यों पड़ते चौरासी खान ॥ ३८ ॥
गुरु भक्ती सम और न कोई ।
　राधास्वामी किया बखान ॥ ३९ ॥
गुरु का ध्यान करो तुम निस दिन ।
　गुरु का शब्द सुनो नित कान ॥४०॥
नैन श्रवण और हिरदा तीनों ।
　शीश महल सम निरमल जान ॥४१॥
राधास्वामी ज़ोर देय कर ।
　गुरु भक्ती को कहैं प्रमान ॥ ४२ ॥

---

॥ बचन नवाँ ॥

महिमा शब्द स्वरूप सतगुरु की ।

॥ शब्द पहिला ॥

धन्य धन्य धन धन्य पियारे ।
　क्या कहुँ महिमा शब्द की ॥ १ ॥

जो परचे हैं शब्द से।
सो जानें महिमा शब्द की ॥ २॥
छिन छिन रक्षा हो रही।
क्या उपमा कहुँ मैं शब्द की ॥ ३ ॥
बिन शब्द फिरें भरमातियाँ।
नहिं जानी गति मति शब्द की॥४॥
जिन गुरु पाया शब्द का।
और प्रीति करी जिन शब्द की ॥५॥
बड़ भागी वह जीव हैं।
जो करें कमाई शब्द की ॥ ६ ॥
बिना शब्द मन बस नहीं।
तुम सुरत करो अब शब्द की ॥७॥
वह क्यों आये इस जक्त में।
जिन मिली न पूँजी शब्द की ॥ ८ ॥
धुन घट में हर दम हो रही।
क्यों सुने न बानी शब्द की ॥ ९ ॥
तू बैठ अकेला ध्यान धर
तो मिले निशानी शब्द की ॥१०॥

तज आलस निद्रा काहिली ।
तू लगन लगा ले शब्द की ॥११॥
पाँच शब्द घट में बजें ।
यह निरनय करले शब्द की ॥ १२॥
गुरु ज्ञान बताया शब्द का ।
तू होजा ध्यानी शब्द की ॥ १३ ॥
मैं शब्द शब्द बहुतक कहा ।
कोई न माने शब्द की ॥ १४ ॥
जन्म अकारथ खो दिया ।
जो चढ़े न घाटी शब्द की ॥ १५ ॥
राधास्वामी कह कह चुप हुए ।
बिन भाग न धारा शब्द की ॥१६॥

॥ शब्द दूसरा ॥

शब्द ने रची त्रिलोकी सारी ।
शब्द से माया फैली भारी ॥ १ ॥
शब्द ने अंड ब्रह्मण्ड रचा री ।
शब्द से सात दीप नौखंड बना री ॥२॥
शब्द ने गुन तीनों और परजा धारी ।
शब्द से धरनि अकास खड़ा री ॥ ३ ॥

* सुस्ती ।

शब्द ने जीव और ब्रह्म किया री।
शब्द से चाँद और सूर भया री ॥४॥
शब्द ने सुन्न महासुन्न सँवारी।
शब्द ने चौथा लोक करा री ॥५॥
शब्द ही घट घट करे पुकारी।
शब्द फिर अलख अगम से न्यारी ॥६॥
शब्द से ख़ाली कोइ न रहा री।
शब्द सब ठौर ठिकान भरा री ॥७॥
शब्द की महिमा क्या कहुँ गारी।
शब्द को जैसे बने तैसे पारी ॥८॥
गुरू अब कहते हेला* मारी।
शब्द बिन कोइ न करे उपकारी ॥९॥
शब्द में सुरत लगा कर यारी।
शब्द ही चेतन करे उजारी ॥१०॥
शब्द की करनी करो सदा री।
शब्द बिन ख़ुदी† न जाय तुम्हारी ॥११॥
शब्द का शग़ल‡ करो मन मारी।
शब्द से काल कर्म सब हारी ॥१२॥

* पुकार कर। † अहंकार। ‡ अभ्यास।

शब्द में सुरत लगा सुन प्यारी ।
शब्द बिन होय न कभी उबारी ॥ १३ ॥
शब्द तेरे तन में बोल रहा री ।
सुरत से सुन सुन करो बिचारी ॥ १४ ॥
सुरत को गगन शिखर लेजा री ।
धुनों की होत जहाँ झनकारी ॥ १५ ॥
शब्द की बिरह लगे जो कारी* ।
सभी रस लगें तोहि फिर खारी ॥ १६ ॥
शब्द को निजकर कोइ न सुना री ।
भोगते फिरें जन्म मरना री ॥ १७ ॥
शब्द का मारग संत निकारी ।
संत बिन कोई न मर्म लखा री ॥ १८ ॥
शब्द बिन होगी बहुत ख़ुवारी† ।
शब्द ही पकड़ो क्यों झखमारी‡ ॥१९॥
सुरत को बाँध लगा दे तारी ।
भेद यह राधास्वामी खोल कहारी ॥२०॥

॥ शब्द तीसरा ॥

सब की आदि शब्द को जान ।
अन्त सभी का शब्द पिछान ॥ १ ॥

* गहरी । † ख़राबी । ‡ वृथा मेहनत करना ।

तीन लोक और चौथा लोक।
शब्द रचे यह सब ही थोक* ॥ २ ॥
शब्द सुरत होउ धार समान।
पुरुष अनामी के यह प्रान ॥ ३ ॥
चेतनता सब इन की मान ।
शब्द बिना कोइ और न आन ॥ ४ ॥
शब्द गुप्त तब हुआ अनाम ।
शब्द प्रगट तब धरिया नाम ॥ ५ ॥
नाम अनाम शब्द परमान।
शब्द बिना होय सब की हान॥ ६ ॥
जस अग्नी तद रूप पषान।
तस तदरूपी शब्द अनाम ॥ ७ ॥
शब्दहि कारन शब्दहि काज ।
शब्द रचाया सगला साज ॥ ८ ॥
शब्दहि अगम अलख फिर शब्द ।
शब्दहि सत्तनाम सत शब्द ॥ ९ ॥
शब्द निहअक्षर अक्षर शब्द ।
सोहं शब्द ररं भी शब्द ॥ १० ॥

* हिस्सा।

ओअं शब्द निरंजन शब्द ।
ब्रह्म शब्द और माया शब्द ॥ ११ ॥
शब्दहि जीव सीव* भी शब्द ।
शब्द से सुरत सुरत से शब्द ॥ १२ ॥
ओत पोत† यों शब्दहि शब्द ।
ऊँच नीच दोउ शब्दहि शब्द ॥ १३ ॥
शब्दहि सेवक शब्दहि स्वामी ।
शब्दहि घट घट अंतरजामी ॥ १४ ॥
शब्द न मरे अमर भी शब्द ।
शब्द न जरे अजर भी शब्द ॥ १५ ॥
शब्द गुरू और शब्दहि दास ।
शब्द बिना झूठी सब आस ॥ १६ ।
शब्द न बिनसे बिनसे काया ।
शब्द बिना कुछ हाथ न आया ॥ १७ ॥
शब्द कहा सब संतन सार ।
शब्द बिना कैसे निरवार ॥ १८ ॥
शब्द गहीर शब्द गंभीर ।
शब्द बिना पद मिले न थीर ॥ १९ ॥

* ईश्वर जिसकी सेवा करता है। † उलट पलट।

शब्द बिना कोइ होय न धीर ।
शब्द बिना झूँठी तदबीर ॥ २० ॥
शब्द तुड़ावे सब ज़ंजीर ।
शब्द मिटावे तन मन पीर ॥ २१ ॥

शब्दहि मछली शब्दहि नीर ।
शब्द बखानैं सत्त कबीर ॥ २२ ॥
शब्द बतावैं नानक पीर* ।
शब्द लखावे तुलसी धीर ॥ २३ ॥
शब्दहि बस्तर शब्दहि चीर ।
शब्दहि माखन शब्दहि हीर† ॥ २४ ॥
शब्द मिले तू खोज शरीर ।
शब्द बसे नभ त्रिकुटी तीर ॥ २५ ॥
शब्द बिना सब जीव असीर‡ ।
शब्द मिले कोइ मिले फ़क़ीर ॥ २६ ॥
शब्दहि बम§ शब्दही ज़ीर† ।
शब्द बिना सब मथते नीर ॥ २७ ॥
शब्द पकड़ सब तेरी सीर‖ ।
शब्द गहे जो वही अमीर ॥ २८ ॥

* गुरु । † सारांश । ‡ कैदी । § बाँयाँ, टीप । † दाँयाँ, खरज । ‖ ज़मीन जिस पर कर नहीं लगता ।

शब्द शाह और शब्द वज़ीर ।
राधास्वामी कहें समझ मेरे बीर ॥२८॥

॥ शब्द चौथा ॥

गुरु की दया ले शब्द सम्हार ।
गुरु के सँग कर शब्द अधार ॥ १ ॥
शब्द लगावे तुझ को पार ।
बिना शब्द चौरासी धार ॥ २ ॥
शब्द कमाई करनी सार ।
शब्द चढ़ावे दसवें द्वार ॥ ३ ॥
शब्द गुरू सँग करले प्यार ।
और कर्म सब त्यागो झाड़ ॥ ४ ॥
शब्द बिना नहिं खेवन हार ।
शब्दहि करता सबकी सार ॥ ५ ॥
शब्द शब्द का भेद नियार ।
सो गुरु तुझ से कहें सम्हार ॥ ६ ॥
तू तो सुरत जमा नभ द्वार ।
शब्द मिले छूटे जंजार ॥ ७ ॥
शब्द करे अब जग से पार ।
शब्द माहिं तुम रहो हुशियार ॥ ८ ॥

शब्दहि शब्द करो निरवार ।
शब्द बिना कोइ बचे न धार ॥ ९ ॥
शब्द हटावें सब अहंकार ।
शब्द छुड़ावें सभी विकार ॥ १० ॥
शब्द बिना कुछ और न सार ।
मैं तोहि कहूँ पुकार पुकार ॥ ११ ॥
शब्द लगो मत बैठो हार ।
शब्द नाव चढ़ पहुँचो पार ॥ १२ ॥
शब्द किया जिस घट उजियार ।
धन वे जन जिन शब्द अधार ॥ १३ ॥
तू भी सुन चढ़ शब्द पुकार ।
शब्द होय फिर गल का हार ॥ १४ ॥
शब्द पकड़ और सब तज डार ।
बिना शब्द नहिं होत उधार ॥ १५ ॥
शब्द भेद तू जान गँवार ।
क्यों भरमे तू मन की लार ॥ १६ ॥
सुरत खैंच तक तिल का द्वार ।
दहिनी दिशा शब्द की धार ॥ १७ ॥

बाँईं दिशा काल का जार ।
ताहि छोड़ कर सुरत सम्हार ॥ १८ ॥
घंटा संख सुनो कर प्यार ।
तिस के आगे धुन ओंकार ॥ १९ ॥
सुन्न माँहि सुन रारंकार ।
भँवरगुफा मुरली झनकार ॥ २० ॥
सत्तलोक धुन बीन सम्हार ।
अलख अगम धुन कहूँ न पुकार ॥२१॥
राधास्वामी भेद सुनाया झाड़ ।
पकड़ धरो अब हिये मँझार ॥ २२ ॥

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

शब्द बिना सारा जग अंधा ।
काटे कौन मोह का फंदा ॥ १ ॥
शब्द बिना बिरथा सब धंधा* ।
शब्द बिना जिव बंधन बंधा ॥ २ ॥
शब्दहि सूर शब्दही चन्दा ।
शब्द बिना जिव रहता गंदा† ॥ ३ ॥
शब्द बिना सबही मतिमंदा ।
शब्दहि नासिह‡ शब्दहि पंदा§ ॥ ४ ॥

* कारज । † मैला । ‡ उपदेशक । § उपदेश ।

शब्द कमावे मिले अनंदा ।
शब्द बिना सबही की निंदा ॥ ५ ॥
ताते शब्दहि शब्द कमाओ ।
शब्द बिना कोइ और न ध्याओ ॥६॥
शब्द भेद तुम गुरु से पाओ ।
शब्द माहिँ फिर जाय समाओ ॥ ७ ॥
शब्द अधर में करे उजारा ।
शब्द नगर तुम झाँको द्वारा ॥ ८ ॥
शब्द रहे सबही से न्यारा ।
शब्द करे सब जीव गुज़ारा ॥ ९ ॥
शब्द जानियो सब का सारा ।
शब्द मानियो होय उबारा ॥ १० ॥
शब्द कमाई कर हे मीत ।
शब्द प्रताप काल को जीत ॥ ११ ॥
शब्द घाट तू घट में देख ।
शब्दहि शब्द पीव को पेख ॥ १२ ॥
शब्द कर्म की रेख कटावे ।
शब्द शब्द से जाय मिलावे ॥ १३ ॥

* निर्वाह ।

शब्द बिना सब झूठा ज्ञान ।
शब्द बिना सब थोथा ध्यान ॥ १४ ॥
शब्द छोड़ मत अरे अजान ।
राधास्वामी कहँ बखान ॥ १५ ॥

॥ शब्द छठवाँ ॥

शब्द की करो कमाई दम दम ।
शब्द सा और न कोई हमदम* ॥ १ ॥
शब्द को सुनो बंद कर सरवन ।
शब्द को गहो जाय धुन झमझम ॥ २ ॥
शब्द तेरी दूर करे सब हमहम† ।
शब्द को पाय गहो वहाँ समसम ॥ ३ ॥
देखियो जोत उजाला चमचम ।
रहो फिर धुन में छिन छिन रम रम ॥ ४ ॥
भोग सब त्यागे हुआ मन उपसम‡ ।
सुनी अब चढ़ कर धुन जहाँ घमघम ॥ ५ ॥
कहें गुरु रह तू उसमें जम जम ।
बहुर सुन पाई इक धुन बमबम ॥ ६ ॥
सुरत फिर चढ़ी वहाँ से धमधम ।
सुन्न में पहुँची लइ धुन छमछम ॥ ७ ॥

*मित्र । †अहंकार । ‡उपशम ।

और भी सुनो एक धुन खम खम ।
कहूँ क्या महिमा शब्द अगम गम ॥ ८ ॥
कहूँ मैं जितनीही सब कम कम ।
खोल कस कहूँ बात यह सुबहम* ॥ ९ ॥
सुरत को मिली अधर की गम गम ।
पिया सँग बैठी करत परस रस ॥ १० ॥
मिटा सब घट का अबही तम तम ।
बरसने लागीँ झड़ियाँ रिमझिम ॥ ११ ॥
तेज अब फैला घट में दम दम[†] ।
अमीरस चुआ चुए ज्यों शबनम[‡] ॥ १२ ॥
हुआ मन सभी जतन से बरहम[§] ।
सुरत के लागी अब धुन मरहम ॥ १३ ॥
गुरू पर तन मन करूँ समरपन ।
कहैं अस राधास्वामी बचन दमादम[‖] ॥ १४ ॥

॥ शब्द सातवाँ ॥

शब्द सँग बाँध सुरत का ठाट ।
बहे मत जग का चौड़ा फाट ॥ १ ॥
शब्द बिन मिले न घर की बाट ।
शब्द का परखो घट मैं घाट ॥ २ ॥

*गुप्त । † ज्यों ज्यों । ‡ ओस । § नाखुश, बरखिलाफ़ । ‖ बारम्बार ।

शब्द सँग बाँधो ऐसा ठाट ।
बहुर तुम सोवो बिछाये खाट ॥ ३ ॥
गगन चढ़ शब्द अमी रस चाट ।
शब्द बिन और न सूधी बाट ॥ ४ ॥
शब्द सँग भरलो मन का माट* ।
शब्द ही करे करम का काट ॥ ५ ॥
शब्द बिन हो गई बारहबाट† ।
शब्द सँग जग से रही उचाट ॥ ६ ॥
शब्द ही खोले बज्र कपाट ।
शब्द सँग झाँका चौक सपाट‡ ॥ ७ ॥
शब्द की करो सदा तुम छाँट ।
शब्द रस पीवो और दो बाँट ॥ ८ ॥
काल की ठोको फिर तुम टाँट§ ।
शब्द सँग रहे न कोई आँट‖ ॥ ९ ॥
राधास्वामी कहते मार कुटाँट** ।
शब्द ही खोलै घट की साँट†† ॥ १० ॥

* कलसी, घड़ा । † खराब । ‡ बराबर । § सिर । ‖ बिगाड़ । ** पुकार कर । †† गाँठ ।

॥ शब्द आठवाँ ॥

सुरत अब शब्द माहिँ नित भरना ।
करो यह काम और नहिँ करना ॥१॥
गगन मैं देखो कँवल चमकना ।
दृष्टि पर देखो जोत दमकना ॥ २ ॥
सुरत मन वहाँ से अधर उलटना ।
घाट सुखमन का खोल पलटना ॥ ३ ॥
इड़ा तज पिंगला घाटी चढ़ना ।
तान कर सूरत आगे बढ़ना ॥ ४ ॥
पकड़ धुन जाय धुनी से लगना ।
मान मद त्याग भर्म सब तजना ॥ ५ ॥
गुम्मठ* का खेल अजायब तकना ।
ओं धुन पाई सुनी गरजना ॥ ६ ॥
सुन्न मैं पहुँची सरवर तटना† ।
हंस होय निस दिन मोती चुगना॥७॥
सुरत को मिला धाम यह अपना ।
मगन होय बैठी अब नाहिँ हटना॥८॥
अमी रस वहाँ का नितही चखना ।
मौज राधास्वामी यही निरखना ॥९॥

* गुम्बर । † किनारा ।

॥ शब्द नवाँ ॥

धुन सुन कर मन समझाई ॥ टेक ॥
कोट जतन से यह नहिँ माने ।
धुन सुन कर मन समझाई ॥ १ ॥
जोगी जुक्त कमावेँ अपनी ।
ज्ञानी ज्ञान कराई ॥ २ ॥
तपसी तप कर थाक रहे हैँ ।
जती रहे जत लाई ॥ ३ ॥
ध्यानी ध्यान मानसी लावेँ ।
वह भी धक्का खाई ॥ ४ ॥
पंडित पढ़ पढ़ बेद बखानेँ ।
बिद्या बल सब जाई ॥ ५ ॥
बुद्धि चतुरता काम न आवे ।
आलिम* रहे पछताई ॥ ६ ॥
और अमल† का दख़ल नहीँ है ।
अमल शब्द लौ लाई ॥ ७ ॥
गुरू मिले जब धुन का भेदी ।
शिष्य बिरह घर आई ॥ ८ ॥

* विद्यावान । † अभ्यास ।

सुरत शब्द की होय कसाई ।
तब मन कुछ ठहराई ॥ ९ ॥
हिर्स* हवस से हाथ न आवे ।
तन मन देव चढ़ाई ॥ १० ॥
बुलहवसी† और कपटी जन को ।
नेक न धुन पतियाई ॥ ११ ॥
यह धुन है धुर लोक अधर की ।
कोइ पकड़ें संत सिपाही ॥ १२ ॥
मन को मार करें असवारी ।
गगन कोट वह लेयँ घिराई ॥ १३ ॥
खाई सुन्न पार मैदाना ।
महासुन्न नाका परमाना‡ ॥ १४ ॥
भँवरगुफा का फाटक तोड़ा ।
शीश महल सतगुरु दिखलाई ॥ १५ ॥
अद्भुत लीला अजब वहाँ की ।
किरन किरन सूरज दरसाई ॥१६॥
सूरज सूरज जोत निरारी ।
चंद्र चंद्र कोटिन छबि छाई ॥ १७ ॥

* जो देखा देखी ख़ाहिश पैदा हो । † हिर्सी । ‡ हद्द ।

घट अकाश औघट* परकाशा ।
लख अकाश कोटिन परसाई ॥१८॥
यह लीला कुछ अजब पेच की ।
उलट पलट कोइ गुरुमुख पाई ॥१९॥
कहाँ लग बरनूँ भेद अगाधा ।
जो कोइ लावे सुन्न समाधा ॥२०॥
समझ बूझ गूँगे गुड़ खाई ।
अकथ अकह की बात निराली ।
क्योंकर कहूँ बनाई ॥ २१ ॥
राधास्वामी राज़† छिपे को ।
परघट कर सरसाई‡ ॥ २२ ॥

॥ शब्द दसवाँ ॥

अनहद बाजे बजे गगन में ।
सुन सुन मगन होत अब मन में ॥१॥
गुरू सुनावें यह धुन तन में ।
सुरत लगा तू भी अब घन में ॥ २ ॥
मार सिंह को चढ़ी इस बन में ।
शब्द मिला अब जुगन जुगन में ॥ ३॥

* उलटा । † भेद । ‡ दिखाया ।

सुरत लगाई उसी लगन में ।
धुन जागी अब रगन रगन में ॥ ४ ॥
सुन सुन शब्द गई सुन धुन में ।
दूर किये सब भूत और जिन में ॥ ५ ॥
सुरत न आवे अब कभी इन में ।
शब्द मिला गुरु दिया अपन में ॥ ६ ॥
शब्द प्रताप मिटाई तपन में ।
जाग उठी जग देख सुपन में ॥ ७ ॥
शब्द सुनूँ नित इसी भवन* में ।
छिन छिन पकड़ूँ यही जतन में ॥ ८ ॥
अन्तर पाऊँ शब्द रतन में ।
शब्द शब्द सँग करूँ गवन† में ॥ ९ ॥
शब्द गहूँ अब मार मदन‡ में ।
राधास्वामी कहैं पुकार सबन में १०॥

*घर अथवा घट। †चलना। ‡ काम।
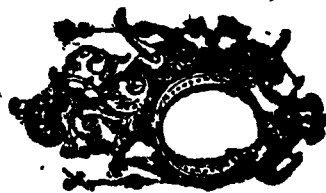
## ॥ बचन दसवाँ ॥

## निर्णय शब्द अथवा नाम का

### ॥ शब्द पहिला ॥

### ॥ रेख़ता ॥

नाम निर्णय कहूँ भाई ।
दुधा बिधि भेद बतलाई ॥ १ ॥
बर्ण धुनआत्मक गाऊँ ।
दोऊ का भेद दरसाऊँ ॥ २ ॥
बर्ण कहु चाहे कहु अक्षर ।
जो बोला जाय रसना कर ॥ ३ ॥
लिखन और पढ़न में आया ।
उसे बर्णात्मक गाया ॥ ४ ॥
लखायक है यही धुन का ।
बिना गुरु फल नहीं किनका* ॥ ५ ॥
मिलें गुरु नाम धुन भेदी ।
सुरत धुन धुनी सँग बेधी† ॥ ६ ॥
एकता नाम और नामी ।
करावें जो मिलें स्वामी ॥ ७ ॥

* बहुत कम । † प्रवेश करना ।

नाम बर्णात्मक गाया ।
नामी धुनआत्मक पाया ॥ ८ ॥
बर्ण से सुरत मन माँजो ।
बहुर चढ़ गगन धुन साधो ॥ ९ ॥
धुनी धुन एक कर जानो ।
सुरत से शब्द पहिचानो ॥ १० ॥
शब्द और सुरत भये एका ।
नाम धुनआत्मक देखा ॥ ११ ॥
गुरू बिन और बिना करनी ।
मिले कस कहो यह रहनी ॥ १२ ॥
चाह अनुराग जिस होई ।
भाग बड़ गुरुमुखी सोई ॥ १३ ॥
नाम नामी दोउ गाया ।
अभेदी भेद समझाया ॥ १४ ॥
गुरू की मौज में सब कुछ ।
जिसे चाहैं करैं गुरुमुख ॥ १५ ॥
गुरू मुख होय तन धन से ।
करे फिर प्रीत निज मन से ॥ १६ ॥

लगे तब जाय सुन धुन से ।
गये तब तीन गुन तन से ॥ १७ ॥
बर्ण धुन भेद दोउ बरना ।
वाच्य* और लक्ष† इन कहना ॥ १८ ॥
वाच्य बर्णात्मक जानो ।
लक्ष धुन धुनी पहिचानो ॥ १९ ॥
बर्ण में भेष जग भूला ॥
मर्म धुन संत कोइ तोला ॥ २० ॥
बर्ण जप जप पचैं भेषी ।
मिले कुछ फल नहीं नेकी‡ ॥ २१ ॥
भेद धुन का नहीं पाया ।
नाम फल हाथ नहिँ आया ॥ २२ ॥
जपैं नित सहस और लाखा ।
खुले नहिँ नेक उन आँखा ॥ २३ ॥
तिमिर संसार नहिँ जावे ।
मोह मद काम भरमावे ॥ २४ ॥
धुनी धुन भेद नहिँ चीन्हा ।
सुरत और शब्द नहिँ लीन्हा ॥ २५ ॥

* प्रगट । † गुप्त । ‡ ज़रा ।

मिला नहिँ गुरू धुन भेदी ।
लखावे धुन मिटे खेदी* ॥ २६ ॥
काल ने बुद्धि उन छेदी ।
मुफ़्त नर देह उन देदी ॥ २७ ॥
दया कर संत गोहरावें ।
ज़रा नहिँ चित्त म लावें ॥ २८ ॥
पाँच धुन भेद बतलावें ।
सुरत की राह दिखलावें ॥ २९ ॥
धुनों के नाम दरसावें ।
रूप अस्थान कह गावें ॥ ३० ॥
सुरत का जोग लखवावें ।
जीव नहिँ कहन उन मानें ॥ ३१ ॥
सुरत ले गगन चढ़वावें ।
पिंड में सार बतलावें ॥ ३२ ॥
चढ़े ब्रह्मण्ड तब परखे ।
सहसदल मध्य कुछ निरखे ॥ ३३ ॥
बंक चढ़ तिरकुटी धावे ।
सुन्न दसद्वार गति पावे ॥ ३४ ॥

* दुःख।

महासुन जाय हरखानी ।
भँवर में जा सुनी बानी ॥ ३५ ॥
अमर पद मूल जा देखा ।
बीन धुन का मिला लेखा ॥ ३६ ॥
अलख और अगम भी पेखा ।
नाम का मूल अब देखा ॥ ३७ ॥
कहूँ क्या खेल राधास्वामी ।
सैन यह समझ परमानी ॥ ३८ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

नाम रस चखा गुरू सँग सार ।
काम रस छोड़ा देख असार ॥ १ ॥
नाम रँग रँगी सुरत मन मार ।
क्रोध को जारा छिमा सम्हार ॥ २ ॥
नाम का मिला आज भंडार ।
लोभ को टाला जान कँगार* ॥ ३ ॥
नाम गति पाई चढ़ आकाश ।
मोह तम गया देख परकाश ॥ ४ ॥
नाम धन पाया गगन निहार ।
मगन होय बैठी तज अहंकार ॥ ५ ॥

* निरधन ।

नाम धुन सुनी सुन्न दसद्वार ।
नाम पद मिला महासुन पार ॥ ६ ॥
सुरत लिया भँवरगुफा आधार ।
सोहँ और बंसी सुनी पुकार ॥ ७ ॥
पद चौथे चली नाम की लार ।
अलख में गई नाम की धार ॥ ८ ॥
अगम में पहुँची नाम सम्हार ।
मिला राधास्वामी नाम अगार* ॥ ९ ॥
करो अब सतसँग जग को जार ।
होय घट भीतर नाम उजार ॥ १० ॥
मान मद बैठे दोनों हार ।
नाम पद हुई सुरत गल हार ॥ ११ ॥
भेद यह गावें संत पुकार ।
भेष नहिं मानें बड़े गँवार ॥ १२ ॥
रहे पंडित और जोगी वार ।
ज्ञान कर ज्ञानी मानी हार ॥ १३ ॥
संत कोइ पहुँचे अगम निहार ।
तोड़िया जिन जिन तिल का द्वार ॥ १४ ॥

* सब के आगे ।

नाम पद बरने देख बिचार।
रहा नहिं धोखा खोला झाड़*॥ १५॥
नाम का परदा दिया उघाड़।
कहूँ मैं तुम से कर अति प्यार॥१६॥
मिलैं कोइ सतगुरु परम उदार।
करो यह करनी तुम निरवार॥ १७॥
पाओ तब नाम कुल्ल करतार।
बाँध कर चढ़ो सुरत का तार॥ १८॥
मीन मति† चढ़ गइ उलटी धार।
मकर‡ गति पकड़ा अपना तार॥१९॥
काल अब थका पुकार पुकार।
शरम कर बैठी माया नार॥ २०॥
सुरत अब पाया निज घरबार।
मिले राधास्वामी पुरुष अपार॥२१॥

॥ बचन ग्यारहवाँ॥

सतसंग महिमा और भेद सत्तनाम का

॥ शब्द पहिला॥

कहाँ लग कहूँ कुटिलता मन की।
कान न माने गुरु के बचन की॥१॥

* कुल। † समान, मानिन्द। ‡ मकड़ी।

प्रेम गया और भक्ति छिपानी।
बैर ईर्षा की खुली खानी ॥ २ ॥
माया लाई छलबल अपना।
काल दिया कलमल का ढकना ॥३॥
ज्ञान बुद्धि बल सतसँग भाई।
छिमा मौज गुरु गई हिराई* ॥ ४ ॥
देखो अचरज कहा न जाई।
कलजुग का परभाव दिखाई ॥ ५ ॥
हैं गुरु बहिन और गुरु भाई।
तिन मैं निस दिन होत लड़ाई ॥ ६ ॥
काल दाव† अपना यौं खेला।
सतसँग मैं आय कीन्हो मेला ॥ ७ ॥
सेवा मैं घुस पैठ कराई।
और तरह कोइ घात न पाई ॥ ८ ।
सेवा मैं अस कीन्हा पेचा।
मन को सब के घर घर खैंचा ॥ ९ ॥
गुरु ताड़ैं सतसंगी झीखैं‡
काल लगाई ऐसी लीकैं§ ॥ १० ॥

* जाती रही। † पेंच। ‡ दुखित होना। § दाग।

गुरु समझावें सीख न मानें ।
मन मत अपनी फिर फिर ठानें ॥११॥
गुरु को देवें दोष लगाई ।
फिर फिर चौरासी भरमाई ॥ १२ ॥
इतने दिन सतसंग जो कीया ।
कुछ भी असर न उसका हूआ ॥ १३ ॥
सतगुरु से अब करूँ पुकारा ।
काल मार मन लेव सुधारा ॥ १४ ॥
तुम से काल ज़बर नहिं होई ।
काटो फंदा जम का सोई ॥ १५ ॥
तुम्हरे चरन प्रीत होय गाढ़ी ।
सतसँगियन मन शुधता बाढ़ी ॥ १६ ॥
हिल मिल कर सब करें अनंदा ।
द्रोह घात* का काटो फंदा ॥ १७ ॥
सतसंगी सब मिल कर चालें ।
प्रीत परस्पर पल पल पालें ॥ १८ ॥
यही हुकुम अब सब को कीना ।
जो नहिं माने सो काल अधीना ॥१९॥

* शत्रुता और वैर ।

जो कोइ माने हुकुम हमारा ।
पहुँचे वह सतगुरु दरबारा ॥ २० ॥
बुद्धि आपनी लेव सम्हारी ।
बचन गुरू यह मन में धारी ॥ २१ ॥
जिन के मन को काल सम्हारा ।
सो नहिँ माने बचन हमारा ॥ २२ ॥
अब मन में चिन्ता मत राखो ।
सत्तनाम अब छिन छिन भाखो ॥ २३ ॥
दीन हीन जानो अपने को ।
निपट नीच मानो अपने को ॥ २४ ॥
अब अहंकार करो क्या किस से ।
मौत धार दम दम में बरसे ॥ २५ ॥
जैसे जग में महा भिखारी ।
दीन ग़रीबी उन सब धारी ॥ २६ ॥
कोई उसको कुछ कह लेवे ।
मन को अपने ज़रा न देवे ॥ २७ ॥
तुम सतसँग कर क्या फल पाया ।
उनका सा भी मन न बनाया ॥ ॥ २८ ॥

अब ऐसा तुम्हें करना चहिये ।
अपने मन आधीनी धरिये ॥ २९ ॥
हाहा खाओ* चरन पखालो† ।
आपस में तुम हिल मिल चालो ॥ ३० ॥
जो कोइ जिस से रूठे भाई ।
सोई तिसको लेय मनाई ॥ ३१ ॥
हाथ जोड़ बहु बिनती करे ।
करे खुशामद चरनन पड़े ॥ ३२ ॥
इतने पर जो माने नाहीं ।
गुनहगार सतगुरु का भाई ॥ ३३ ॥
जलन ईर्षा जिस घट आई ।
वह दुख कैसे जाय नसाई ॥ ३४ ॥
कर बिबेक मन को समझावे ।
या सतगुरु की दया समावे ॥ ३५ ॥
सतगुरु दया बिना नहिं होई ।
बिन बिबेक नहिं जावे खोई ॥ ३६ ॥
जो सतगुरु निज दया बिचारैं ।
तब यह दुरमत मन से टारैं ॥ ३७ ॥

* दीनता के साथ छिमा माँगना । † धोओ ।

जो कोइ दीन कपट से होई ।
ता का रोग कहो कस जाई ॥ ३८ ॥
कपटी को ऐसा अब चाही ।
करे सफ़ाई कपट नसाई ॥ ३९ ॥
जो बल उसका पेश न जावे ।
तो सतगुरु से बिनती लावे ॥ ४० ॥
खोले कपट न राखे परदा ।
गुरु से खोले रख रख सरधा ॥ ४१ ॥
अपने औगुन उन से भाखे ।
बार बार बिनती कर आखे ॥ ४२ ॥
हे स्वामी मेरी कपट निकारो ।
मैं बलहीन मोहिं तुम तारो ॥ ४३ ॥
तुम्हरी दया होय जब भारी ।
घट से निकसे कपट हमारी ॥ ४४ ॥
और उपाय न इसका होई ।
बिना दया कोइ जुक्ति न कोई ॥ ४५ ॥
मन कपटी घट घट में पैठा ।
सब जीवन का पकड़ा फेंटा* ॥ ४६ ॥

* कमरबंद ।

कर सतसँग औ भाव बसावे ।
गुरु की दया कपट नस जावे ॥ ४७ ॥
जो गुरु आगे कपट न खोलै ।
निष्कपटी अपने को बोलै ॥ ४८ ॥
दोहरा कपट लिये है सोई ।
उसका जतन कभी नहिं होई ॥ ४९ ॥
वह सतसँग के लायक़ नाहीं ।
वह असाध रोगी जग माहीं ॥ ५० ॥
पर जो सतगुरु समरथ पावे ।
और चरनन पर सीस नवावे ॥ ५१ ॥
पड़ा रहे सतसँग के माहीं ।
धीरे धीरे तौ छुट जाई ॥ ५२ ॥
सतसँग जल जो कोई पावे ।
सब मैलाई कट कट जावे ॥ ५३ ॥
सतसँग महिमा कहा बखानूँ ।
अस सम जतन और नहिं मानूँ ॥५४॥
कलजुग ख़ास जतन कोइ नाहीं ।
बिन सतसंग संत नहिँ गाईं ॥ ५५ ॥

कर्म धर्म तप पूजा दाना ।
इस करनी से नित बढ़े माना ॥ ५६ ॥
और ज्यों की त्यों होय न आवे ।
तौ फल उलटा उसका पावे ॥ ५७ ॥
याते संतन काढ़ि निकारी ।
सतसँग की महिमा कहि भारी ॥५८॥

॥ दोहा ॥

सतसँग किसको कहत हैं, सो भी तुम सुन लेव ।
सत्तनाम सतपुरुष का, जहाँ कीर्तन होय ५९॥

चौथा पद सचखंड कहावे ।
महासुन्न के पार रहावे ॥ ६० ॥
महासुन्न वह संतन भाषी ।
अक्षर से वह आगे ताकी ॥ ६१ ॥
वह अक्षर है बेद को मूला ।
ज्यों का त्यों ताहि बेद न तोला ॥ ६२॥
नेत नेत वाही को कहता ।
आगे की गत फिर कस लेता ॥ ६३ ॥
बेद कतेब थके दोउ यहँ ही ।
अक्षर सुन के वार रहाई ॥ ६४ ॥

आगे का इन मर्म न जाना ।
संतन ने यह करी बखाना ॥ ६५ ॥
जोगेश्वर बेदांती भाई ।
यह भी रहे अक्षर लख* माहीँ ॥६६॥
सत्तनाम संतन जो भाखा ।
सत्तलोक संतन जहाँ आखा ॥ ६७ ॥
सो इन सब से आगे होई ।
बुद्धि से एक कहो मत कोई ॥ ६८ ॥
संतन साफ़ साफ़ कह डाला ।
मत बेदांत काल कर जाला ॥ ६९ ॥

॥ दोहा ॥

काल मता बेदांत का, संतन कहा बनाय ।
सत्तनाम सतपुरुष का, भेद रहा अलगाय ७०
कुल्ल मते संसार के, सभी काल के जान ।
सत्तनामसतपुरुषअलखअद्यालपहिचान ७१

सत्तनाम का भेद सुनाऊँ ।
वा की आद अंत दरसाऊँ ॥ ७२ ॥
तब नहिँ रचा अंड ब्रह्मंडा ।
तीन लोक और नहिँ नौखंडा ॥ ७३ ॥

* लक्ष सरूप ।

नहिँ तब ब्रह्म नहीँ तब आलम ।
नहिँ तब पारब्रह्म परमातम ॥ ७४ ॥
नहिँ तब देवी नहिँ तब देवा ।
सुर नर मुनि कोइ रचे न सेवा ॥७५॥
काल और महाकाल नहिँ दोई ।
सुन्न और महासुन्न नहिँ होई ॥ ७६ ॥
धरती गगन न बेद पुराना ।
कोइ सिद्धांत बेदांत न जाना ॥ ७७ ॥
कहाँ लग कहूँ खोल कर भाई ।
किंचित रचना नहिँ प्रगटाई ॥ ७८ ॥
तब रहे आप अलाभ अमाया ।
अपने मैं रहे आप समाया ॥ ७९ ॥
मौज उठी इक धुन भइ भारी ।
सत्तनाम सत शब्द पुकारी ॥ ८० ॥
सच्च खंड इस धुन से रचिया ।
जहाँ लग मंडल धुन का बँधिया ॥८१॥
हंस रचे और दीप रचाये ।
सोलह सुत* परघट होय आये ॥८२॥

* सोलह कला ।

सत्तलोक यों रचन रचानी ।
सत्तनाम महिमा निज ठानी ॥ ८३ ॥
जुग केते याही बिधि बीते ।
सत्तनाम रस सब मिल पीते ॥ ८४ ॥
सत्य सत्य वहाँ रचा पसारा ।
फिर नीचे का किया बिस्तारा ॥ ८५ ॥
एक धार वहाँ से चल आई ।
धार दूसरी आन समाई ॥ ८६ ॥
सुन्न मँडल कीन्हा निज थाना ।
पुरुष प्रकिर्ति रचा अस्थाना ॥ ८७ ॥
जोत निरंजन संतन गाया ।
माया ब्रह्म वही ठहराया ॥ ८८ ॥
शिव शक्ती इस ही को कहते ।
केते जुग याही को बीते ॥ ८९ ॥
ब्रह्म सृष्टि रचना इन ठानी ।
यह भी भेद न काहू जानी ॥ ९० ॥
ब्रह्म हुआ जब इनसे न्यारा ।
सत्तनाम का ध्यान सम्हारा ॥ ९१ ॥

माया ने फिर रचना ठानी ।
तीन पुत्र-लीन्हे उतपानी ॥ ९२ ॥
नर सृष्टी इन से भइ भारी ।
बेद रचे और कर्म पसारी ॥ ९३ ॥
कर्म कांड में सब मन दीना ।
सुर नर मुनि भये काल अधीना ॥ ९४ ॥
ज्ञानी जोगी पच पच हारे ।
कर्म भर्म से हुए न न्यारे ॥ ९५ ॥
सतपुरुष का भेद न जाना ।
बेद मते का बंधन ठाना ॥ ९६ ॥
संत मता इन से बहु दूरी ।
यह क्यों जानें वह पद मूरी* ॥ ९७ ॥
याते सन्त सङ्ग अब कीजे ।
और सङ्ग सब परिहर† दीजे ॥ ९८ ॥
सतसँग याका नाम कहावे ।
मिलें सन्त तब यह घर पावे ॥ ९९ ॥
सत्तनाम धुन अब कहूँ खोली ।
बीन बाँसरी धुन जहँ बोली ॥ १०० ॥

* मूल । † त्याग ।

काल नगर जहँ अनहद बाजा ।
बाँईं दिसा यह धुन उन साजा ॥१०१॥
संतन की धुन इनसे न्यारी ।
पावेगा कोइ चढ़ पद चारी ॥ १०२ ॥
छाँट छूँट कर मैं सब गाई ।
संत मता सब दिया लखाई ॥ १०३ ॥
कहने में कुछ कसर न राखी ।
खुले दृष्टि तब देखे आँखी ॥ १०४ ॥
सन्त मेहर से कोइ कोइ पावे ।
बिना सन्त कुछ हाथ न आवे ॥१०५॥

॥ दोहा ॥

सन्त कही यह छानकर, मूरख माने नाहिँ ।
बिना प्रीत परतीत के, कैसे पावे ठाहिँ ॥१०६॥
संतन से कर प्रीत अब, दृढ़ कर चित्त लगाय ।
कर्मभर्मसब छोड़कर, सूरत शब्द समाय १०७
राधास्वामी गाय कर, जन्म सुफल करले ।
यहीनाम निज नाम है, मन अपने धरले१०८
भेद नाम का जब तू पावे ।
सतसँग में स्वामी के आवे ॥ १०९ ॥

## ॥ बचन बारहवाँ ॥

## बर्णन महातम भक्ती का

### ॥ शब्द पहिला ॥

भक्ति महातम सुन मेरे भाई ।
सब सन्तन ने किया बखान ॥ १ ॥
यही मता गुरुमत पहिचानो ।
और मते सब झूठ भुलान ॥ २ ॥
बिना भक्ति थोथे सब मानो ।
छिलका है मींगी* की हान ॥ ३ ॥
ताते भक्ती दृढ़ कर पकड़ो ।
और सयानप† तजो निदान ॥ ४ ॥
भक्ती इश्क़ प्रेम यह तीनों ।
नाम भेद है रूप समान ॥ ५ ॥
भक्ति भाव यह गुरुमत जानो ।
और मते सब मनमत ठान ॥ ६ ॥
प्रेम रूप आतम परमातम ।
भक्ति रूप सतनाम बखान ॥ ७ ॥
भक्ती और भगवंत एक हैं ।
प्रेम रूप तू सतगुरु जान ॥ ८ ॥

* मग़ज़ । † चतुराई ।

प्रेम रूप तेरा भी भाई ।
सब जीवन को योंही मान ॥ ९ ॥
एक भेद यामें पहिचानो ।
कहीं बुंद कहिं लहर समान ॥ १० ॥
कहीं सिंध सम करे प्रकाशा ।
कहीं सोत और पोत कहान ॥ ११ ॥
कहिं इच्छा परबल होय बैठी ।
कहीं हुई माया बलवान ॥ १२ ॥
एक ठिकाने माया थोड़ी ।
सिन्ध प्रताप शुद्ध हुइ आन ॥ १३ ॥
सोत पोत में माया नाहीं ।
वहाँ प्रेम ही प्रेम रहान ॥ १४ ॥
वह भंडार प्रेम का भारी ।
जाका आदि न अंत दिखान ॥ १५ ॥
बिना सन्त पहुँचे नहिं कोई ।
सतगुरु सन्त किया अस्थान ॥ १६ ॥
प्रेम भक्ति की ऐसी महिमा ।
ग्रहण करो यह अमृत खान* ॥१७॥

*भंडार।

तातै पहिले करो भक्ति गुरू।
पीछे पाओ नाम निशान ॥ १८ ॥
आरत कर कर गुरू रिझाओ।
पाओ उन से प्रेम निधान* ॥ १९ ॥
राधास्वामी कहत सुनाई।
मिला तुझे अब भक्ती दान ॥ २० ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

जक्त भाव भय लज्जा छोड़ो।
सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ १ ॥
ज़ाति बरन भय लज्जा त्यागो।
सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ २ ॥
शत्रु मित्र डर दूर हटाओ।
सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ ३ ॥
मात पिता डर छोड़ गँवाओ।
सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ ४ ॥
जोरू लड़के मत डर इन से।
सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ ५ ॥
भाई भतीजों का डर मत कर।
सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ ६ ॥

*खज़ाना।

सास ससुर डर मन से छोड़ो ।
सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ ७ ॥
बहू जमाई इन का डर तज ।
सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ ८ ॥
यार आशना* सब डर छोड़ो ।
सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ ९ ॥
नातेदार कुटुम्बी जितने ।
इनका डर तज कर भक्ती ॥ १० ॥
भक्ति अंग में जब तू बरते ।
छोड़ झिझक† इन कर भक्ती ॥११॥
जो मूरख हैं मर्म न जानें ।
इनका डर क्या कर भक्ती ॥ १२ ॥
इनका डर कुछ मत कर मन में ।
सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ १३ ॥
भेष भेष को देख लजावे ।
सो भी कच्चा कर भक्ती ॥ १४ ॥
जब लग सब से निडर न होवे ।
तब लग कच्चा कर भक्ती ॥ १५ ॥

* दोस्त । †डर और लज्जा ।

जिल्लत* इज्जत† जो कुछ होवे ।
मौज बिचारो कर भक्ती ॥ १६ ॥
गुरु का बल हिरदे धर अपने ।
सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ १७ ॥
यह बिगाड़ कुछ करें न तेरा ।
क्यों झिझके तू कर भक्ती ॥ १८ ॥
बिना मौज गुरु कुछ नहिं होता ।
सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ १९ ॥
तू कच्चा यह करे कचाई ।
और कहूँ क्या कर भक्ती ॥ २० ॥
करते करते पक्का होगा ।
और उपाव न कर भक्ती ॥ २१ ॥
कच्चो से पक्को होय एक दिन ।
छोड़ कपट तू कर भक्ती ॥ २२ ॥
कपट भक्ति कुछ काम न आवे ।
सच्ची कच्ची कर भक्ती ॥ २३ ॥
राधास्वामी कहत सुनाई ।
जैसी बने तैसी कर भक्ती ॥ २४ ॥

* निरादर । † आदर ।

॥ शब्द तीसरा ॥

धोखा मत खाना जग आय पियारे ।
धोखा मत खाना जग आय ॥ १ ॥
कोई मीत न जानो अपना ।
सब ठग बैठे फाँसी लाय ॥ २ ॥
जब सच्चा होय चले डगर गुरु ।
तबही चौंकें रोकें आय ॥ ३ ॥
ऊँच नीच कहैं बचन लोख* के ।
मन को तेरे दें भरमाय ॥ ४ ॥
इनसे रहना समझ बूझ कर ।
हैं यह बैरी हित दिखलाय ॥ ५ ॥
तेरी हानि लाभ नहिं सोचैं ।
अपने स्वारथ रहैं लिपटाय ॥ ६ ॥
तू भी चतुरा गुरु का प्यारा ।
उन सँग रहु गुरु चरन समाय ॥ ७ ॥
उनको भी इस भाँति भलाई ।
तेरी भक्ति न थकती जाय ॥ ८ ॥
जो बेमुख गुरु भक्ति नाम मे ।
कोई तरह क़ाबू नहिं पाय ॥ ९ ॥

* तान ।

तौ जुक्ती से दीन बिधी से ।
　　छोड़ चलो सँग दोष न ताय* ॥१०॥
जो सन्मुख गुरु भक्ति नाम से ।
　　होयँ कदाचित मेल मिलाय ॥११॥
राधास्वामी कहत बनाई ।
　　बहुर बहुर तू भक्ति कमाय ॥ १२ ॥
भक्ति न छूटे कोई जुक्त से ।
　　नहिं तो बहु बिधि रहो पछताय १३

## ॥ वचन तेरहवाँ ॥

## पहिचान पूरे गुरू की और सच्चे परमार्थी की ॥

### ॥ शब्द पहिला ॥

गुरू सोई जो शब्द सनेही ।
शब्द बिना दूसर नहिं सेई† ॥ १ ॥
शब्द कमावे सो गुरू पूरा ।
उन चरनन की हो जा धूरा ॥ २ ॥
और पहिचान करो मत कोई ।
लक्ष‡ अलक्ष§ न देखो सोई ॥ ३ ॥

* उसमें । † सेवन करना । ‡ लक्षण, पूरा । § बेलक्षण, अधूरा ।

शब्द भेद लेकर तुम उन से ।
शब्द कमाओ तुम तन मन से ॥ ४ ॥

॥ सार उपदेश ॥

पहिचान परमार्थी की

॥ सोरठा ॥

अनुरागी जोजीव, तिन प्रति अब ऐसी कहूँ।
सुनो कानदे चीत, बचन कहूँ बिस्तार कर ५॥

बिषयन से जो होय उदासा ।
परमारथ की जा मन आसा ॥ ६ ॥
धन सन्तान प्रीत नहिं जाके ।
जक्त पदारथ चाह न ता के ॥ ७ ॥
तन इन्द्री आसक्त न होई ।
नींद भूख आलस जिन खोई ॥ ८ ॥
बिरह बान जिन हिरदे लागा ।
खोजत फिरे साध गुरु जागा ॥ ९ ॥
साध फ़क़ीर मिले जो कोई ।
सेवा करे करे दिलजोई* ॥ १० ॥
भेष धार पाखंडी होई ।
साधू जान करे हित सोई ॥ ११ ॥

* खातिरदारी ।

भेष नेष्ठा* नित प्रति धारे ।
ले परशादी चरन पखारे ॥ १२ ॥
ऐसी करनी जा की देखैं ।
आप आय सतगुरु तिस मेलैं ॥ १३ ॥
सतगुरु बचन सुने जब काना ।
उमगे हिरदा प्रेम समाना ॥ १४ ॥
सतगुरु से जब प्रीत लगावे ।
दया मेहर उनकी कुछ पावे ॥ १५ ॥

॥ बिधि दर्शन की ॥

नित प्रति दर्शन परसन करे ।
रूप अनूप चित्त में धरे ॥ १६ ॥
चरनामृत परशादी लेवे ।
मान मनी तज तन मन देवे ॥ १७ ॥

॥ बिधि सेवा की ॥

सेवा कर तन मन धन अरपे ।
सत्तपुरुष सम सतगुरु थरपे† ॥ १८ ॥

॥ प्रथम तन की सेवा ॥

आरत सेवा नित ही करे ।
काम क्रोध मद चित से हरे ॥ १९ ॥

* धारना † माने ।

चरन दबावे पंखा फेरे ।
चक्की पीसे पानी भरे ॥ २० ॥
मोरी धो झाड़ू को धावे ।
खोद खदाना मिट्टी लावे ॥ २१ ॥
हाथ धुला दातन करवावे ।
काट पेड़ से दातन लावे ॥ २२ ॥
बटना मल अशनान करावे ।
अंग पोंछा धोती पहिनावे ॥ २३ ॥
धोती धोय अँगोछा धोवे ।
कंघा करे बाल बस्त्र खोवे ॥ २४ ॥
बस्त्र पहिनावे तिलक लगावे ।
करे रसोई भोग धरावे ॥ २५ ॥
जल अचवावे हुक्का भरे ।
पलँग बिछावे बिनती करे ॥ २६ ॥
पीकदान ले पीक करावे ।
फिर सब पीक आप पी जावे ॥ २७ ॥
नाना बिधि की सेवा करे ।
नीच ऊँच जो जो आ पड़े ॥ २८ ॥

कोई टहल में आर* न लावे ।
जो गुरु कहें सो कार कमावे ॥ २९ ॥

॥ दूसरे धन की सेवा ॥

धन की सेवा यह है भाई ।
गुरु सेवा में ख़र्च कराई ॥ ३० ॥
गुरु नहिं भूखा तेरे धन का ।
उन पै धन है भक्ति नाम का ॥ ३१ ॥
पर तेरा उपकार करावें ।
भूखे प्यासे को दिलवावें ॥ ३२ ॥
उनकी मेहर मुफ़्त तू पावे ।
जो उनको परसन्न करावे ॥ ३३ ॥
उनका ख़ुश होना है भारी ।
सत्तपुरुष निज किरपा धारी ॥ ३४ ॥

॥ तीसरे मन और बुद्धि की सेवा ॥

दर्शन करे बचन पुनि सुने ।
फिर सुन सुन नित मन में गुने ॥ ३५ ॥
गुन गुन छाँट लेय उन सारा ।
सार धार तिस करे अहारा ॥ ३६ ॥

* शर्म ।

कर अहार पुष्ट हुआ भाई ।
जग भी लाज अब गई नसाई ॥ ३७ ॥
गुरु भक्ती जानो इश्क गुरू का ।
मन सें धसा सुरत सें पक्का ॥ ३८ ॥
एक एक घट सें गाड़ा थाना ।
थान गाड़ अब हुआ दिवाना ॥ ३९ ॥
गुरु का रूप लगे अस प्यारा ।
कामिन पति मीना जल धारा ॥ ४० ॥
सतसँग करना ऐसा चहिये ।
सतसँग का फल येही सही है ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

जब सतगुरु परसन्न होय, देयँ नाम का दान ।
दीन होय हिरदे धरे, करे नाम पहिचान ४२॥

## चौथे सुरत और निरत* की सेवा यानें अंतर अभ्यास

अन्तरमुख बैठे एकान्त ।
अभ्यास करे पावे मन शान्त ॥ ४३ ॥
दो दल उलट गगन को धावे ।
मगन होय और नाद बजावे ॥ ४४ ॥

* निर्णय करने वाली शक्ति ।

जोत देख फिर देखे सूर ।
चंद्र निहारे पावे नूर* ॥ ४५ ॥
सत्तलोक पहुँचे और बसे।
सुन सुन धुन तब सूरत हँसे ॥ ४६ ॥
तब सतगुरु की जानी महिमा ।
जिन प्रताप बाजी धुन बीना ॥ ४७ ॥
अलख अगम और मिला अनामी ।
अब कहूँ धन धन राधास्वामी ॥४८॥

॥ शब्द दूसरा ॥

घर आग लगावे सखी ।
सोइ सीतल समुँद समावे ॥ १॥
जड़ चेतन की गाँठ खुलानी ।
बुन्दा सिंध मिलावे ॥ २ ॥
सुरत शब्द की क्यारी सींचे ।
फल और फूल खिलावे ॥ ३ ॥
गगन मँडल का ताला खोले ।
लाल जवाहिर† पावे ॥ ४॥
सुन्न शिखर का मन्दिर झाँके ।
अद्भुत रूप दिखावे ॥ ५ ॥

*प्रकाश । †रतन ।

मानसरोवर निरमल धारा ।
ता बिच पैठ अन्हावे ॥ ६ ॥
हंसन साथ हाथ फल लेवे ।
धृग धृग जक्त सुनावे ॥ ७ ॥
महासुन्न का नाका तोड़े ।
भँवरगुफा ढिंग जावे ॥ ८ ॥
सत्तनाम पद परस* पुराना ।
अलख अगम को धावे ॥ ९ ॥
राधास्वामी सतगुरू पावे ।
तब घर अपने आवे ॥ १० ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

गुरू चेला ब्योहार जगत में ।
झूठा बर्त रहा ॥ १ ॥
का से कहूँ खोज नाहिँ काहू ।
धोखे धार बहा ॥ २ ॥
गुरू तो लोभ प्रतिष्ठा चाहत ।
शिष स्वारथ सँग आन बँधा ॥ ३ ॥
सच्चा मारग सुरत शब्द का ।
सो अब गुप्त भया ॥ ४ ॥

* स्पर्श करके ।

गुरू चेला पाखंडी कपटी ।
चौरासी में दोउ गया ॥ ५ ॥
शब्द सरूपी शब्द अभ्यासी ।
अस गुरू मिले तो पार हुआ ॥६॥
सुरतवन्त अनुरागी सच्चा ।
ऐसा चेला नाम कहा ॥ ७ ॥
गुरू भी दुर्लभ चेला दुर्लभ ।
कहीं खोज से मेल मिला ॥ ८ ॥
शब्द सुरत बिन जो गुरु होई ।
ता को छोड़ो पाप कटा ॥ ९ ॥
राधास्वामी यों कह गाई ।
बूझ बचन तब काज सरा ॥१०॥

॥ शब्द चौथा ॥

सतगुरु खोजो री प्यारी ।
जगत में दुर्लभ रतन यही ॥ १ ॥
जिन पर मेहर दया सतगुरु की ।
उन को दरस दई ॥ २ ॥
दरस पाय सतलोक सिधारी
सत्तनाम पद कीन सही ॥ ३ ॥

सही नाम पाया सतगुरु से ।
बिन सतगुरु सब जीव बही ॥ ४ ॥
जीव पड़े चौरासी भरमें ।
खान पान मद मान लई ॥ ५ ॥
मान मनी का रोग पसरिया* ।
बड़े बने जिन मार सही ॥ ६ ॥
छोटा रहे चित्त से अन्तर ।
शब्द माहिँ तब सुरत गई ॥ ७ ॥
शब्द बिना सारा जग अन्धा ।
बिन सतगुरु सब मर्म मई ॥ ८ ॥
शब्द भेद और शब्द कमाई ।
जिन जिन कीन्ही सार लई ॥ ९ ॥
शब्द रता सतगुरु पहिचानो ।
हम यह पूरा पता दई ॥ १० ॥
खोलो आँख निकटही देखो ।
अब क्या खोलूँ खोल कही ॥ ११ ॥
आगे भाग तुम्हारा प्यारी ।
नहिँ परखो तो जून† रही ॥ १२ ॥

* फैला । † योनि ।

कहना-था सोई कह डाला ।
राधास्वामी सब कही ॥ १३ ॥

॥ बचन चौदहवाँ ॥

॥ चितावनी भाग पहिला ॥

॥ शब्द पहिला ॥

घुन से सुरत अङ्ग न्यारी रे ।
मन से बँधी कर यारी रे ॥ १ ॥
भौजाल फँसी अब भारी रे ।
घर छूटा फिरे उजाड़ी रे ॥ २ ॥
गुरु ज्ञान नहीं चित धारी रे ।
बिष भोगे बिषय बिकारी रे ॥ ३ ॥
सिर भार उठावत भारी रे ।
जम दंड सहे सरकारी* रे ॥ ४ ॥
दुख बिपता बहुत सहारी रे ।
अब सतगुरु कहत पुकारी रे ॥ ५ ॥
सुन मान बचन मेरा प्यारी रे ।
घट उलटो लख उजियारी रे ॥ ६ ॥
शब्दा रस पियो अपारी रे ।
चढ़ खोलो गगन किवाड़ी रे ॥ ७ ॥

* काल का ।

गुरु बिन नहिं और अधारी रे ।
राधास्वामी काज सुधारी रे ॥ ८ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

सुरत तू कौन कहाँ से आई ॥ टेक ॥
जगत जाल यह मन रच राखा ।
क्यों या में भरमाई ॥ १ ॥
पुरुष अंस तू सतपुरबासी ।
फाँसी काल लगाई ॥ २ ॥
सतगुरु दया साध की संगत ।
उलट चलो घर पाई ॥ ३ ॥
अनहद शब्द सुनो घट अंतर ।
राधास्वामी कहत बुझाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

झँझरिया झाँको बिरह उमगाय ॥ टेक ॥
मन इन्द्री घर बास बिगाना ।
या में रहो अलसाय ॥ १ ॥
पूरे सतगुरु मर्म लखावैं ।
मर्म देव छुटकाय ॥ २ ॥

अब के दाव पड़ा तेरा सजनी ।
फिर औसर नहिं पाय ॥ ३ ॥
तिल को पेल तेल अब काढ़ो ।
लो घट जोत जगाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी कहा बुझाई ।
एक ठिकाना गाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द चौथा ॥

करो री कोइ सतसँग आज बनाय ॥ टेक ॥
नर देही तुम दुर्लभ पाई ।
अस औसर फिर मिले न आय ॥ १ ॥
तिरिया सुत धन धाम बड़ाई ।
यह सुख फिर दुख सूल दिखाय ॥ २ ॥
या से बचो गहो गुरु सरना ।
सतसँग में तुम बैठो जाय ॥ ३ ॥
यह सब खेल रैन का सुपना ।
मैं तुम को अब दिया जगाय ॥ ४ ॥
झूठी काया झूठी माया ।
झूठा मन जो रहा लुभाय ॥ ५ ॥

सतसँग सच्चा सतगुरु सच्चा ।
नाम सचाई क्या कहुँ गाय ॥ ६ ॥
मान बचन मेरा तू सजनी ।
जन्म मरन तेरा छुट जाय ॥ ७ ॥
नभ चढ़ चलो शब्द में पेलो ।
राधास्वामी कहत बुझाय ॥ ८ ॥

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

सुरत तू क्यों न सुने धुन नाम ॥ टेक॥
भूल भुलइयाँ आन फँसानी
क्या समझा आराम ।
भला तू समझ चेत चल धाम ॥ १ ॥
मन इंद्री सँग भोग बिलासा ।
यह जमराय बिछाया दाम ॥ २ ॥
इन से निकर भाग अब प्यारी ।
सतगुरु मर्म लखावें ताम* ॥ ३ ॥
अब की बार पड़ो गुरु सरना ।
फिर न बने अस काम ॥ ४ ॥
यहाँ तो चार दिवस रहे बासा ॥
फिर भटको चौरासी ग्राम ॥ ५ ॥

* तमाम ।

ता ते बचन हमारा मानो ।
तजो मोह और काम ॥ ६ ॥
मन बौरा[*] यह कहा न माने ।
लगा भोग रस खाम[†] ॥ ७ ॥
जीव निबल क्या करे बिचारा ।
जब लग राधास्वामी करें न सहाम[‡] ॥ ८ ॥

॥ शब्द छठवाँ ॥

जाग चल सूरत सोई बहुत ।
काहे को पूँजी अपनी खोत ॥ १ ॥
पकड़ ले सतगुरु की तू ओट ।
नाम गह दूर करो सब खोट[§] ॥ २ ॥
काल अब मारे छिन छिन चोट ।
शब्द सँग डार[||] कर्म की पोट ॥ ३ ॥
मैल मन क्यों नहिं अब तू धोत ।
शब्द सँग सूरत क्यों नहिं पोत[**] ॥ ४ ॥
निरख ले घट में अद्भुत जोत ।
खोलिया राधास्वामी भक्ती सोत ॥ ५ ॥

* पागल । † लिपट । ‡ सहायता । § कसर । || फेंक दे । ** गूँथता , परोता ।

॥ शब्द सातवाँ ॥

हित कर कहता सुन सुर्त बात ।
गोता मत खा मूरख साथ ॥ १ ॥
काम सँग बहती दिन और रात ।
मिला तोहि भटक भटक यह गात* ॥२॥
लगा ले नौका सतगुरु घाट ।
मिटा ले प्यारी जम की घात ॥ ३ ॥
छोड़ दे मन से सब उत्पात ।
रखो नहिँ मन में ज़ात और पाँत ॥४॥
बिघ्न यह भारी बुधि भरमात ।
कहूँ क्या कौन सुने मेरी तात† ॥ ५ ॥
करैं कोइ सतगुरु तोहि निज दात ।
नाम का भेद लखा धुन पात ॥ ६ ॥
कहैं यह राधास्वामी अचरज बात ।
मिले जब सतसँग सरन समात ॥ ७ ॥

॥ शब्द आठवाँ ॥

हे सहेली अब गुरु के मारग चलना ।
मन मारग छिन छिन तजना ॥ १ ॥

* शरीर । † प्यारा ।

कामादिक भोग बिसरना ।
धुन सुन कर नभ पर चढ़ना ॥ २ ॥
जग भट्ठी में क्यों जलना ।
मद मान मोह नहिं पचना ॥ ३ ॥
धीरे धीरे नाम रसायन* जरना ।
भौजल से यों ही तरना ॥ ४ ॥
राधास्वामी वचन पकड़ना ।
फिर जम से काहे को डरना ॥ ५ ॥

॥ शब्द नवाँ ॥

क्यों फिरत भुलानी जक्त में ।
दिन चार बसेरा ॥ १ ॥
स्वारथ के संगी सभी ।
जिन तुझ को घेरा ॥ २ ॥
मात पिता सुत इस्तरी ।
कोइ संग न हेरा ॥ ३ ॥
बिन गुरु सतगुरु कौन है ।
जो करे निबेड़ा† ॥ ४ ॥
नाम बिना सब जीव ।
करें चौरासी फेरा ॥ ५ ॥

* कीमिया । † छुटकारा ।

मन दुलहा गगना चढ़े ।
सज सूरत सेहरा ॥ ६ ॥
धुन दुलहिन को पायकर ।
बसे जाय त्रिकुटी देहरा* ॥ ७ ॥
राधास्वामी ध्यान धर ।
तू साँझ सवेरा ॥ ८ ॥

॥ शब्द दसवाँ ॥

सुरत तू दुखी रहे हम जानी ॥ टेक ॥
जा दिन से तुम शब्द बिसारा ।
मन सँग यारी ठानी ॥ १ ॥
मन मूरख तन साथ बँधानी ।
इन्द्री स्वाद लुभानी ॥ २ ॥
कुल परिवार सभी दुखदाई ।
इन सँग रहत भुलानी ॥ ३ ॥
तू चेतन यह जड़ सब मिथ्या ।
क्योंकर मेल मिलानी ॥ ४ ॥
ताते चेत चलो यह औसर ।
नहिँ भरमो लुम खानी ॥ ५ ॥

* डेरा ।

सतसँग करो सत्त पद खोजो ।
सतगुरु प्रीत समानी ॥ ६ ॥
नाम रतन गुरु देयँ बुझाई ।
उलट चढ़ो असमानी ॥ ७ ॥
इतना काम करो तुम अब के ।
फिर आगे की सतगुरु जानी ॥ ८ ॥
राधास्वामी कहन सम्हारो ।
दुख छूटे सुख मिले निशानी ॥ ९ ॥

॥ शब्द ग्यारहवाँ ॥

सुरत तू कौन कुमति उरझानी ॥ टेक ॥
मन के साथ फिरे भरमानी ।
गुरु की सुने न बानी ॥ १ ॥
कनिक कामिनी लागी प्यारी ।
रैन दिवस इन सँग लिपटानी ॥ २ ॥
मोह जाल यह काल बिछाया ।
दाना डाला जीव फँसानी ॥ ३ ॥
तू अनजान पड़ी लालच में ।
बहुत होय तेरी हानी ॥ ४ ॥

मैं समझाय कहूँ अब तो से ।
गुरु बिन कौन बचानी ॥ ५ ॥
गुरु से प्रीति करो जग जारो ।
तन मन दशा भुलानी ॥ ६ ॥
नाम रसायन गुरु से पावो ।
छूटे सब हैरानी ॥ ७ ॥
फिर तू चढ़े गगन के नाके ।
तन से होय अलगानी ॥ ८ ॥
जम की घात बचाले प्यारी ।
राधास्वामी कहत बखानी ॥ ९ ॥

॥ शब्द बारहवाँ ॥

जग में घोर अँधेरा भारी ।
तन में तम का अंडारा ॥ १ ॥
स्वप्न जाग्रत दोनों देखी ।
भूल भुलइयाँ घर मारा ॥ २ ॥
जीव अज्ञान भया परदेसी ।
देस बिसर गया निज सारा ॥ ३ ॥
फिरे भटकता खान खान में ।
जोनि जोनि बिच झख मारा ॥ ४ ॥

दम दम दुखी कष्ट बहु भोगे ।
सुने कौन अब बहु हारा ॥ ५ ॥
करे पुकार कारगर* नाहीं ।
पड़े नर्क में जम धारा ॥ ६ ॥
भटक भटक नर देही पाई ।
इन्द्री मन मिल यहाँ मारा ॥ ७ ॥
सतगुरु संत कहें बहुतेरा ।
राह बतावें दस द्वारा ॥ ८ ॥
बचन न माने कहन न पकड़े ।
फिर फिर भरमे नौ वारा ॥ ९ ॥
फोकट† धर्म पकड़ कर जूझे ।
बूझे न शब्द जुगत पारा ॥ १० ॥
पानी मथे हाथ कुछ नाहीं ।
क्षीर‡ मथन आलस भारा ॥ ११ ॥
जीव अभाग कहूँ मैं क्या क्या ।
बाहर भरमे भौजारा ॥ १२ ॥
अंतरमुख जो शब्द कमाई ।
ता में मन को नहिं गारा§ ॥ १३ ॥

* असरदार । † खाली । ‡ दूध । § गलाया ।

वेद शास्त्र स्मृत और पुराना ।
पढ़ पढ़ सब पंडित हारा ॥ १४ ॥
बिन सतगुरु और बिना शब्द सुर्त ।
कोई न उतरे भौ पारा ॥ १५ ॥
यही बात भाषी मैं चुनकर ।
अब तो मानो गुरु प्यारा ॥ १६ ॥
राधास्वामी कहा बुझाई ।
सुरत चढ़ाओ नभ द्वारा ॥ १७ ॥

॥ शब्द तेरहवाँ ॥

चल री सुरत अब गुरु के देश ।
जहाँ न काया कर्म कलेश ॥ १ ॥
तन मन इन्द्री यह परदेश ।
छोड़ो भेष* भवन का लेश† ॥ २ ॥
सुनो कान से गुरु संदेश ।
सुरत शब्द ले धाओ शेष‡ ॥ ३ ॥
ब्रह्मा बिष्णु न गौर गनेश ।
जहाँ न नारद सारद शेष ॥ ४ ॥
संत सुरत जहाँ किया प्रवेश ।
सतगुरु दया मिला वह देश ॥ ५ ॥

* सरूप। † पिंड की प्रीत। ‡ अन्तपद।

काल कर्म की गई न पेश ।
तोड़े दाँत और काटे नेश* ॥ ६ ॥
सतगुरु को अब करूँ अदेश† ।
राधास्वामी पूरे धनी धनेश ॥ ७ ॥

॥ बचन पंद्रहवाँ ॥

॥ चितावनी भाग दूसरा ॥

॥ शब्द पहिला ॥

चेत चलो यह सब जंजाल ।
काम न आवे कुछ धन माल ॥ १ ॥
गुरु चरन गहो लो नाम सम्हाल ।
सतसँग करो धरो अब ख़्याल ॥ २ ॥
काम क्रोध सँग मन पामाल‡ ।
भर्म भुलाना कर्मन नाल§ ॥ ३ ॥
कहा कहूँ यह मन का हाल ।
रोग सोग सँग होत बेहाल ॥ ४ ॥
जीव गिरासे जम और काल ।
देखत जग में यह दुख साल‖ ॥ ५ ॥
तौभी चेत न पकड़े ढाल ।
छिन छिन मारे काल कराल ॥ ६ ॥

* डंक । † वन्दगी । ‡ लतखूँदन । § संग ( पंजाबी बोली ) । ‖ तकलीफ़ ।

राधास्वामी गुरु जब होयँ दयाल ।
चरन शरन दे करैं निहाल ॥ ७ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

लाज जग काज बिगाड़ा री ।
मोह जग फन्दा डारा री ॥ १ ॥
कुटँब की यारी ख़्वारी* री ।
काल सँग ब्याही क्वारी री ॥ २ ॥
कर्म ने फाँसी डारी री ।
करे जम हाँसी भारी री ॥ ३ ॥
मरन की सुद्ध बिसारी री ।
देह अब लागी प्यारी री ॥ ४ ॥
मान में खप† गइ सारी री ।
पोट‡ सिर भारी धारी री ॥ ५ ॥
जीत कर बाज़ी हारी री ।
चाह जग की नहिँ मारी री ॥ ६ ॥
राधास्वामी कहत पुकारी री ।
करो कोइ जतन बिचारी री ॥ ७ ॥
गुरु सँग करो सुधारी री ।
नाम रस पियो अपारी री ॥ ८ ॥

---

* ख़राबी । † समा गई । ‡ बोझ ।

॥ शब्द तीसरा ॥

मत देख पराये औगुन ।
क्यों पाप बढ़ावे दिन दिन ॥ १ ॥
पर* जीव सतावे खिन खिन ।
छोड़ अपने औगुन गिन गिन ॥ २ ॥
मक्खी सम मत कर भिनभिन ।
नहिं खावे चोट तू छिन छिन ॥ ३ ॥
देखाकर सब के तू गुन ।
सुख मिले बहुत तोहि पुन पुन ॥ ४ ॥
मैं कहूँ तोहि अब गुनगुन† ।
तू मान बचन मेरा सुन सुन ॥ ५ ॥
गति गाई मैं यह हंसन ।
यों बर्ण सुनाई संतन ॥ ६ ॥
अब कान धरो इन बचनन ।
नहिं रोवोगे सिर धुन धुन ॥ ७ ॥
यह बात कही मैं चुन चुन ।
कर राधास्वामी चरन अपरसन ॥ ८ ॥

* पराया । †विचार कर ।

॥ शब्द चौथा ॥

मुसाफ़िर रहना तुम हुशियार ।
ठगौं ने आन बिछाया जाल ॥ १ ॥
अकेले मत जाना इस राह ।
गुरू बिन नहिं होगा निरबाह ॥ २ ॥
जमा सब लेंगे तेरी छीन ।
करेंगे तुझ को अपना दीन ॥ ३ ॥
ठगौं ने रोका सब संसार ।
गुरू बिन पड़ गइ सब पर धाड़* ॥४॥
मान लो कहना मेरा यार ।
संग इन तजना पकड़ किनार ॥ ५ ॥
गुरू बिन और न कोइ रखवार ।
कहूँ मैं तुम से बारम्बार ॥ ६ ॥
होयगी मंज़िल तेरी पार ।
गुरू से करले दृढ़ कर प्यार ॥ ७ ॥
गुरू के चरन पकड़ यह सार ।
इन्द्री भोग भुलावत झाड़ ॥ ८ ॥
यही हैं ठगिया करत ठगार ।
कहैं राधास्वामी तोहि पुकार ॥ ९ ॥

* लूट—डाका ।

सरन में आ जा लेउँ सम्हार ।
नाम सँग होजा होत उधार ॥ १० ॥

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

मित्र तेरा कोई नहीं सँगियन में ।
पड़ा क्यों सोवे इन ठगियन में ॥ १ ॥
चेत कर प्रीत करो सतसँग में ।
गुरू फिर रँग दें नाम अरँग में ॥ २ ॥
धन संपत तेरे काम न आवे ।
छोड़ चलो यह छिन में ॥ ३ ॥
आगे रैन अँधेरी भारी ।
काज करो कुछ दिन में ॥ ४ ॥
यह देही फिर हाथ न आवे ।
फिरो चौरासी बन में ॥ ५ ॥
गुरु सेवा कर गुरू रिझाओ ।
आओ तुम इस ढँग में ॥ ६ ॥
गुरु बिन तेरा और न कोई ।
धार बचन यह मन में ॥ ७ ॥
जक्त जाल में फँसो न भाई ।
निस दिन रहो भजन में ॥ ८ ॥

साध गुरू का कहना मानो ।
रहो उदास जगत मैं ॥ ९ ॥
छल बल छोड़ो और चतुराई ।
क्यौं तुम पड़ो कुगति मैं ॥ १० ॥
सुमिरन करो गुरू को सेवो ।
चल रहो आज गगन मैं ॥ ११ ॥
कल की ख़बर काल फिर लेगा ।
वहँ तुम जलो अगिन मैं ॥ १२ ॥
अबही समझ देर मत करियो ।
ना जानूँ क्या होय इस पन* मैं ॥ १३ ॥
यौं समझाय कहैं राधास्वामी ।
मानो एक बचन मैं ॥ १४ ॥

॥ शब्द छठवाँ ॥

मौत से डरत रहो दिन रात ॥ टेक ॥
इक दिन भारी भीड़ पड़ेगी ।
जम खूँदेंगे घर घर लात ॥ १ ॥
वा दिन की तुम याद बिसारी ।
अब भोगन मैं रहो भुलात ॥ २ ॥

* अवस्था, उमर ।

इक दिन काठी* बने तुम्हारी ।
चार कहरूवा† लादे जात ॥ ३ ॥
भाई बंद कुटँब परिवारा ।
सो सब पीछे आगे जात ॥ ४ ॥
आगे मरघट जाय उतारा ।
तिरिया रोए बिखेरे लाट‡ ॥ ५ ॥
वहाँ जमपुर मैं नर्क निवासा ।
यहाँ अग्नी मैं फूँके जात ॥ ६ ॥
दोनों दीन बिगाड़े अपने ।
अब नहिं सुनता सतगुरु बात ॥ ७ ॥
वा दिन बहु पछतावा होगा ।
अब तुम करते अपनी घात ॥ ८ ॥
ज्वानी गई बृद्धता आई ।
अब कै दिन का इन का साथ ॥ ९ ॥
चेत करो मानो यह कहना ।
गुरु के चरन झुकाओ माथ ॥ १० ॥
राधास्वामी कहत सुनाई ।
अब तुमको बहु बिधि समझात ॥ ११ ॥

*जिस पर मुरदे को लेजाते हैं । † का..ी उठानेवाले लोग । ‡ बाल खोले हुए ।

॥ शब्द सातवाँ ॥

बँधे तुम गाढ़े बंधन आन ॥ टेक ॥
पहिले बंधन पड़ा देह का ।
दूसर तिरिया जान ॥ १ ॥
तीसर बंधन पुत्र बिचारो ।
चौथा नाती मान ॥ २ ॥
नाती के कहिँ नाती होवे ।
फिर कहो कौन ठिकान ॥ ३ ॥
धन संपति और हाट हवेली* ।
यह बंधन क्या करूँ बखान ॥ ४ ॥
चौलड़ पचलड़ सतलड़ रसरी ।
बाँध लिया अब बहु बिधि तान ॥५॥
कैसे छूटन होय तुम्हारा ।
गहरे खूँटे गड़े निदान ॥ ६ ॥
मरे बिना तुम छूटो नाहीँ ।
जीते जी तुम सुनो न कान ॥ ७ ॥
जगत लाज और कुल मरजादा ।
यह बंधन सब ऊपर ठान ॥ ८ ॥

* मकान ।

लीक पुरानी कभी न छोड़ो।
जो छोड़ो तो जग की हान ॥ ९ ॥
क्या क्या कहूँ बिपत मैं तुम्हरी।
भटको जोनी भूत मसान ॥ १० ॥
तुम तो जगत सत्य कर पकड़ा।
क्योंकर पावो नाम निशान ॥ ११ ॥
बेड़ी तौक़* हथकड़ी बाँधे।
काल कोठरी कष्ट समान ॥ १२ ॥
काल दुष्ट तुम बहु बिधि बाँधा।
तुम ख़ुश होके रहो ग़लतान† ॥ १३ ॥
ऐसे मूरख दुख सुख जाना।
क्या कहूँ अजब सुजान ॥ १४ ॥
शरम करो कुछ लज्जा ठानो।
नहिं जमपुर का भोगो डान‡ ॥ १५ ॥
राधास्वामी सरन गहो अब।
तो कुछ पाओ उनसे दान ॥ १६ ॥

॥ शब्द आठवाँ ॥

चेत चल जगत से बौरे।
कपट तज गहो गुरू सरना ॥ १ ॥

*गले का बन्धन। †डूबे हुए, भूले हुए। ‡दंड, दुःख।

फिरे ग़ाफ़िल तू मदमाता ।
अंत सिर पीट कर मरना ॥ २ ॥
लगे नहिँ हाथ कुछ तेरे ।
कुटँब के साथ क्यों पिलना* ॥ ३ ॥
चार दिन के सँगाती यह ।
बटाऊँ† फिर नहीँ मिलना ॥ ४ ॥
रहो हुशियार जग ठग से ।
बचा पूँजी कमर कसना ॥ ५ ॥
मुसाफ़िर हो गुरू सँग लो ।
नाम शमशेर‡ कर गहना ॥ ६ ॥
सुरत को तान गगना में ।
पकड़ धुन बान घट रहना ॥ ७ ॥
काल की घात से बच कर ।
गहो राधास्वामी के चरना ॥ ८ ॥

॥ शब्द नवाँ ॥

तजो मन यह दुख सुख का धाम ।
लगो तुम चढ़ कर अब सतनाम ॥ १ ॥
दिना चार तन संग बसेरा ।
फिर छूटे यह ग्राम ॥ २ ॥

* पचना । † मुसाफ़िर । ‡ तलवार ।

धन दारा सुत नाती कहियन* ।
यह नहिँ आवैं काम ॥ ३ ॥
स्वाँस दुधारा नितही जारी ।
इक दिन खाली चाम ॥ ४ ॥
मशक समान जान यह देही ।
बहती आठो जाम ॥ ५ ॥
तू अचेत ग़ाफ़िल हो रहता ।
सुने न मूल कलाम† ॥ ६ ॥
माया नारि पड़ी तेरे पीछे ।
क्यों नहिँ छोड़त काम ॥ ७ ॥
बिन गुरु दया छुटो नहिँ या से ।
भजो गुरू का नाम ॥ ८ ॥
गुरु का ध्यान धरो हिरदे मैं ।
मन को राखो थाम ॥ ९ ॥
वे दयाल तेरी दया बिचारैं ।
दम दम करैं सहाम‡ ॥ १० ॥
छोड़ भोग क्यों रोग बिसावे§ ॥
या मैं नहिँ आराम ॥ ११ ॥

*कहावें । † शब्द । ‡ सहायता । §खरीदना ।

गुरु का कहना मान पियारे ।
तौ पावे बिसराम ॥ १२ ॥
दुख तेरा सब दूर करेंगे ।
देंगे अचल मुक़ाम ॥ १३ ॥
राधास्वामी कहत सुनाई ।
खोज करो निज नाम ॥ १४ ॥

॥ शब्द दसवाँ ॥

देखो सब जग जात बहा ॥ टेक ॥
देख देख मैं गति या जग की ।
बार बार यों बर्न कहा ॥ १ ॥
चारों जुग चौरासी भोगी ।
अति दुख पाया नर्क रहा ॥ २ ॥
जन्म जन्म दुख पावत बीते ।
इक छिन कहीं न चैन लहा ॥ ३ ॥
पाप पुन्य बस बिपता भोगी ।
नाहिं सतगुरु का चरन गहा ॥ ४ ॥
अब यह देह मिली किरपा से ।
करो भक्ति जो कर्म दहा ॥ ५ ॥

अबकी चूक माफ़ नहिं होगी ।
नाना बिधि के कष्ट सहा ॥ ६ ॥
ग़फ़लत* छोड़ भुलाओ जग को ।
नाम अमल† अब घोट पिया ॥ ७ ॥
मन से डरो करो गुरु सेवा ।
राधास्वामी भेद दिया ॥ ८ ॥

॥ शब्द ग्यारहवाँ ।

कोइ मानो रे कहन हमारी ॥ टेक ॥
जो जो कहूँ सुनो चित देकर ।
गौं‡ की कहूँ तुम्हारी ॥ १ ॥
जग के बीच बँधे तुम ऐसे ।
जैसे सुवना§ नलनी‖ धारी ॥ २ ॥
मरकट** सम तुम हुए अनाड़ी ।
मुट्ठी दीन फसा री ॥ ३ ॥
और मीना†† जिह्वा रस माती‡‡ ।
काँटा जिगर छिदा री ॥ ४ ॥
गज§§ सम मूरख हुए इस बन‖‖ में ।
झूठी हथनी देख बँधा री ॥ ५ ॥

*भूल । †नशा, अभ्यास । ‡ मतलब । § तोता । ‖ पकड़ने की कल । **बंदर । †† मछली । ‡‡मस्त । §§ हाथी । ‖‖ संसार ।

क्या क्या कहूँ काल अन्याई ।
बहु विधि तुम को फाँस लियारी ॥ ६ ॥
तुम अनजान मर्म नहिँ जाना ।
छल बल कर इन फाँस लिया री ॥७॥
छूटन की विधि नेक न मानो ।
क्योँकर छूटन होय तुम्हारी ॥ ८ ॥
सतगुरु संत हुए उपकारी ।
उन का संग करो न सम्हारी ॥ ९ ॥
वह दयाल अस जुगत लखावैँ ।
कर देँ तुम छुटकारी ॥ १० ॥
पाँच तत्त गुन तीन जेवरी* ।
काटैँ पल पल बंधन भारी ॥ ११ ॥
उन की संगत करो भर्म तज ।
पाओ तुम गति न्यारी ॥ १२ ॥
जक्त जाल सब धोखा जानो ।
मन मूरख सँग कीन्ही यारी ॥ १३ ॥
इस का संग तजो तुम छिन छिन ।
नहिँ यह लेगा जान तुम्हारी ॥१४॥

* रस्सी ।

अपने घर से दूर पड़ोगे ।
चौरासी के धक्के खा री ॥ १५ ॥
बड़ी कुगति में जाय पड़ोगे ।
वहाँ से तुम को कौन निकारी ॥ १६ ॥
ता ते अबही कहना मानो ।
राधास्वामी कहत बिचारी ॥ १७ ॥

॥ शब्द बारहवाँ ॥

अटक तू क्यों रहा जग में ।
भटक में क्या मिले भाई ॥ १ ॥
खटक तू धार अब मन में ।
खोज सतसंग में जाई ॥ २ ॥
बिरह की आग जब भड़के ।
दूर कर जग की काई ॥ ३ ॥
लगा लो लगन सतगुरु से ।
मिले फिर शब्द लौ लाई ॥ ४ ॥
छुटेगा जन्म और मरना ।
अमर पद जाय तू पाई ॥ ५ ॥
भाग तेरा जगे सोला ।
नाम और धाम मिल जाई ॥ ६ ॥

कहूँ क्या काल जग मारा ।
जीव सब घेर भरमाई ॥ ७ ॥
नहीं कोइ मौत से डरता ।
ख़ौफ़ जम का नहीं लाई ॥ ८ ॥
पड़े सब मोह की फाँसी ।
लोभ ने मार धर खाई ॥ ९ ॥
चेत कहो होय अब कैसे ।
गुरू के संग नहिं धाई ॥ १० ॥
काम और क्रोध बिच बिच में ।
जीव से भाड़* झोंकवाई ॥ ११ ॥
गुरू बिन कोई नहीं अपना ।
जाल यह कौन तुड़वाई ॥ १२ ॥
कुटँब परिवार मतलब का ।
बिना धन पास नहिं आई ॥ १३ ॥
कहाँ लग कहूँ इस मन को ।
उन्हीं से मास नुचवाई ॥ १४ ॥
गुरू और साध कहें बहु बिधि ।
कहन उनकी न पतियाई ॥ १५ ॥

* भट्ठी ।

मेहर बिन क्या कोई माने ।
 कही राधास्वामी यह गाई ॥ १६ ॥

॥ शब्द तेरहवाँ ॥

मिली नर देह यह तुम को ।
 बनाओ काज कुछ अपना ॥ १ ॥
पचो मत आय इस जग में ।
 जानियो रैन का सुपना ॥ २ ॥
देह और ग्रेह* सब झूठा ।
 भर्म में काहे को खपना ॥ ३ ॥
जीव सब लोभ में भूले ।
 काल से कोइ नहीं बचना ॥ ४ ॥
तृष्णा अग्नि जग जारा ।
 पड़ा सब जीव को तपना ॥ ५ ॥
नहीं कोइ राह बचने की ।
 जलें सब नर्क की अगिना ॥ ६ ॥
जलेंगे आग में निस दिन ।
 बहुर भोगें जन्म मरना ॥ ७ ॥
भटकते वे फिरें खानी ।
 नहीं कुछ ठीक उन लगना ॥ ८ ॥

*घर ।

कहूँ क्या दुक्ख वह भोगैं ।
कहन मैं आ नहीं सकना ॥ ९ ॥
दया कर संत और सतगुरु ।
बतावैं नाम का जपना ॥ १० ॥
न मानें जुक्ति यह उनकी ।
सुरत और शब्द का गहना ॥ ११ ॥
बिना सतगुरु बिना करनी ।
छुटे नहिँ खान का फिरना ॥ १२ ॥
कहाँ लग मैं कहूँ उनको ।
कोई नहिँ मानता कहना ॥ १३ ॥
हुए मनमुख फिरैं दुख मैं ।
बचन गुरु का नहीं माना ॥ १४ ॥
पुजावैं आप को जग मैं ।
गुरू की सेव नहिँ करना ॥ १५ ॥
फ़िकर नहिँ जीव का अपने ।
पड़ेगा नर्क मैं फुकना ॥ १६ ॥
समझ कर धार लो मन मैं ।
कहैं राधास्वामी निज बचना ॥ १७ ॥

॥ शब्द चौदहवाँ ॥

यहाँ तुम समझ सोच कर चलना ॥ टेक॥

यह तो राह बड़ी अति टेढ़ी ।
मन के साथ न पड़ना ॥ १ ॥
भौजल धार बहे अति गहरी ।
बिन गुरु कैसे पार उतरना ॥ २ ॥
गुरु से प्रीत करो तुम ऐसी ।
जस कामी कामिन सँग धरना ॥ ३ ॥
संग करो चेटक* चित राखो ।
मन से गुरु के चरन पकड़ना ॥ ४ ॥
छल बल कपट छोड़ कर बरतो ।
गुरु के बचन समझना ॥ ५ ॥
डरते रहो काल के भय से ।
ख़बर नहीं कब मरना ॥ ६ ॥
स्वाँसो स्वाँस होश कर बौरे ।
पल पल नाम सुमिरना ॥ ७ ॥
यहाँ की ग़फ़लत बहुत सतावे ।
फिर आगे कुछ नहिं बन पड़ना ॥ ८ ॥

* सटक ।

जो कुछ बने सो अभी बनाओ ।
फिर का कुछ न भरोसा धरना ॥ ९ ॥
जग सुख की कुछ चाह न राखो ।
दुख में इसके दुखी न रहना ॥ १० ॥
दुख की घड़ी ग़नीमत* जानो ।
नाम गुरू का छिन छिन भजना ॥११॥
सुख में ग़ाफ़िल† रहत सदा नर ।
मन तरंग में दम दम बहना ॥ १२ ॥
ता ते चेत करो सतसंगत ।
दुख सुख नदियाँ पार उतरना ॥१३ ॥
अपना रूप लखो घट भीतर ।
फिर आगे को सूरत भरना ॥ १४ ॥
राधास्वामी कहैं बुझाई ।
शब्द गुरू से जाकर मिलना ॥ १५ ॥

॥ शब्द पंद्रहवाँ ॥

मन रे क्यौं गुमान अब करना ॥ टेक ॥
तन तो तेरा ख़ाक मिलेगा ।
चौरासी जा पड़ना ॥ १ ॥

* अच्छी, उत्तम । †भूला हुआ ।

दीन गरीबी चित में धरना ।
काम क्रोध से बचना ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत गुरू की करना ।
नाम रसायन घट में जरना ॥ ३ ॥
मन मलीन के कहे न चलना ।
गुरु का बचन हिये बिच रखना ॥ ४ ॥
यह मतिमंद गहे नहिं सरना ।
लोभ बढ़ाय उदर को भरना ॥ ५ ॥
तुम मानो मत इसका कहना ।
इसके संग जक्त बिच गिरना ॥ ६ ॥
इस सूरत को समझ पकड़ना ।
गुरु के चरन कभी न बिसरना ॥ ७ ॥
गुरु का रूप नैन में धरना ।
सुरत शब्द से नभ पर चढ़ना ॥ ८ ॥
राधास्वामी नाम सुमिरना ।
जो वह कहैं चित्त में धरना ॥ ९ ॥

॥ शब्द सोलहवाँ ॥

जोड़ो री कोइ सुरत नाम से ॥ टेक ॥

---

*बनाना ।

यह तन धन कुछ काम न आवे ।
पड़े लड़ाई जाम* से ॥ १ ॥
अब तो समय मिला अति सुन्दर ।
सीतल हो बच घाम से ॥ २ ॥
सुमिरन कर सेवा कर सतगुरु ।
मनहि हटाओ काम से ॥ ३ ॥
मन इन्द्री कुछ बस कर राखो ।
पियो घूँट गुरु जाम† से ॥ ४ ॥
लगे ठिकाना मिले मुकामा ।
छूटो मन के दाम‡ से ॥ ५ ॥
भजन करो छोड़ो सब आलस ।
निकर चलो कलि ग्राम से ॥ ६ ॥
दम दम करो बेनती गुरु से ।
वही निकारें तन§ चाम से ॥ ७ ॥
और उपाव न ऐसा कोई ।
रटन करो सुबह शाम से ॥ ८ ॥
प्रीत लाय नित करो साध सँग ।
हट रहो जग के खासो आम से ॥ ९ ॥

* जमराज । † प्याला । ‡ जाल । § शरीर, देह ।

राधास्वामी कहँ सुनाई।
लगो जाय सत नाम से ॥ १० ॥

॥ शब्द सत्रहवाँ ॥

जक्त से चेतन किस बिधि होय।
मोह ने बाँध लिया अब सोहिं ॥१॥
बेड़ियाँ भारी पड़ती जायँ।
फाँसियाँ करड़ी* लागी आयँ ॥ २ ॥
जाल अब चौड़े बिछ गये आय।
चाट अब सुख की कुछ कुछ पाय ॥३॥
दुक्ख अब पीछे होगा आय।
खबर नहिँ उसकी कौन बताय ॥४॥
पड़ेगी भारी इक दिन भीड़।
सहेगा नाना बिधि की पीड़ ॥ ५ ॥
करेगा पछतावा जब बहुत।
अभी तो सुनता नहिँ दिन खोत ॥६॥
याद नहिँ लाता अपनी मौत।
रात दिन गफ़लत मैं पड़ा सोत ॥७॥
कहे मैं मन के चलता बहुत।
भरे है दिन भर जग का पोत† ॥ ८ ॥

* सख़्त। †कर, लगान।

रात को सोता खाट बिछाय ।
होश नहिं कल को क्या होजाय ॥ ९ ॥
काल ने मारा कर कर ज़ेर* ।
कर्म ने खूँदा† घर घर पैर ॥ १० ॥
तमोगुन छाय गया घट माहिं ।
ख़बर सब भूल गया यहँ आय ॥ ११ ॥
संत और सतगुरु रहे चिताय ।
बचन उन मन में नहीं समाय ॥ १२ ॥
भजन और सुमिरन दिया बिसराय ।
प्रीत भी उन चरनन नहिं लाय ॥ १३ ॥
कहो कस छूटे जम की घात ।
भोग और सोग लगे दिन रात ॥ १४ ॥
गुरू बिन कौन छुड़ावे ताय ।
हुआ यह क़ैदी बहु बिधि आय ॥ १५ ॥
बिना सतसंग और बिन नाम ।
न पावे कबही अपना धाम ॥ १६ ॥
कही राधास्वामी यह गति गाय ।
सरन ले संत की तू जाय ॥ १७ ॥

* नीचे । † कुचला ।

॥ शब्द अट्ठारहवाँ ॥

कुमतिया बैरन पीछे पड़ी ।
मैं कैसे हटाऊँ जान ॥ १ ॥
सतगुरु बचन न माने कबही ।
उन सँग धरे गुमान* ॥ २ ॥
काम क्रोध की सनी बुद्धि से ।
परखा चाहे उनका ज्ञान ॥ ३ ॥
सेवा करे न सरधा लावे ।
उलट करावे उन से मान ॥ ४ ॥
अपनी गति हालत नहिं बूझे ।
कैसे लगे ठिकान ॥ ५ ॥
लोभ मोह की सूखी नदियाँ ।
तामें निस दिन रहे भरमान ॥ ६ ॥
संत मता कहो कैसे बूझे ।
अपनी मति के दे परमान ॥ ७ ॥
तिन से संत मौन होय बैठे ।
सो जिव करते अपनी हान ॥ ८ ॥
कुमति अधीन हुए सब प्रानी ।
क्या क्या उनका करूँ बखान ॥ ९ ॥

* अभिमान ।

जिन पर मेहर पड़े आ सरना ।
वह पावैं सतगुरु पहिचान ॥ १० ॥
अपनी उक्ति* चतुरता छोड़ैं ।
अपने को जानैं अनजान ॥ ११ ॥
तब सतगुरु परसन्न होय कर ।
देवैं पता निशान ॥ १२ ॥
कुमति हटाय छुड़ावैं पीछा ।
सुरत लगावैं शब्द धियान ॥ १३ ॥
बिना शब्द उद्धार न होगा ।
सब संतन यह किया बखान ॥ १४ ॥
सोई गावैं राधास्वामी ।
जो कोइ माने सोई सुजान ॥ १५ ॥

॥ शब्द उन्नीसवाँ ॥

सोता मन कस जागे भाई ।
सो उपाव मैं करूँ बखान ॥ १ ॥
तीरथ करे बर्त भी राखे ।
बिद्या पढ़ के हुए सुजान ॥ २ ॥
जप तप संजम बहु बिधि धारे ।
मौनी हुए निदान ॥ ३ ॥

* अक्ल, ख़याल ।

अस उपाव हम बहुतक कीन्हे ।
तौभी यह मन जगा न आन ॥४॥
खोजत खोजत सतगुरु पाये ।
उन यह जुक्ति कही परमान ॥५॥
सतसँग करो संत को सेवो ।
तन मन करो कुर्बान* ॥ ६ ॥
सतगुरु शब्द सुनो गगना चढ़ ।
चेत लगाओ अपना ध्यान ॥ ७ ॥
जागत जागत अब मन जागा ।
झूठा लगा जहान ॥ ८ ॥
मन की मदद मिली सूरत को ।
दोनों अपने महल समान ॥९ ॥
बिना शब्द यह यह मन नहिं जागे ।
करो चाहे कोई अनेक बिधान†॥१०॥
यही उपाव छाँट कर गाया ।
और उपाव न कर परमान ॥११॥
बिरथा बैस‡ बितावैं अपनी ।
लगे न कभी ठिकान ॥१२ ॥

*बलिदान । †विधि । ‡ उमर ।

संत बिना सब भटके डोलें ।
बिना संत नहिं शब्द पिछान ॥१३॥
शब्द शब्द में शब्दहि गाऊँ ।
तू भी सुरत लगा दे तान ॥ १४ ॥
घर पावे चौरासी छूटे ।
जन्म मरन की होवे हान ॥ १५ ॥
राधास्वामी कहें बुझाई ।
बिना सन्त सब भटके खान ॥१६॥

॥ शब्द बीसवाँ ॥

खोज री पिया को निज घट में ॥टेक॥
जो तुम पिया से मिलना चाहो ।
तो भटको मत जग में ॥ १ ॥
तीरथ बर्त कर्म आचारा ।
यह अटकावें मग* में ॥ २ ॥
जब लग सतगुरु मिलें न पूरे ।
पड़े रहोगे अघ† में ॥ ३ ॥
नाम सुधा रस कभी न पाओ ।
भरमो जोनी खग‡ में ॥ ४ ॥

* रास्ता । †पाप । ‡पंछी ।

पण्डित क़ाज़ी भेष शेख़ सब ।
अटक रहे डग डग में ॥ ५ ॥
इन के संग पिया नहिं मिलना ।
पिया मिलै कोइ साध समग* में ॥ ६ ॥
यह तो भूले विषय बास में ।
भर्म धसे इनकी रग रग में ॥ ७ ॥
बिना संत कोइ भेद न पावे ।
वे तोहि कहें अलग में ॥ ८ ॥
जब लग संत मिलें नहिं तुम को ।
खाय ठगौरी तू इन ठग में ॥ ९ ॥
राधास्वामी सरन गहो तो ।
रलो जोति जग मग में ॥ १० ॥

॥ शब्द इक्कीसवाँ ॥

गुरु कहें पुकार पुकार ।
समझ मन कर लो सुमिरनियाँ ॥ १ ॥
स्वाँसो स्वाँस घटे तेरी पूँजी ।
चली जाय यह उमरनियाँ ॥ २ ॥

* संग ।

वक़्त मिला यह तख़्तनशीनी* ।
छोड़ बान† अब घुरबिनियाँ‡ ॥ ३ ॥
यह मारग अब गुरू बतावें ।
पकड़ गहो तुम उर§ धुनियाँ ॥ ४ ॥
शब्द संग तुम सुरत लगाओ ।
रहो नित्त गुरू मुजरनियाँ|| ॥ ५ ॥
दया लेव तुम हर दम उनकी ।
सरन पड़ो उन चरननियाँ ॥ ६ ॥
वह तो भेद बतावें घट का ।
पकड़ शब्द भौ तरननियाँ ॥ ७ ॥
लागी लगन बहुर नहिं सूझे ।
सुरत अजर में जरननियाँ** ॥ ८ ॥
जिन जिन संग करा गुरू पूरे ।
छुटा जन्म और मरननियाँ ॥ ९ ॥
जगत जार तज सार समझ तू ।
मिटे चौरासी भरमनियाँ ॥ १० ॥
सतसँग करो प्रीत घट धारो ।
देख रूप चढ़ दर्पनियाँ†† ॥ ११ ॥

*राजगद्दी पर बैठने का । † आदत । ‡ मुरगी जो घूरा चुगती है । § अंतरी । ||हाज़िर । ** पकाना । †† आईना ।

गगन गिरा परखो धुन बानी ।
यही कमाई करननियाँ ॥ १२ ॥
पहुँचो जाय अधर में प्यारी ।
गाँठ खुले तब तन मनियाँ ॥ १३ ॥
या जग में कोई सुखी न देखो ।
गहो गुरू के बचननियाँ ॥ १४ ॥
दुख के जाल फँसे सब मूरख ।
तू क्यों उन सँग फँसननियाँ ॥ १५ ॥
मैं तू मोर तोर सब त्यागो ।
गहो राधास्वामी सरननियाँ ॥ १६ ॥

*****

## ॥ बचन सोलहवाँ ॥

## ॥ चितावनी भाग तीसरा ॥

## ॥ उपदेश सतगुरू भक्ति का ॥

### ॥ शब्द पहिला ॥

यह तन दुर्लभ तुमने पाया ।
कोट जन्म भटका जब खाया ॥ १ ॥
अब या को बिरथा मत खोवो ।
चेतो छिन छिन भक्ति कमावो ॥ २ ॥

* बानी ।

भक्ति करो तो गुरु की करना ।
मारग शब्द गुरू से लेना ॥ ३ ॥
शब्द मारगी गुरू न होवे ।
तो झूठी गुरुवाई लेवे ॥ ४ ॥
गुरू सोई जो शब्द सनेही ।
शब्द बिना दूसर नहिँ सेई ॥ ५ ॥
शब्द कहा मैं गगन शिखर का ।
शब्द कहा मैं सुन्न शहर का ॥ ६ ॥
शब्द कहा मैं भँवर डगर का ।
शब्द कहा मैं अगम नगर का ॥ ७ ॥
गुरु पहिचान खूब मैं गाई ।
धोखा या मैं कुछ न रहाई ॥ ८ ॥
शब्द कमावे सो गुरु पूरा ।
उन चरनन की होजा धूरा ॥ ९ ॥
और पहिचान करो मत कोई ।
लक्ष* अलक्ष† न देखो सोई ॥ १० ॥
शब्द भेद लेकर तुम उनसे ।
शब्द कमावो तुम तन मन से ॥ ११ ॥

*गुन, लच्छन । †औगुन, कुलच्छन ।

अपने जीव की कुछ दया पालो ।
चौरासी का फेर बचा लो ॥ १२ ॥
नहिं नर्कन में अति दुख पइहो ।
अग्नि कुण्ड में छिन छिन दहिहो* ॥१३॥
यह सुख चार दिनों का भाई ।
फिर दुख सदा होय दुखदाई ॥ १४ ॥
बार बार मैं कहूँ चिताई ।
दया तुम्हारी मोहिं सताई† ॥ १५ ॥
मेरे मन करुना अस आई ।
चेतो तुम गुरु होयँ सहाई ॥ १६ ॥
बिन गुरु और न पूजो कोई ।
दर्शन कर गुरु पद नित सेई ॥ १७ ॥
गुरु पूजा में सब की पूजा ।
जस समुद्र सब नदी समाजा ॥ १८ ॥
देवी देवा ईश महेशा ।
सूरज शेष और गौर गनेशा ॥ १९ ॥
ब्रह्म और पारब्रह्म सतनामा ।
तीन लोक और चौथा धामा ॥ २० ॥

*जलना । † दुख देती है ।

गुरु सेवा में सब की सेवा ।
रंचक* भर्म न मानो भेवा† ॥ २१ ॥
ता ते बार बार समझाऊँ ।
गुरु की भक्ती छिन छिन गाऊँ ॥ २२ ॥
गुरुमुख होय गुरु आज्ञा बरते ।
गुरु बरती इक छिन में तरते ॥ २३ ॥
गुरु महिमा मैं कहाँ लग गाऊँ ।
गुरु समान कोइ और न पाऊँ ॥ २४ ॥
गुरु अस्तुत है सब मत माहीं ।
गुरु से बेमुख ठौर‡ न पाहीं ॥ २५ ॥
भोग बिलास हुकूमत जग की ।
धन और हाकिम के बस रहती ॥ २६ ॥
हाकिम सेवा तुम कस करते ।
धन और मान बड़ाई लेते ॥ २७ ॥
आज्ञा उसकी अस सिर धरते ।
खान पान निद्रा भी तजते ॥ २८ ॥
सो धन जोड़ किया क्या भाई ।
जक्त लाज में दिया उड़ाई ॥ २९ ॥

* कुछ भी । † भेद । ‡ जगह ।

सो जग की गति पहिले भाखी ।
चार दिना फिर है नहिं बाक़ी ॥३०॥
सो धन कारण हाकिम सेवा ।
ऐसी करते क्या कहुँ भेवा* ॥ ३१ ॥
गुरु सेवा जो सदा सहाई ।
ता को ऐसी पीठ दिखाई ॥ ३२ ॥
दिन नहिं पक्ष मास नहिं बरसा ।
कभी न दर्शन को मन तरसा ॥ ३३ ॥
कहो कैसे तुम्हरा उद्धारा ।
नर्क निवास दुक्ख चौधारा ॥ ३४ ॥
उस दुख में कहो कौन सहाई ।
गुरु से प्रीत न करी बनाई ॥ ३५ ॥
जो इसकी परतीत न लाओ ।
तो मन अपना यों समझाओ ॥ ३६ ॥
रोग दुक्ख नित प्रती सताई ।
मौत पियादे हैं यह भाई ॥ ३७ ॥
मृत्यु होन में नहिं कुछ संसा ।
वह तो करे सकल जिव हिंसा ॥ ३८ ॥

* भेद ।

यह हिंसा तुम पर भी आवे ।
इक दिन काल सीस पर धावे ॥ ३९ ॥
उस दिन का कुछ करो उपाई ।
धन हाकिम कुछ काम न आई ॥४०॥
पर जो समझवार तुम होते ।
तो धन से कुछ कारज लेते ॥ ४१ ॥
कारज लेना यह है भाई ।
गुरु सेवा में खर्च कराई ॥ ४२ ॥
गुरु नहिं भूखा तेरे धन का ।
उन पै धन है भक्ति नाम का ॥ ४३ ॥
पर तेरा उपकार करावैं ।
भूखे प्यासे को दिलवावैं ॥ ४४ ॥
उनकी मेहर मुफ़ तू पावे ।
जो उनको परसन्न करावे ॥ ४५ ॥
उनका खुश होना है भारी ।
सत्तपुरुष निज किरपा धारी ॥ ४६ ॥
गुरु परसन्न होयँ जा ऊपर ।
वही जीव है सब के ऊपर ॥ ४७ ॥

गुरु राज़ी तो करता राज़ी ।
कर्म काल की चले न बाज़ी ॥ ४८ ॥
गुरु की आन सभी मिल मानैं ।
सुकदेव नारद व्यास बखानैं ॥ ४९ ॥
ताते गुरु को लेव रिझाई ।
औरन रीझे कुछ न भलाई ॥ ५० ॥
गुरु परसन्न और सब रूठे ।
तो भी उसका रोम न टूटे ॥ ५१ ॥
औरन को परसन्न जो करता ।
गुरु से द्रोह घात जो रखता ॥ ५२ ॥
गुरु की निन्दा से नहिँ डरता ।
गुरु को मानुष रूप समझता ॥ ५३ ॥
सो नरकी जानो अपघाती† ।
उस सँग दूत करैं उतपाती ॥ ५४ ॥
या ते समझो बूझो भाई ।
गुरु को परसन करो बनाई ॥ ५५ ॥
कुल कुटम्ब कुछ काम न आई ।
और बिरादरी करे न सहाई ॥ ५६ ॥

*पद्द । †अपने जीव का घात करनेवाला ।

यह तो चार दिना के संगी ।
इन निज स्वारथ मैं बुधि रंगी ॥ ५७ ॥
लज्जा डर इन का मत करो ।
गुरु भक्ती मैं अब चित धरो ॥ ५८ ॥
गुरु सहायता यहाँ वहाँ करैं ।
उन से करता भी कुछ डरे ॥ ५९ ॥
कुल कुटम्ब से कुछ नहिं सरे ।
इन के संग नर्क मैं पड़े ॥ ६० ॥
कार्य मात्र बरतो इन माहीं ।
बहुत मोह मैं बहु दुख पाई ॥ ६१ ॥
तातें सतसँग सतगुरु सेवो ।
नाम पदारथ दम दम लेवो ॥ ६२ ॥
गुरु समान और नाम समाना ।
तीसर सतसँग और न जाना ॥ ६३ ॥
इन से सब कारज होयँ पूरे ।
कर्म काट पहुँचो घर सूरे* ॥ ६४ ॥
यह कहना मेरा अब मानो ।
नहीं अन्त को पड़े पछतानो ॥ ६५ ॥

* मूल ।

धन और माल काम नहिँ आवे ।
हुक्म हाकिमी सभी नसावे ॥ ६६ ॥
ता ते कुछ भक्ती कर लीजे ।
यह भी सुफल कमाई कीजे ॥ ६७ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

भेद आरती सुन सखि मोसे ।
प्रगट बनाय कहूँ अब तो से ॥ १ ॥
सरधा थाल हाथ लो पहिले ।
सम* दम† जोत प्रेम घी मेले ॥ २ ॥
जक्त भोग से कर बैरागा ।
काम क्रोध तब छिन में त्यागा ॥ ३ ॥
सुरत शब्द का गावो गीत ।
गुरु चरनन में जोड़ो चीत ॥ ४ ॥
दया करें तब राधास्वामी ।
इक दिन देवें पद निज नामी ॥ ५ ॥
दृष्टि जोड़ कर आरत फेरो ।
तन मन अपने दोऊँ घेरो ॥ ६ ॥
पूरन पद को करो पयाना‡ ।
सत्त नाम तब सुरत समाना ॥ ७ ॥

*मन का रोकना । †इन्द्रियों का रोकना । ‡चलने की तैयारी ।

आरत गाई प्रेम भक्ति से ।
मन को मोड़ा शब्द जुक्ति से ॥ ८ ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

सोचत कहा सखि करले आरत ।
फिर नहिं ऐसा समय परापत ॥ १ ॥
कहा करूँ सजनी मैं बिन बल ।
तन मन मेरा है अति चंचल ॥ २ ॥
कर धीरज मैं करूँ उपाई ।
सतसँग कर स्वामी ढिंग* जाई ॥ ३ ॥
वे दयाल जब किरपा धारैं ।
मन चंचल को छिन में मारैं ॥ ४ ॥
शब्द थाल देवैं सुत हाथा ।
प्रेम जोत जगवावैं साथा ॥ ५ ॥
जब आरत तू करे बनाई ।
तबही मुक्ति पदारथ पाई ॥ ६ ॥
यह निश्चय कर साँची जानो ।
तुम स्वामी को समरथ मानो ॥ ७ ॥
भोग लगाय लेव परशादी ।
चरनामृत ले मन को साधी ॥ ८ ॥

* निकट ।

राधास्वामी जप निज नामा ।
सत्तलोक पावे तब धामा ॥ ९ ॥

*****

॥ बचन सत्रहवाँ ॥

॥ चितावनी भेषों को ॥

॥ भाग चौथा ॥

॥ शब्द पहिला ॥

तुम साध कहावत कैसे ।
मैं पूछूँ तुम से ऐसे ॥ १ ॥
मान न छोड़ो क्रोध न छोड़ो ।
कुटिल बचन नहिं सहते ॥ २ ॥
कोमल चित्त न कोमल बोली ।
दया भाव नहिं लेसे* ॥ ३ ॥
आप पुजावत काहु न पूजत ।
माँग माँग धन जोड़त पैसे ॥ ४ ॥
काम न छूटा लोभ न छूटा ।
मोह ईर्षा डारत पीसे ॥ ५ ॥
भजन भक्ति अभ्यास न करते ।
कभी न छूटो तुम इस जम से ॥६॥

* ज़रा सा भी ।

घर छोड़ा उद्यम पुनि छोड़ा ।
मेहनत कोई न करते ॥ ७ ॥
देश बिदेश फिरो भख मारत ।
कफ़न* पहिन क्यों लाज लगाते ॥८॥
दंभ† कपट छल हिरदे बसता ।
गिरही‡ को आचार दिखाते ॥९॥
चौके से हम रोटी खावें ।
रोटी पूरी भेद समझते ॥ १० ॥
बुद्धि बिचार न गुरु मिला पूरा ।
गिरही की भय लज्जा करते ॥११॥
साध चरन अठशठ§ से उत्तम ।
भूमि पवित्र जहाँ पग धरते ॥ १२ ॥
तुम तो कर्म भर्म में भटके ।
साध नाम अपना क्यों धरते ॥१३॥
भेष बनाय जगत को ठगते ।
काल ठगौरी‖ डाली तुम पै ॥ १४ ॥
अब कुछ समझ करो सतसंगत ।
डरो ज़रा नर्कन के दुख से ॥ १५ ॥

*कफ़नी या साधुओं का कपड़ा । † फ़रेब । ‡ गृहस्ती । § तीरथ ।
‖ ठगाई या फ़रेब ।

बिरह भाव बैराग सम्हालो ।
भक्ति करो और भागो जग से ॥१६॥
मन को मारो इंद्री बाँधो ।
सुरत लगाओ शब्द अधर से ॥१७॥
तब चित्त कोमल बुद्धी निरमल ।
आप होय छूटो मन ठग से ॥१८॥
अब क्या कहूँ कहा मैं बहुतक ।
अधिकारी माने इक तुक* से ॥१९॥
जो निलज्ज कपटी जग मारे ।
वह क्या जानें भूत पशू से ॥ २० ॥
राधास्वामी कहत सुनाई ।
मानेंगे कोई हंस बचन से ॥ २१ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

शब्द की करी न कोई कमाई ।
फिर मर्म कहाँ से पाई ॥ १ ॥
यह शब्द अधर से आता ।
तू सुन सुन कर क्या गाता ॥ २ ॥
अंतर में सुरत लगाता ।
तो भेद अधर का पाता ॥ ३ ॥

* कड़ी, वचन ।

यह कहना सभी भुलाता ।
बिन शब्द न और सुहाता ॥ ४ ॥
तू शब्द न ढूढ़ कर गहता ।
ता ते मन छिन छिन बहता ॥ ५ ॥
जो शब्द हाथ तेरे आता ।
तो होता मन रस माता* ॥ ६ ॥
बिन शब्द न और कमाता ।
इच्छा सब दूर बहाता ॥ ७ ॥
कोइ महिमा शब्द सुनाता ॥
तू उस से प्रेम बढ़ाता ॥ ८ ॥
तैं क़दर शब्द नहिँ जानी ।
तेरी बातैं झूठ कहानी ॥ ९ ॥
जो शब्द का रसिया होता ।
तो मान प्रतिष्ठा खोता ॥ १० ॥
तेरी दशा और ही होती ।
तेरी सुरत न कबही बहती ॥ ११ ॥
अब बात बना तू बहुती ।
पर शब्द कमाई न होती ॥ १२ ॥

* मतवाला ।

जिन शब्द कमाया भाई ।
उन सुरत अगम रस पाई ॥ १३ ॥
सब जक्त लगा उन फीका ।
इक शब्द सभी का टीका* ॥ १४ ॥
राधास्वामी गायें यह ठीका ।
जिन माली तिन रस चीखा ॥ १५ ॥

******

॥ बचन अट्ठारहवाँ ॥

॥ उपदेश सतगुरु भक्ती का ॥

॥ शब्द पहिला ॥

गुरु करो खोज कर भाई ।
बिन गुरु कोइ राह न पाई ॥ १ ॥
जग डूबा भौजल धारा ।
कोइ मिला न काढ़नहारा† ॥ २ ॥
जग पंडित भेष बिचारे ।
क्या जोगी ज्ञानी हारे ॥ ३ ॥
संतन से प्रीत न धारी ।
क्यों उतरें भौजल पारी ॥ ४ ॥

* सिर याने सब से बड़ा । † निकालने वाला ।

तप तीरथ बर्त पचे रे ।
पढ़ बिद्या मान भरे रे ॥ ५ ॥
भक्ती रस नेक न पाया ।
भक्तों की सरन न आया ॥ ६ ॥
भक्ती का भेद न जाना ।
गुरु को सतपुरुष न माना ॥ ७ ॥
गुरु सब को पार लगावें ।
जो जो उन चरन धियावें ॥ ८ ॥
गुरु से तू बेमुख फिरता ।
मन के नित सन्मुख रहता ॥ ९ ॥
करमों में पचता खपता ।
नर देही बाद* गँवाता ॥ १० ॥
अब चेतो समझो भाई ।
कर प्रीत गुरू सँग आई ॥ ११ ॥
कह कर राधास्वामी गाई ।
करनी कर मिले बड़ाई ॥ १२ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

गुरु की कर हर दम पूजा ।
गुरु समान कोइ देव न दूजा ॥ १ ॥

*निष्फल ।

गुरु चरन सेव नित करिये ।
तन मन गुरु आगे धरिये ॥ २ ॥
गुरु दरस करो आँखन से ।
गुरु बचन सुनो सरवन से ॥ ३ ॥
गुरु के बल मन को मारो ।
गुरु के बल काल सँघारो ॥ ४ ॥
गुरु ब्रह्म रूप धर आये ।
गुरु पारब्रह्म गति गाये ॥ ५ ॥
गुरु सत्तनाम पद खोला ।
गुरु अलख अगम को तोला ॥ ६ ॥
गुरु रूप धरा राधास्वामी ।
गुरु से बड़ नहीं अनामी ॥ ७ ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

गुरु ध्यान धरो तुम मन में ।
गुरु नाम सुमिर छिन छिन में ॥ १ ॥
गुरु ही गुरु गावो भाई ।
गुरु ही फिर होयँ सहाई ॥ २ ॥
जितने पद ऊँचे नीचे ।
गुरु बिन कोइ नाहिँ पहुँचे ॥ ३ ॥

गुरु ही घट भेद लखाया ।
गुरु ही सुन शिखर चढ़ाया ॥ ४ ॥
महासुन्न भी गुरु दिखलाई ।
गुरु भँवरगुफा दरसाई ॥ ५ ॥
गुरु सत्तलोक पहुँचाया ।
गुरु अलख अगम परसाया ॥ ६ ॥
गुरु ही सब भेद बखाना ।
गुरु से राधास्वामी जाना ॥ ७ ॥

॥ शब्द चौथा ॥

गुरु चरन पकड़ दृढ़ भाई ।
गुरु का सँग करो बनाई ॥ १ ॥
गुरु बचन करो आधारा ।
गुरु दरस निहारो सारा ॥ २ ॥
गुरु की गति अगम अपारा ।
गुरु अस्तुति करो सँवारा ॥ ३ ॥
गुरु राखो हिरदे माहीं ।
तो मिटे काल परछाहीं ॥ ४ ॥
भोगौं की आसा त्यागो ।
मनसा तज जग से भागो ॥ ५ ॥

आसा गुरु शब्द लगाओ ।
मन्सा गुरु पद में लाओ ॥ ६ ॥
आसा और मन्सा मोड़ी ।
मन इन्द्री गुरु में जोड़ी ॥ ७ ॥
दिन रात रहे गुरु ध्याना ।
गुरु बिन कोइ और न जाना ॥ ८ ॥
गुरु स्वाँस गिरास न बिसरे ।
तू पल पल गा गुरु जस* रे ॥ ९ ॥
गुरु हैं हितकारी तेरे ।
गुरु बिन कोइ मित्र न है रे ॥ १० ॥
गुरु फंद छुड़ावें जम के ।
गुरु मर्म लखावें सम के ॥ ११ ॥
भौजल से पार उतारें ।
छिन छिन में तुझे सँवारें ॥ १२ ॥
ज्यों निज अंडा सेवे कच्छा ।
त्यों गुरु राखें तेरी पच्छा ॥ १३ ॥
गुरु सम और नहीं को रक्षक ।
कुल कुटंब सब जानो तक्षक† ॥ १४ ॥

* महिमा । † साँप ।

ता ते गुरु को कभी न छोड़ो ।
कनक कामिनी से मन मोड़ो ॥ १५ ॥
गुरु की भक्ति सदा सुखदाई ।
गुरु बिन मन बुधि भी दुखदाई ॥ १६ ॥
गुरु बिस्वास चित्त में धरो ।
गुरु परशाद जक्त से तरो ॥ १७ ॥
मान मोह मद गुरु सब हरैं ।
काम क्रोध भी तुझ से डरैं ॥ १८ ॥
लोभ लहर सब देयँ निकारी ।
माया ममता बाज़ी हारी ॥ १९ ॥
तुझ से जीत सके नहिँ कोई ।
गुरु का बल जो मन में होई ॥ २० ॥
गुरु से पावे नाम रसायन ।
घट से भागे तृष्णा डायन ॥ २१ ॥
गुरु चरनामृत गुरु परशादी ।
प्रीत सहित ले मिटे उपाधी ॥ २२ ॥
गुरु पै तन मन दोनों वारो ।
हिरदे में गुरु रूप निहारो ॥ २३ ॥

गुरु हैं दाता गुरु हैं दानी ।
गुरु आराधो* छिन छिन प्रानी ॥ २४॥
सतपुरुष सतनाम गुरू हैं ।
अलख रूप और अगम गुरू हैं ॥ २५ ॥
राधास्वामी गुरु का नाम ।
निज पद पाय करो बिसराम ॥ २६ ॥
गुरु सब बिधि हैं अंतरजामी ।
गावो ध्यावो राधास्वामी ॥ २७ ॥

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

सतगुरु का नाम पुकारो ।
सतगुरु को हियरे धारो ॥ १ ॥
सतगुरु का करो भरोसा ।
फिर करो न कुछ अफ़सोसा ॥ २ ॥
सतगुरु तोहि छिन छिन पोसैं ।
हँगता† तेरी सब बिधि खोसैं‡ ॥ ३ ॥
तू कर उन चरनन होसैं ।
सतगुरु से मत कर रोसैं§ ॥ ४ ॥
सतगुरु गति अब सुन मो से ।
कहि जात न रंचक|| मुँह से ॥ ५ ॥

* पूजा करो । † अहंकार । ‡ दूर करें । § रूठना । || थोड़ी ।

हलवें में खेंचें नौ से ।
फिर एक करें तोहि दो से ॥ ६ ॥
श्रद्धा रस तोहि पिलावें ।
जमपुर से फेर बचावें ॥ ७ ॥
घर अगम तोहि दरसावें ।
मारग सब तोहि लखावें ॥ ८ ॥
जो संगत उनकी करते ।
सो जग से कभी न डरते ॥ ९ ॥
जो बेमुख गुरु से फिरते ।
सो भौसागर में गिरते ॥ १० ॥
चौरासी चक्कर खावें ।
फिर जन्म जन्म दुख पावें ॥ ११ ॥
तुम सोचो अपने मन में ।
कोइ नाहिं गुरू सम जग में ॥ १२ ॥
जिन जिन गुरु भक्ती धारी ।
सो पहुँचे निज दरबारी ॥ १३ ॥
गुरु भक्ति न जिन को प्यारी ।
तिन जीती बाज़ी हारी ॥ १४ ॥

गुरु चरनन आशिक़ होना।
यह बात बड़ी क्या कहना ॥ १५ ॥
गुरु लगें जिसे अति प्यारे।
तिन कुल कुटंब सब तारे ॥ १६ ॥
धन पिता मात उन जन के।
जिन भक्ति करी कुल तज के ॥ १७ ॥
जिन सही मलामत* जग की।
तिन मिली रास† सुख घर की ॥ १८ ॥
जो कुल लाज जक्त से डरे।
गुरु भक्ती से वह पुनि गिरे ॥ १९ ॥
सूरा रन से कभी न टरे।
सती सदा मुरदे सँग जरे ॥ २० ॥
रण छोड़े कायर कहलाय।
सती फिरे भंगी घर जाय ॥ २१ ॥
पपिहा अपना पन नहिँ त्यागे।
जले पतँगा जोती आगे ॥ २२ ॥
मछली को जैसे जल धारा।
गुरुमुख को सतगुरु अस प्यारा ॥ २३ ॥

* निन्दा। † भंडार, ढेरी।

जिन पर बख़्शिश गुरु की होई ।
गुरुमुख ऐसा बिरला कोई ॥ २४ ॥
राधास्वामी कही बनाय ।
सेवक को गुरु दिया जगाय ॥ २५ ॥

॥ शब्द छठवाँ ॥

सतगुरु कहें करो तुम सोई ।
मन के कहे चलो मत कोई ॥ १ ॥
यह भौ में ग़ोते दिलवावे ।
सतगुरु से बेमुख करवावे ॥ २ ॥
काल चक्र में डाल घुमावे ।
मोह जाल में बहुत फसावे ॥ ३ ॥
मित्र न जानो बैरी पूरा ।
गुरु भक्ती से डारे दूरा ॥ ४ ॥
दारा सुत सम्पति परवारा ॥
डारे काम क्रोध की धारा ॥ ५ ॥
इन्द्री भोग बास भरमावे ।
भक्ति बिबेक नाश करवावे ॥ ६ ॥
सतगुरु प्रीतम मिलें न जब तक ।
कभी न छूटें मन के कौतुक* ॥ ७ ॥

* खेल ।

छल बल मन के कहँ लग बरनूँ ।
ऋषी मुनी कोइ जाने न मरमूँ ॥ ८ ॥
ता ते सतगुरु खोजो निज के ।
बिन सतगुरु कोइ चले न बच के ॥ ९ ॥
सतगुरु सम प्रीतम नहिँ कोई ।
मन मलीन को धोवैं वोही ॥ १० ॥
मेरा भाग उदय हुआ भारी ।
सतगुरु की मैं हुई अति प्यारी ॥ ११ ॥
जक्त जीव कहा जानैं महिमा ।
बेद कतेब न जानैं मरमा ॥ १२ ॥
ज्ञानी जोगी सब थक हारे ।
सतगुरु महिमा कोइ न बिचारे ॥ १३ ॥
ता ते सतगुरु सरन पुकारूँ ।
आरत उनकी नित प्रति धारूँ ॥ १४ ॥
आरत करूँ प्रेम से जबही ।
कुल परिवार तरे मेरा तबही ॥ १५ ॥
आरत बिधि अब करूँ सिँगारा ।
राधास्वामी मेरे हुए दयारा ॥ १६ ॥

* खेल ।

राधास्वामी परम दयाल ।
कर आरत उन हुआ निहाल ॥ १७ ॥

॥ शब्द सातवाँ ॥

अरे मन रँग जा सतगुरु प्रीत ।
होय मत और किसी का मीत ॥ १ ॥
यही अब धारो हित कर चीत ।
बिना गुरु जानो सभी अनीत* ॥ २ ॥
गुरू से लेना जा उन सीत† ।
तजो सब कलमल रहो अतीत‡ ॥ ३ ॥
मार लो मन को यही पलीत§ ।
सुरत सँ धरो शब्द की रीत ॥ ४ ॥
चढ़ो तुम नभ सँ यह जग जीत ।
गहो अब संतन की यह नीत|| ॥ ५ ॥
गुरू का नाम सम्हारो चीत ।
लगाओ छिन छिन उन से प्रीत ॥ ६ ॥
गायँ राधास्वामी यह निज गीत ।
तजो सब छल बल ममता तीत** ॥ ७ ॥

* इनसाफ़ से रहित । † परशादी । ‡ निर्माया । § मैला, मलीन ।
|| क़ानून, नियम । ** माया ।

॥ शब्द आठवाँ ॥

गुरू की मौज रहो तुम धार ।
गुरू की रज़ा* सम्हालो यार ॥ १ ॥
गुरू जो करैं सो हित कर जान ।
गुरू जो कहैं सो चित धर मान ॥ २ ॥
शुकर† की करना समझ बिचार ।
सुक्ख दुख देंगे हिकमत धार ॥ ३ ॥
ताड़ और मार करैं सोइ प्यार ।
भोग सब इन्द्री रोग निहार ॥ ४ ॥
कहूँ क्या दम दम शुकरगुज़ार ।
बिना उन और न करनेहार ॥ ५ ॥
दुखी चित से न हो दुख लार ।
सुखी होना नहीं सुख जार ॥ ६ ॥
बिसारो मत उन्हैं हर बार ।
दुक्ख और सुक्ख रहो उन धार ॥ ७ ॥
गुरू और शब्द ये दोउ मीत ।
नहीं कोइ और इन घर चीत ॥ ८ ॥
यही सतपुरुष यही करतार ।
लगावैं तोहि इक दिन पार ॥ ९ ॥

* प्रसन्नता । † धन्यवाद ।

बिना उन कोई नहीं संसार।
देव मन सूरत उन पर वार ॥ १० ॥
करें वह नित्त तेरी सार।
तेरे तन मन के हैं रखवार ॥ ११ ॥
शुकर कर राख हिरदे धार।
मिटावें दुक्ख सबही झाड़* ॥ १२ ॥
करें क्या मन तेरा नाकार।
नहीं तू छोड़ता बिष धार ॥ १३ ॥
भोग में गिरे बारम्बार।
न माने कहन उन की सार ॥ १४ ॥
इसी से मिले तुझ को दंड।
नहीं तू मानता मतिमंद ॥ १५ ॥
सहो अब पड़े जैसी आय।
करो फ़र्याद गुरु से जाय ॥ १६ ॥
पकड़ फिर उन्हीं को तू धाय।
करेंगे वोही तेरी सहाय ॥ १७ ॥
बिना उन और नहीं दरबार।
रहो उन चरन में हुशियार ॥ १८ ॥

* सब।

गुनह* तुम किये दिन और रात ।
गुरू की कुछ न मानी बात ॥ १९ ॥
इसी से भोगते दुख घात† ।
बचावैंगे वही फिर तात ॥ २० ॥
रहो राधास्वामी के तुम साथ ।
लगे फिर शब्द अगम तुम हाथ ॥२१॥

॥ शब्द नवाँ ॥

आज सखि काज करो कुछ अपना ।
गुरु दरस तको छोड़ो जग सुपना ॥१॥
नहिं पछितेहो सिर धुन रोइहो ।
जम की नगरिया अनेक दुख सहिहो॥२॥
मानो बचन सुनो धर कान ।
सुरत लगाय सुनो धुन तान ॥ ३ ॥
नहिं मर मर जइहो चारो खान ।
मान मान अब मेरी कही मान ॥ ४ ॥
गुरू के चरन का कर तू ध्यान ।
शान‡ गुमान छोड़ अभिमान ॥ ५ ॥
गुरु बिन तेरा कौन सहाई ।
तास बिना को पार लगाई ॥ ६ ॥

* पाप । † चोट, बिना मालूम मार । ‡ शेखी, अकड़ ।

आज काज कर गुरु सँग भाज ।
सूना पड़ा तेरा तख़्त और ताज ॥ ७ ॥
शब्द पिछान सुरत निज साज ।
छोड़ जक्त और कुल की लाज ॥ ८ ॥
मन और सुरत गुरू सँग साँज ।
नहिं फिर खुलिहै तेरा पाज* ॥ ९ ॥
कूड़ फटक ले गुरु का छाज† ।
भोग बिलास छोड़ यह खाज‡ ॥ १० ॥
राधास्वामी कही बनाई ।
जो नहिं मानो मुक्तो भाई ॥ ११ ॥

॥ शब्द दसवाँ ॥

गुरु दरियाव चलो सुत सजनी ।
मन की लहर सम्हार ॥ १ ॥
चित से चेत खेत को जीतो ।
यह औसर नहिं बारम्बार ॥ २ ॥
तेरा भाग बढ़ा गुरु किरपा ।
न्हाओ अमृत धार ॥ ३ ॥
मोती चुनो हंस गति धारो ।
चढ़ो अंड§ के पार ॥ ४ ॥

* कलई । † सूप । ‡ खुजली का रोग । § सहसदल कँवल ।

खंड खंड ब्रह्मण्ड पसारा ।
निरखो नैन निहार ॥ ५ ॥
कँवल पार दल द्वार खोलकर ।
पहुँची सुन्न मँझार ॥ ६ ॥
दीपक हाथ चली घर अपने ।
मेटत घट अँधियार ॥ ७ ॥
धुन धधकार आदि की आई ।
पकड़ी ज्यों मक* तार ॥ ८ ॥
समुँद पार सेता पद न्यारी ।
सुनत भँवर गुंजार† ॥ ९ ॥
सुन्न शब्द सत शब्द अधारी ।
पाया गुरु दरबार ॥ १० ॥
सतगुरु प्रेम मगन लौ लाई ।
बिसरी सब संसार ॥ ११ ॥
सार शब्द जहँ तेज अनामी ।
नाम रूप से न्यार ॥ १२ ॥
संत धाम निज अलख अगम पर ।
सुत पाया सिंगार ॥ १३ ॥

* मकड़ी । † शब्द आवाज़ ।

राधास्वामी अचल मुक़ामी ।
मैं उनके बलिहार ॥ १४ ॥
यही आरती करूँ गुरू की ।
धसी वार से पार ॥ १५ ॥

॥ शब्द ग्यारहवाँ ॥

नैन कँवल गुरु ताक ।
अरे मन भँवरा ॥ १ ॥
तू निर्मल सीतल होय ।
सुन अनहद घोरा* ॥ २ ॥
तेरा भाग बढ़ेगा भाई ।
कर घट में दौरा ॥ ३ ॥
त्रिकुटी में मेघा गरजे ।
तू होजा मोरा ॥ ४ ॥
सुत तोड़ा नभ का द्वारा ।
वहाँ करती शोरा ॥ ५ ॥
सुत सेत पदम पर आई ।
गया काल का ज़ोरा ॥ ६ ॥
राधास्वामी रूप दिखाया ।
मन सूरत मोड़ा ॥ ७ ॥

* आवाज़ ।

॥ शब्द बारहवाँ ॥

सतसँग करत बहुत दिन बीते ।
अब तो छोड़ पुरानी बान ॥ १ ॥
कब लग करो कुटिलता गुरु से ।
अब तो गुरु को लो पहिचान ॥२॥
गुरु को तुम मानुष मत जानो ।
वे हैं सत्तपुरुष की जान ॥ ३ ॥
जैसे तैसे मन समझावो ।
धर परतीत करो उन ध्यान ॥ ४ ॥
दया मेहर से बचन सुनावें ।
वे हैं पूरन पुरुष अनाम ॥ ५ ॥
धरी देह मानुष की गुरु ने ।
ज्यों त्यों तेरा करें कल्यान ॥ ६ ॥
सेवा कर पूजा कर उन की ।
उनहीं को गुरु नानक जान ॥ ७ ॥
वही कबीर वही सतनामा ।
सब संतन को वहीं पिछान॥ ८ ॥
तेरा काज उन्हीं से होगा ।
मत भटके तू तज अभिमान ॥ ९ ॥

चूके मत औसर अब पाया ।
बढ़कर इन से कोइ न मिलान ॥१०॥
जो अब के तू गुरु से चूका ।
तौ भरमेगा चारौं खान ॥ ११ ॥
फिर ऐसे गुरु मिलैं न कबही ।
मान मान तू अबही मान ॥ १२ ॥
पढ़ पढ़ पोथी गा गा साखी ।
क्यौं मन मैं तू धरता मान ॥ १३ ॥
इसी मान ने ख़्वार* किया है ।
यही मान अब करता हान ॥ १४ ॥
ता ते प्यारे कहूँ बुझाई ।
यह इस्तिग़ना† भली न जान ॥ १५ ॥
जल्दी करो कपट को छोड़ो ।
सरधा भाव बढ़ावो आन ॥ १६ ॥
इतने पर मन कहा न माने ।
तौ फिर अपनी तूही जान ॥ १७ ॥
सिर पर तेरे हुकम काल का ।
ता ते मन तेरा नहिँ मान ॥ १८ ॥

* ख़राब । † बेपरवाही ।

लगा रहेगा सँग मैं गुरु के ।
सहज सहज शायद मन मान ॥१९॥
एक बात जानी हम भाई ।
है तू बढ़का बेईमान ॥ २० ॥
राधास्वामी कहैं बुझाई ।
ऐसे जीव होयँ हैरान ॥ २१ ॥

*****

## ॥ बचन उन्नीसवाँ ॥

## उपदेश गुरू और शब्द अथवा नाम भक्ती का

### ॥ शब्द पहिला ॥

चेतो मेरे प्यारे तेरे भले की कहूँ ॥ १ ॥
गुरु तो पूरा ढूँढ़ तेरे भले की कहूँ ॥ २ ॥
शब्द रता गुरु देख तेरे भले की कहूँ ॥ ३ ॥
तिस गुरु सेवा धार तेरे भले की कहूँ ॥४॥
गुरु चरनामृत पी तेरे भले की कहूँ ॥५॥
गुरु परशादी खाव तेरे भले की कहूँ ॥६॥
गुरु आरत करले तेरे भले की कहूँ ॥७॥

तन मन भेंट चढ़ाव तेरे भले की कहूँ ॥८॥
बचन गुरू के मान तेरे भले की कहूँ ॥९॥
गुरु को कर परसन्न तेरे भले की कहूँ ॥१०॥
नित्त भजन कर नेम तेरे भले की कहूँ ॥११॥
जीव दया तू पाल तेरे भले की कहूँ ॥१२॥
दुक्ख न दे तू काय तेरे भले की कहूँ ॥१३॥
बचन तान मत मार तेरे भले की कहूँ ॥१४॥
कड़ुवा तू मत बोल तेरे भले की कहूँ ॥१५॥
सबको सुख पहुँचाव तेरे भले की कहूँ॥१६॥
नाम अमी रस पीव तेरे भले की कहूँ ॥१७॥
सील छिमा चित राख तेरे भले की कहूँ।१८॥
संतोष बिबेक बिचार तेरे भले की कहूँ।।१९॥
काम क्रोध को त्याग तेरे भले की कहूँ॥२०॥
लोभ मोह को टार तेरे भले की कहूँ ॥२१॥
दीन ग़रीबी धार तेरे भले की कहूँ ॥२२॥
संतों से कर प्रीत तेरे भले की कहूँ॥ २३ ॥
भोजन बहुत न खाव तेरे भले की कहूँ ॥२४॥
सतसँग में तू जाग तेरे भले की कहूँ ॥ २५ ॥

मान बड़ाई छोड़ तेरे भले की कहूँ ॥२६॥
भोग बासना जार तेरे भले की कहूँ ॥२७॥
सम दम हिरदे धार तेरे भले की कहूँ ॥२८॥
बैराग भक्ति ना छोड़ तेरे भले की कहूँ ॥२९॥
गुरु स्वरूप धर ध्यान तेरे भले की कहूँ ॥३०॥
गुरु ही का जप नाम तेरे भले की कहूँ ॥३१॥
गुरु अस्तुत कर नित्त तेरे भले की कहूँ ॥३२॥
गुरु से प्रेम बढ़ाव तेरे भले की कहूँ ॥३३॥
तीरथ मूरत भर्म तेरे भले की कहूँ ॥३४॥
ज़ात अभिमान बिसार तेरे भले की कहूँ ३५॥
पिछलों की तज टेक तेरे भले की कहूँ ॥ ३६॥
वक्त गुरू को मान तेरे भले की कहूँ ॥३७॥
तीरथ गुरु के चरन तेरे भले की कहूँ ॥ ३८॥
गुरु की सेवा बर्त तेरे भले की कहूँ ॥३९॥
विद्या गुरु उपदेश तेरे भले की कहूँ ॥४०॥
और विद्या पाखंड तेरे भले की कहूँ ॥४१॥
लीक* पुरानी छोड़ तेरे भले की कहूँ ॥४२॥
जो गुरु कहैं सो मान तेरे भले की कहूँ ॥४३॥

* टेक।

मारग ज्ञान न धार तेरे भले की कहूँ ॥४४॥
भक्ती पंथ सम्हार तेरे भले की कहूँ ॥४५॥
सुरत शब्द मिल ले तेरे भले की कहूँ ॥४६॥
सुरत चढ़ा नभ माहिँ तेरे भले की कहूँ ॥४७॥
गगन तिरकुटी जाव तेरे भलेकी कहूँ ॥४८॥
दसवें द्वार समाव तेरे भले की कहूँ ॥४९॥
भँवर गुफा चढ़ आव तेरे भले की कहूँ ॥५०॥
सत्त लोक धस जाव तेरे भले की कहूँ ॥५१॥
अलख अगम को पाव तेरे भलेकी कहूँ ॥५२॥
राधास्वामीनामधियावतेरेभलेकीकहूँ ॥५३॥
भटक अटक सब तोड़ तेरे भलेकी कहूँ ॥५४॥
टेक पक्ष गुरु बाँध तेरे भले की कहूँ ॥५५॥

॥ शब्द दूसरा ॥

गुरू का ध्यान कर प्यारे ।
　　बिना इस के नहीं छुटना ॥ १ ॥
नाम के रंग में रँग जा ।
　　मिले तोहि धाम निज अपना ॥२॥
गुरू की सरन दृढ़ कर ले ।
　　बिना इस काज नहिँ सरना ॥ ३॥

लाभ और मान क्यों चाहे ।
　पड़ेगा फिर तुझे देना ॥ ४ ॥
करम जो जो करेगा तू ।
　वही फिर भोगना भरना ॥ ५ ॥
जक्त के जाल से ज्यों त्यों ।
　हटो मरदानगी* करना ॥ ६ ॥
जिन्हों ने मार मन डाला ।
　उन्हीं को सूरमा कहना ॥ ७ ॥
बड़ा बैरी यह मन घट में ।
　इसी का जीतना कठिना ॥ ८ ॥
पड़ो तुम इसी के पीछे ।
　और सबही जतन तजना ॥ ९ ॥
गुरू की प्रीत कर पहिले ।
　बहुर घट शब्द को सुनना ॥ १० ॥
मान दो बात यह मेरी ।
　करे मत और कुछ जतना ॥ ११ ॥
हार जब जाय मन तुझ से ।
　चढ़ा दे सुर्त को गगना ॥ १२ ॥

* बहादुरी ।

और सब काम जग झूठा ।
　　त्याग दे इसी को गहना* ॥ १३ ॥
कहँ राधास्वामी समझाई ।
　　गहो अब नाम की सरना ॥ १४ ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

गुरू बिन कौन उबारेगा ।
　　नाम बिन कौन सुधारेगा ॥ १ ॥
भजन बिन को निस्तारेगा ।
　　सरन बिन कौन सँवारेगा ॥ २ ॥
बिरह बिन कौन पुकारेगा ।
　　दर्द बिन कौन चितारेगा ॥ ३ ॥
शब्द बिन कौन सिँगारेगा ।
　　संग बिन कौन निहारेगा ॥ ४ ॥
काल को कौन गारेगा ।
　　कर्म किस भाँति हारेगा ॥ ५ ॥
संत कोइ आन सारेगा ।
　　भक्त कोइ दोऊ जारेगा ॥ ६ ॥
काम सतसंग सारेगा ।
　　जोई तन मन को वारेगा ॥ ७ ॥

* ग्रहण करना, पकड़ना ।

सोई निज नाम धारेगा ।
जक्त को आन तारेगा ॥ ८ ॥
जीव इक इक उबारेगा ।
मान मद मोह टारेगा ॥ ९ ॥
सरन सतगुरु सम्हारेगा ।
नाम पद सो निहारेगा ॥ १० ॥
राधास्वामी जो सरावेगा* ।
सोई वह धाम पावेगा ॥ ११ ॥

॥ शब्द चौथा ॥

गुरू बिन कभी न उतरे पार ।
नाम बिन कभी न होय उधार ॥ १ ॥
संग बिन कभी न पावे सार ।
प्रेम बिन कभी न पावे यार ॥ २ ॥
जुक्ति बिन चढ़े न गगन मँझार ।
दया बिन खुले न बज्र किवाड़ ॥ ३ ॥
सुरत बिन होय न शब्द सम्हार ।
निरत बिन होय न धुन आधार ॥४॥
गुरू से करना पहिले प्यार ।
नाम रस पीना मन को मार ॥ ५ ॥

*स्तुति करेगा ।

काल घर जान तजा संसार ।
दयाल घर आई जन्म सुधार ॥ ६ ॥
संत गति पाई गुरू की लार ।
शब्द सँग मिली मिला पद चार ॥ ७ ॥
कहा राधास्वामी अगम बिचार ।
सुने और माने करे निरवार ॥ ८ ॥

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

सुरत धुन धार री, तज भोग निकाम ॥ टेक ॥
दारा सुत धन मान बड़ाई ।
यह सब थोथा काम ॥ १ ॥
लोक प्रतिष्ठा जक्त बड़ाई ।
इन में नहिं आराम ॥ २ ॥
सतगुरु भक्ति नाम रस पीवे ।
तौ पावे तू अविचल* धाम ॥ ३ ॥
तन मन साथ करो अब संगत ।
तब मिले नाम सतनाम ॥ ४ ॥
सुरत चढ़ाय चलो ऊपर को ।
होत जहाँ धुन आठो जाम ॥ ५ ॥

* स्थिर ।

नर की देह सुफल होय तेरी ।
मिले शब्द बिसराम ॥ ६ ॥
स्वाँस नक़ारा* कूँच† पुकारा ।
बजे सुबह से शाम ॥ ७ ॥
राधास्वामी नाव लगाई ।
भौ उतरो बिन दाम ॥ ८ ॥

॥ शब्द छठवाँ ॥

सुरत सुन बात री ।
तेरा धनी बसे आकाश ॥ १ ॥
तजो सँग जार री ।
तू देख पिया परकाश ॥ २ ॥
चलो गुरू की लार री ।
तू पावे अजर निवास ॥ ३ ॥
गहो सरन कोइ साध री ।
जो मिले शब्द घर बास ॥ ४ ॥
तन पिंजरा यह काल का ।
क्यों करे पराई आस ॥ ५ ॥
दस इंद्री के भोग की ।
तेरे पड़ी गले में फाँस ॥ ६ ॥

*नगाड़ा । †जात्रा करना ।

नौ द्वारन में बँध रही ।
अब चैन नहीं इक स्वाँस ॥ ७ ॥
दसवीं खिड़की खोल री ।
कर परम बिलास ॥ ८ ॥
सतगुरु पूरे कह रहे ।
तू मान बचन बिस्वास ॥ ९ ॥
राधास्वामी नाम भज ।
होयँ कर्म सब नाश ॥ १० ॥

॥ शब्द सातवाँ ॥

सुरत क्यों हुई दिवानी ।
तेरी बिरथा बैस बिहानी ॥ १ ॥
जग भोग रोग दिन बीते ।
तू जाय दोऊ कर रीते* ॥ २ ॥
जमपुर होय धूमा धामी ।
तू पड़े चौरासी खानी ॥ ३ ॥
वहाँ कौन सहाई तेरा ।
तू बचन मान अब मेरा ॥ ४ ॥
कर गुरू से हित चित लाई ।
सुन मान बचन गुरु भाई ॥ ५ ॥

* दोनों हाथ खाली ।

सूरत जा शब्द मिलाई ।
　कर निस दिन यही कमाई ॥ ६ ॥
तेरा भाग बढ़त नित जावे ।
　फिर काल न तोहि सतावे ॥ ७ ॥
रस अगम शब्द का पावे ।
　मन भोग सहज छुट जावे ॥ ८ ॥
चढ़ चढ़ नभ ऊपर धावे ।
　दल सहस कँवल गति पावे ॥ ९ ॥
तिल मोड़े बिजली चमके ।
　सुन शब्द अनाहद धमके ॥ १० ॥
फिर चाँद सुरज दोउ दरसें ।
　सुखमन मन सूरत परसें ॥ ११ ॥
गुरु मूरत अजब दिखाई ।
　सोभा कुछ कही न जाई ॥ १२ ॥
नर रूप दिखावें तब ही ।
　मन खैंच चढ़ावें जब ही ॥ १३ ॥
दे मदद बढ़ावें आगे ।
　मन जुग जुग सोया जागे ॥ १४ ॥

चढ़ बंक चले त्रिकुटी में ।
फिर सुन्न तके सरवर में ॥ १५ ॥
जहँ सोभा हंसन भारी ।
वह भूम लगे अति प्यारी ॥ १६ ॥
धुन किंगरी बजे करारी ।
सुन सुरत हुई मतवारी ॥ १७ ॥
फिर लगे महासुन तारी ।
जहँ दीप अचिंत सम्हारी ॥ १८ ॥
लख भँवरगुफा हुइ न्यारी ।
जहँ सेत सूर उजियारी ॥ १९ ॥
चौथे पद करी तयारी ।
धुन बीन सुनी अति भारी ॥ २० ॥
लख अलख अगम्म लखा री ।
हुइ राधास्वामी रूप निहारी ॥ २१ ॥
महिमा उनकी क्या कहुँ भारी ।
मुझ ग़रीब की बहुत सुधारी ॥ २२ ॥

॥ शब्द आठवाँ ॥

बिरहनी गुरु की सरन सम्हार ॥टेक॥

या जग मैं कोइ मीत* न तेरा ।
करो नाम आधार ॥ १ ॥
चेतन डोरी शब्द लगावो ।
खुले घाट और द्वार ॥ २ ॥
काम क्रोध की कीचड़ छूटे ।
न्हाव निरमली धार ॥ ३ ॥
गगन मँडल मैं अनहद गाजे ।
सुन सुन करो अधार ॥ ४ ॥
बिना संत कोइ अंत न पावे ।
चलो संत की लार ॥ ५ ॥
राधास्वामी हित उपदेशी ।
कहते हेला मार† ॥ ६ ॥
जो समझे सो सार समावे ।
पावे भेद अपार ॥ ७ ॥

॥ शब्द नवाँ ॥

सुरत सँग सतगुरू धोवत मन को ॥ टेक ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ावत छिन छिन ।
भेट चढ़ावत तन को ॥ १ ॥

* मित्र । † ऊँची आवाज़ से ।

शुद्ध होय शब्दारस पावत ।
चढ़त उलट घट घन को ॥ २ ॥
इन्द्री पाँच प्रकिर्त पचीसो ।
दूर हटावत तीनौं गुन को ॥ ३ ॥
धुन रस पाय हुई मतवारी ।
कहत न काहू जन को ॥ ४ ॥
जिन यह भेद स्वाद नहिँ जाना ।
कहूँ कहा अब तिन को ॥ ५ ॥
पण्डित ज्ञानी भेष भुलाने ।
तीरथ बरत करैं करमन को ॥ ६ ॥
यह रस सार शब्द क्यों पावैं ।
जाल बिछावैं नित भरमन को ॥७॥
कौन कहे उन को समझाई ।
सुनैं न संत बचन को ॥ ८ ॥
षट शास्तर और सिम्रित पुराना ।
लीक पीट छोड़ैं नहिँ पन को ॥ ९ ॥
शिव और शक्ति गनेश मनावैं ।
कौन कहे अब उनको ॥ १० ॥

बिष्णु सूर और देव अनेका ।
　पुजवावैं सबहिन को ॥ ११ ॥
गुरु भक्ती संतन की महिमा ।
　नेक न जानैं वह इस गुन को ॥१२॥
हित कर कहैं कोई नहिं माने ।
　कौन ग़रज़ अब हम को ॥ १३ ॥
राधास्वामी भेद बतावैं ।
　पकड़ रहो तुम अब घट धुन को ॥१४॥

॥ शब्द दसवाँ ॥

गुरु घाट चलो मन भाई ।
　सुरत चदरिया लेव धुवाई ॥ १ ॥
सेवा साबन दर्शन मंजन ।
　प्रेम का नीर भराई ॥ २ ॥
बचन की रेह* भाव की भाठी ।
　बिरह की आगिन जराई ॥ ३ ॥
भक्ति नदी जहँ निस दिन बहती ।
　मल मल ता मैं मैल गँवाई ॥ ४ ॥
उज्जल निर्मल हुई सुरत जब ।
　ओढ़त मन अब अति हरखाई ॥५॥

* कपड़ा धोने की मिट्टी ।

चला गगन पर मिला शब्द सँग ।
चढ़त चढ़त त्रिकुटी ढिंग आई ॥ ६ ॥
सुन्न शिखर चढ़ हंस रूप धर ।
महासुन्न छबि औरहि पाई ॥ ७ ॥
भँवरगुफा पर सोहं सोहं ।
सत्तलोक सत सोहं गाई ॥ ८ ॥
अलख अगम को देखत देखत ।
राधास्वामी चरनन जाय समाई ॥ ९ ॥

॥ शब्द ग्यारहवाँ ॥

तू देख उलट कर मन में ।
क्यों फिरे भटकता बन में ॥ १ ॥
गुरु कहें तोहि छिन छिन में ।
तू सुमिर नाम निस दिन में ॥ २ ॥
गुरु मूरत धार अंदर में ।
मन चंचल रोक मँदर में ॥ ३ ॥
फिर सुरत लगा सुन् दर* में ।
तू धस जा ब्रह्म रँदर† में ॥ ४ ॥
चुप बैठो गगन कँदर‡ में ।
मन खैंच धरो धुन धर§ में ॥ ५ ॥

* सुन का दर यानी द्वारा । † छिद्र, द्वारा । ‡ गुफा । § धुन की धार ।

तुम सुरत जमाओ सुन में।
भरमो मत तीनों गुन में ॥ ६ ॥
क्यों पड़ो जाय औगुन में।
मत गिरो जाय दोषन में ॥ ७ ॥
तेरा जन्म गया धोखन में।
अब खोज करो शब्दन में ॥ ८ ॥
नित कर बिलास संतन में।
मत पचो मान और धन में ॥ ९ ॥
मन इन्द्री बस कर तन में।
तू लग रहु इसी जतन में ॥ १० ॥
बस आवें यह कोइ दिन में।
फिर सुनो नाद सरवन में ॥ ११ ॥
फिर देर न होय जागन में।
तू मगन रहो रागन में ॥ १२ ॥
अब गिर राधास्वामी चरनन में।
तेरा काज करें पल छिन में ॥ १३ ॥

॥ शब्द बारहवाँ ॥

सुन रे मन अनहद बैन।
घट में मठ* निरखो नैन ॥ १ ॥

* मन्दिर।

गुरु शब्द गहो उपदेशा ।
रस पी पी करो प्रवेशा ॥ २ ॥
चक्कर अब फेरो आई ।
धुन शब्द तभी खुल जाई ॥ ३ ॥
बिन नाम नहीं गति पाई ।
सतगुरु यों कहें बुझाई ॥ ४ ॥
सतसंग अब करो बनाई ।
गुरु गहो आन सरनाई ॥ ५ ॥
जग भोग रोग सम जानो ।
धन माल चाह दुख मानो ॥ ६ ॥
भौ सागर फाट* अपारा ।
डूबे सब उसकी धारा ॥ ७ ॥
गुरु बिन कोइ पार न पाया ।
बिन नाम न धीरज आया ॥ ८ ॥
अब सुरत सम्हालो आई ।
जो शब्द हाथ लग जाई ॥ ९ ॥
मन इन्द्री तन भरमाई ।
दुख सुख में गये भुलाई ॥ १० ॥

* चौड़ाई ।

हौं हौं कर* जन्म विताई ।
करता की बूझ न आई ॥ ११ ॥
अब सोच करो तुम मन मैं ।
कुछ रोको मन निज तन मैं ॥ १२ ॥
राधास्वामी कहत बुझाई ।
तब सुरत शब्द घर पाई ॥ १३ ॥

॥ शब्द तेरहवाँ ॥

गुरु कहैं जक्त सब अंधा ।
कोइ गहे न घट की संधा† ॥ १ ॥
बाहरमुख भरमैं सारे ।
अन्तरमुख शब्द न धारे ॥ २ ॥
मन जक्त भोग रस बंधा ।
नित करे कर्म बस धन्धा ॥ ३ ॥
फस मरे काल के फंदा ।
अब हुआ जीव अति गंदा ॥ ४ ॥
गुरु कहैं नित्त समझाई ।
कर खोज शब्द घट जाई ॥ ५ ॥
यह सुने न गुरु के बैना ।
कस खुलैं हिये के नैना ॥ ६ ॥

* आपा ठानकर । † निशान यानी शब्द ।

बिरला कोइ जिव अधिकारी ।
गुरु बचन करे आधारी ॥ ७ ॥
जो बचन सम्हारे गुरु के ।
मन फंद लगावे छल के ॥ ८ ॥
ज्यों त्यों कर जीव भुलावे ।
काल अपने खेल खिलावे ॥ ९ ॥
गुरु भक्ति न करने पावे ।
बहु भाँति उपाधि लगावे ॥ १० ॥
कभी मित्र होय भरमावे ।
कभी बैरी बन धमकावे ॥ ११ ॥
कभी रोगन माहिं भुमावे ।
नाना बिधि जाल बिछावे ॥ १२ ॥
शब्दा रस लेन न पावे ।
यों जीव सदा दुख पावे ॥ १३ ॥
गुरु मेहर करें जिस जन पर ।
सो बचे शब्द धुन सुन कर ॥ १४ ॥
तब गहे शब्द रस जाँची ।
फिर जले न जग की आँची ॥ १५ ॥

सब बात लगी अब काँची ।
गुरु भक्ति मिली अब साँची ॥ १६ ॥
राधास्वामी की लीन्ही सरनी ।
सो जीव लगे भौ तरनी* ॥ १७ ॥

॥ शब्द चौदहवाँ ॥

सुरत नहिँ चढ़े कहा करिये ।
पिंड नहिँ तजे झुरत रहिये ॥ १ ॥
मन कहा न करे कुमति भरिये ।
इन्द्री रस भोग अधिक जरिये ॥ २ ॥
गुन तीन कर्म बस नित डरिये ।
दुख सुख संतापैं बहु सहिये ॥ ३ ॥
कोइ और उपाव नहीँ चहिये ।
गुरु चरन सरन मैं सिर धरिये ॥ ४ ॥
जब नाम अमी रस घट भरिये ।
सुत खैंच गगन को अब चढ़िये ॥ ५ ॥
संतन मत साँचा यह कहिये ।
सुत शब्द लखावैं सो गहिये ॥ ६ ॥
मन चढ़े गगन पर जा रहिये ।
सुत लगे शब्द से रस पइये ॥ ७ ॥

* संसार से पार होने लगे ।

सुन जाँच करो और घर अइये ।
फिर मौज करो आनँद लहिये ॥ ८ ॥
गुरु नाम रटो तब मन हरिये ।
सतलोक चलो कारज सरिये ॥ ९ ॥
घर अलख अगम जा कर लखिये ।
राधास्वामी चरन में फिर पकिये ॥१०॥

॥ शब्द पंद्रहवाँ ॥

गुरु तारेंगे हम जानी ।
तू सुरत काहे बौरानी ॥ १ ॥
दृढ़ पकड़ो शब्द निशानी ।
तेरी काल करे नहिँ हानी ॥ २ ॥
तू होजा शब्द दिवानी ।
मत सुनो और की बानी ॥ ३ ॥
सब छोड़ो भर्म कहानी ।
गुरु का मत लो पहिचानी ॥ ४ ॥
चढ़ बैठो अगम ठिकानी ।
राधास्वामी कहत बखानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द सोलहवाँ ॥

गुरु क्यों न सम्हार ।
तेरा नर तन बीता भर्म में ॥ १ ॥
दारा सुत परिवार ।
ठगियन सँग क्यों खोवई ॥ २ ॥
क्यों नहिं करत बिचार ।
जग मिथ्या यह है सही ॥ ३ ॥
मन है बड़ा गँवार, मोह रहा कर प्यार ।
छूटे कैसे जार से ॥ ४ ॥
बिन गुरु चले न दाव ।
थाके सभी उपाव कर ॥ ५ ॥
नाम सम्हारो मीत ।
धीरज धर घट में रहो ॥ ६ ॥
मौज निहारो पीव ।
जो करिहैं सो सब भला ॥ ७ ॥
तेरी बुद्धि मलीन ।
मन चंचल घाटा गहे ॥ ८ ॥
तू नहिं जाने भेद ।
भर्म जाल में फँस रहा ॥ ९ ॥

या ते कर बिस्वास ।
गुरु बिन और न दूसरा ॥ १० ॥
गुरु का घाट निहार ।
सुरत बाँध निज शब्द में ॥ ११ ॥
शब्द बिना कोइ नाहिँ ।
जो काढ़े इस फंद से ॥ १२ ॥
ता ते शब्द किवाड़ ।
खोलो गुरु कुंजी पकड़ ॥ १३ ॥
महल माहिँ धस जाय ।
गुरुमुख को रोकेँ नहीँ ॥ १४ ॥
मनमुख भटका खाय ।
चढ़ उतरे गिर गिर पड़े ॥ १५ ॥
ठीका ठौर न पाय ।
क्योँकर गुरु समझावहीँ ॥ १६ ॥
मन मत छोड़े नाहिँ ।
गुरु को दोष लगावही ॥ १७ ॥
गुरु जो कहैँ उपाव ।
उस मेँ मन बाँधे नहीँ ॥ १८ ॥

क्योंकर होय निबाह।
जम धक्के खावत फिरे ॥ १९ ॥
राधास्वामी कहत सुनाय।
मन बैरी को मीत कर ॥ २० ॥

॥ शब्द सत्रहवाँ ॥

मन मारो तन को जारो।
इन्द्री रस भोग बिसारो ॥ १ ॥
तुम निद्रा आलस टारो।
गुरु के सँग शब्द पुकारो ॥ २ ॥
सतसँग तुम नितही धारो।
गुरु दर्शन नित्त निहारो ॥ ३ ॥
मन से क्यों दम दम हारो।
जग आसा दूर निकारो ॥ ४ ॥
यह भर्म सभी अब टारो।
फिर परखो तुम घर न्यारो ॥ ५ ॥
खोलो चढ़ गगन किवाड़ो।
धस बैठो दसवें द्वारो ॥ ६ ॥
फिर महासुन्न होय पारो।
तहँ देखो भँवर उजारो ॥ ७ ॥

सतनाम मिला अति प्यारो ।
जा अलख अगम को धारो ॥ ८ ॥
राधास्वामी धाम अपारो ।
दिया सतगुरु परम उदारो ॥ ९ ॥

॥ शब्द अठारहवाँ ॥

धाम अपने चलो भाई ।
पराये देस क्यों रहना ॥ १ ॥
काम अपना करो जाई ।
पराये* काम नहिं फँसना ॥ २ ॥
नाम गुरु का सम्हाले चल ।
यही है दाम गँठ बँधना ॥ ३ ॥
जक्त का रंग सब मैला ।
धुला ले मान यह कहना ॥ ४ ॥
भोग संसार कोइ दिन के ।
सहज में त्यागते चलना ॥ ५ ॥
सरन सतगुरु गहो दृढ़ कर ।
करो यह काज पिल† रहना ॥ ६ ॥
सुरत मन थाम अब घट में ।
पकड़ धुन ध्यान धर गगना ॥ ७ ॥

* दूसरे का । † ज़ोर देकर लगना ।

फँसे तुम जाल में भारी ।
बिना इस जुक्त नहिँ खुलना ॥ ८ ॥
गुरू अब दया कर कहते ।
मान यह बात चित धरना ॥ ९ ॥
भटक में क्योँ उमर खोते ।
कहीँ नहिँ ठीक तुम लगना ॥ १० ॥
बसो तुम आय नैनन में ।
सिमट कर एक यहँ होना ॥ ११ ॥
दुई यहँ दूर हो जावे ।
दिरिष्टी जोत में धरना ॥ १२ ॥
श्याम तज सेत को गहना ।
सुरत को तान धुन सुनना ॥ १३ ॥
बंक के द्वार धस बैठो ।
तिरकुटी जाय कर लेना ॥ १४ ॥
सुन्न चढ़ जा धसो भाई ।
सुरत से मानसर न्हाना ॥ १५ ॥
महासुन चौक अँधियारा ।
वहाँ से जा गुफा बसना ॥ १६ ॥

लोक चौथे चलो सज के।

गहो वहँ जाय धुन बीना ॥ १७ ॥

अलख और अगम के पारा।

अजब इक महल दिखलाना ॥ १८ ॥

वहाँ राधास्वामी से मिलना।

हुआ मन आज अति मगना ॥ १९ ॥

॥ शब्द उन्नीसवाँ ॥

समझ कर चल जगत खोटा।

मान मद त्याग मन मोटा ॥ १ ॥

खुदी* को छोड़ नहिँ टोटा†।

भक्ति कर खाय क्यों सोटा ॥ २ ॥

करो सतसंग गुरू केरा‡।

सुरत से लो गगन झोटा§ ॥ ३ ॥

मगन होय बैठ फिर घट में।

फ़तह कर त्रिकुटी कोटा‖ ॥ ४ ॥

कुटँब सँग चार दिन नाता।

मोह सँग क्यों पड़ा लोटा ॥ ५ ॥

करो कुछ भजन अंतर में।

गहो गुरू चरन की ओटा** ॥ ६ ॥

* अहंकार। † हानि। ‡ का। § झोका झूला का। ‖ क़िला। ** सरन।

गुरू बिन कोइ नहीं संगी ।
उन्हीं सँग बैठ मन घोटा* ॥ ७ ॥
करेंगे काज वह तेरा ।
उतारें पाप की पोटा† ॥ ८ ॥
मिले तब नाम की रंगत ।
शब्द की सेज जा लोटा ॥ ९ ॥
भाग तेरा बड़ा जागा ।
हुआ मन अर्श‡ का तोता ॥ १० ॥
उठा फिर जाग इक छिन में ।
जुगन जुग से पड़ा सोता ॥ ११ ॥
जक्त को देख तू मथ कर ।
नहीं कुछ सार है थोथा ॥ १२ ॥
उलट कर दिल मथो अपना ।
अमोलक वक़्त क्यों खोता ॥ १३ ॥
गुरू ने अब करी किरपा ।
दिया अब काल को ग़ोता ॥ १४ ॥
कहें राधास्वामी यह तुम को ।
चलो सतलोक दूँ न्योता ॥ १५ ॥

* रगड़ा । † बोझ । ‡ आकाश ।

॥ शब्द बीसवाँ ॥

अरे मन देख कहाँ संसार ।
झूठे भर्म हुआ बीमार ॥ १ ॥
भरे तेरे मन में सभी बिकार ।
जतन से इन को दूर निकार ॥ २ ॥
होय फिर झूठा जक्त असार ।
गहो फिर गुरू के चरन सम्हार ॥ ३ ॥
मिले तब उन से नाम अपार ।
देख फिर घट में मोक्ष दुवार ॥ ४ ॥
चलो फिर शब्द बिचार बिचार ।
पाओ इक शब्द सार का सार ॥ ५ ॥
पड़े क्यों भटको नैनन वार ।
झाँक तिल खिड़की उतरो पार ॥ ६ ॥
गुरू से लेना जुक्ती यार ॥
गुरू बिन नहीं खुले यह द्वार ॥ ७ ॥
कमाना जुक्ती तुम कर प्यार ।
लगाना सुरत सहज मन मार ॥ ८ ॥
चले फिर सूरत धुन की लार ।
चुए जहँ पल पल अमृत धार ॥ ९ ॥

नाम रस पिओ रहो हुशियार ।
ऋद्धि और सिद्धि रहें तेरे द्वार ॥ १०॥
करो मत उनको अङ्गीकार ।
वहाँ से आगे धरो पियार ॥ ११ ॥
चलो और देखो घट का सार ।
पहुँचना राधास्वामी के दरबार ॥१२॥

॥ शब्द इक्कीसवाँ ॥

अब बही सुरत सँझ धार ।
गुरू बिन कौन लगावे पार ॥ १ ॥
जकड़ कर पकड़ा इन संसार ।
नाम बिन कौन करे निरवार ॥ २ ॥
नाम का किया न कुछ आधार ।
गुरू सँग किया न अब के प्यार ॥ ३॥
कर्म का बहुत उठाया भार ।
काल ने खाया सब को झाड़ ॥ ४ ॥
साध कोइ किया न अपना यार ।
देह में किया बहुत अहंकार ॥ ५ ॥
कुमति बस भरमें बारम्बार ।
सुमति का किया न नेक बिचार ॥ ६॥

देह सँग रही न कुछ हुशियार ।
हुई अब ग़ाफ़िल भोगन लार ॥ ७ ॥
बिछाया जग में मन ने जार* ।
पड़ी अब मन के क़ाबू हार ॥ ८ ॥
कहें राधास्वामी तोहि पुकार ।
पकड़ अब चरन सम्हार सम्हार ॥९॥

॥ बचन बीसवाँ ॥

॥ उपदेश सुरत शब्द के अभ्यास का ॥

॥ शब्द पहिला ॥

चलो री सखी आज पिया से मिलाऊँ ।
तन मन धन की प्रीत छुड़ाऊँ ॥ १ ॥
पुत्र कलित्र† जाल छुटकाऊँ ।
सुन्न मँडल धुन अजब सुनाऊँ ॥ २ ॥
गगन तख़्त पर जाय बिठाऊँ ।
तीन लोक का राज दिलाऊँ ॥ ३ ॥
तिरबेनी तीरथ परसाऊँ ।
मन माधो‡ से खूँट छुड़ाऊँ ॥ ४ ॥
काल चक्र से तुरत बचाऊँ ।
कर्म काट निज घर पहुँचाऊँ ॥ ५ ॥

* जाल । † स्त्री । ‡ जिस का झुकाव माया की तरफ़ हो ।

महासुन्न और भँवरगुफा से।
सत्तपुरुष दीदार कराऊँ ॥ ६ ॥
दीन दुरबीन पुरुष इक ऐसी ।
अलख अगम के पार समाऊँ ॥ ७ ॥
राधास्वामी पद हम जाना ।
कहन सुनन का लगा ठिकाना ॥ ८ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

जागो री सुरत अब देर न करो ।
चालो री सुरत अब गगन चढ़ो ॥ १ ॥
भागो री सुरत अब पिया से मिलो ॥
लागो री सुरत अब शब्द रलो ॥ २ ॥
ताको री सुरत अब निरत* करो ।
झाँको री सुरत अब मूरत लखो ॥ ३ ॥
न्हावो री सुरत और नीर भरो ।
धाओ री सुरत और ध्यान धरो ॥ ४ ॥
गाओ री सुरत और गवन† करो ।
भोगो री सुरत सुख सहज बरो‡ ॥ ५ ॥
झँझरी निरख फिर नाम भजो ।
बंक छोड़ धुन गगन गहो ॥ ६ ॥

* निरजय । † जाना । ‡ पिया का ।

सुन्न तजो महासुन्न रहो ।
भँवरगुफा पर जाय अड़ो ॥ ७ ॥
सत्तलोक सतनाम रसो ।
अलख अगम के पार बसो ॥ ८ ॥
राधास्वामी राधास्वामी रटन करो ।
बहुत कहा अब खतम करो ॥ ९ ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

भक्ति अब करो मेरे भाई ।
प्रीत अब धरो मेरे भाई ॥ १ ॥
अजब यह औसर पाई ।
मिले अब राधास्वामी आई ॥ २ ॥
सेवा दर्शन बाड़* धराई ।
पौद अब शब्द खिलाई ॥ ३ ॥
सुरत शम्शेर† चलाई ।
काल सिर काट गिराई ॥ ४ ॥
धमक अब सुन्न समाई ।
चमक जहँ चन्द्र दिखाई ॥ ५ ॥
श्याम तज सेत मिलाई ।
हेत कर नेत‡ घर आई ॥ ६ ॥

* टट्टी, रोक । † तलवार । ‡ दसवाँ द्वार ।

महासुन तार मिलाई ।
भँवर का द्वार तुड़ाई ॥ ७ ॥
शब्द पद जाय समाई ।
अलख और अगम सराई* ॥ ८ ॥
राधास्वामी अगम सुनाई ।
सरन अब पूरी पाई ॥ ९ ॥

॥ शब्द चौथा ॥

चेतो रे जम जाल बिछाया ।
काल कुल चक्र चलाया ॥ १ ॥
सरन गहो सतगुरु केरी ।
बचे चौरासी फेरी ॥ २ ॥
उलट कर घट में आवो ।
सुई के द्वार समावो ॥ ३ ॥
पकड़ मन खैंचो तानी ।
सुनो फिर अनहद बानी ॥ ४ ॥
जोत की गहो निशानी ।
निरंजन रूप पिछानी ॥ ५ ॥
बंक चढ़ त्रिकुटी फोड़ो ।
सुन्न में आतम जोड़ो ॥ ६ ॥

* महिमा किया ।

काल की हद्द छुड़ानी।
दयाल पद लिया अगवानी ॥ ७ ॥
संत सँग नाता जोड़ा।
गगन का नाका* तोड़ा ॥ ८ ॥
सुरत का घोड़ा दौड़ा।
निरत का चाबुक छोड़ा ॥ ९ ॥
सुरत का बान चलाया।
भँवर का चक्र फिराया ॥ १० ॥
शब्द से शब्द समाया।
परम पद अपना पाया ॥ ११ ॥
बीन धुन अजब सुनाई।
सुरत जहँ दीन लनाई ॥ १२ ॥
मिला अब प्रीतम प्यारा।
सुरत सत रूप निहारा ॥ १३ ॥
अलख का लखा उजाला।
अगम पद जाय सम्हाला ॥ १४ ॥
राधास्वामी कीन्ह निहाला।
सीस उन चरनन डाला ॥ १५ ॥

* हद्द, सीमा।

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

भजन कर मगन रहो मन में ॥ टेक ॥

जो जो चोर भजन के प्रानी ।
सो सो दुक्ख सहें ॥ १ ॥

आलस नींद सतावे उनको ।
नित नित भर्म वहें ॥ २ ॥

काम क्रोध के धक्के खावें ।
लोभ नदी में डूब मरें ॥ ३ ॥

गुरु सँग प्रीत करें नहिं पूरी ।
नाम न डोर गहें ॥ ४ ॥

तृष्णा अग्नि जलें निस बासर ।
नर्कन माहिं पड़ें ॥ ५ ॥

संतन साथ बिरोध बढ़ावें ।
उलटी बात कहें ॥ ६ ॥

सतसँग महिमा मूल न जानें ।
भेड़ चाल में नित्त पचें ॥ ७ ॥

धन और मान भोग रस चाहें ।
रोग सोग में आन फसें ॥ ८ ॥

भाग हीन मत हीन परानी ।
नर देही बरबाद करें ॥ ९ ॥
ऐसी दशा माहिं नित बरतें ।
हम क्योंकर समझाय सकें ॥१० ॥
साध गुरू का कहा न मानें ।
मन मत अपनी ठान* ठनें ॥ ११ ॥
खर† कूकर सम वे नर जानो ।
बिरथा उदर भरें ॥ १२ ॥
जमपुर जाय बहुत पछतावें ।
वहाँ फिर उनकी कौन सुने ॥ १३ ॥
जन्म जन्म चौरासी भोगें ।
यह शरीर फिर नाहिं धरें ॥ १४ ॥
दुर्लभ देह मिली यह औसर ।
ऐसी कर जो बात बने ॥ १५ ॥
सतगुरु सरन पकड़ ले अब की ।
तो सब काज सरें ॥ १६॥
हित का बचन दया कर बोलें ।
तू नहिं कान सुने ॥ १७ ॥

* हठ करके रखते हैं । † गदहा ।

अंधा बहरा फिरे जक्त मैं ।
कुल कुटम्ब लेरी हान करैं ॥१८ ॥
कर सतसंग मान यह कहना ।
कान आँख फिर दोउ खुलैं ॥ १९ ॥
देखे घट मैं जोत उजाला ।
सुने गगन मैं अजब धुनैं ॥ २० ॥
सुन्न जाय तिरबेनी न्हावे ।
हीरे मोती लाल चुने ॥ २१ ॥
महासुन्न मैं सुरत चढ़ावे ।
तब सतगुरु तेरे संग चलैं ॥ २२ ॥
भँवरगुफा की बंसी बाजी ।
महाकाल भी सीस धुने ॥ २३ ॥
अब चढ़ गई पुरुष दरबारा ।
वहाँ जाय धुन बीन गुने ॥ २४ ॥
ले दुरबीन चली आगे को ।
अलख अगम का भेद भने* ॥ २५ ॥
यहाँ से आगे चली उमँग से ।
तब राधास्वामी चरन मिलैं ॥ २६ ॥

* बरनन करती है ।

सिला अधार धार घर पाया ।
लीला वहाँ की कहे न बने ॥ २७ ॥

॥ शब्द छठवाँ ॥

कोइ सुनो हमारी बात ।
कोइ चलो हमारे साथ ॥ १ ॥
क्यों सहो काल की घात ।
जम धर धर मारे लात ॥ २ ॥
तुम चढ़ो गगन की बाट ।
तो खुले अधर का पाट ॥ ३ ॥
घट बाँधो दृढ़ कर ठाट ।
छूटे यह औघट घाट ॥ ४ ॥
शब्द रस भरो सुरत के माट ।
बंक चढ़ खोलो सुखमन घाट ॥ ५ ॥
नाम की मिली अपूरब* चाट ।
अब सोऊँ बिछाये खाट ॥ ६ ॥
चेतन की जड़ से खोली साँट† ।
उलट मन कला खाय ज्यों नाट‡ ॥ ७ ॥
मानसर देखा चौड़ा फाट§ ।
गया फिर परदा सुन का फाट ॥ ८ ॥

* अचरज । † पेंच, लपेट । ‡ नट § पाट, चौड़ाई ।

काल की डारी गर्दन काट।
कर्म की खुल गई भारी आँट* ॥ ९ ॥
सुन्न का लिया अमी रस बाँट।
शब्द की खुली हिये में हाट॥ १० ॥
मोह मद हो गये बारह बाट† ।
मिले अब सतगुरु मेरे तात ॥ ११ ॥
बाल ज्यों पावे पित और मात।
कहूँ क्या खोल यह बिख्यात ॥ १२ ॥
अब चले न माया घात।
झड़ पड़ी बृक्ष ज्यों पात ॥ १३ ॥
कर्म की कीन्ही बाज़ी मात।
लखी जाय सुन में धुन की भाँत ॥ १४ ॥
टूट गया पिंड से मेरा नात।
दिखाई गुरु ने अचरज क्रांत ॥ १५ ॥
पाई अब मैं ने ऐसी शांत।
अब रही न कोई भ्रांत ॥ १६ ॥
गुरु करी प्रेम की दात।
सुरत अब हुई शब्द की ज़ात‡ ॥ १७ ॥

*दो तागों के सिर को चुटकी में मिला देने को आँट कहते हैं।
† इधर उधर। ‡ एक रस, एक वर्ण।

सुरत रहे लागी दिन और रात ।
शब्द रस अब नहिं छोड़ा जात ॥१८॥
गुरू का दम दम अब गुन गात ।
अमर पद पाया छूटा गात* ॥ १९ ॥
नाम धुन चली अधर से आत ।
अर्श† का चरखा डाला कात ॥ २० ॥
राधास्वामी धरा सीस पर हाथ ।
मैं तजूँ न उन का साथ ॥ २१ ॥

॥ शब्द सातवाँ ॥

नाम धुन सुनो, शब्द धुन गुनो ।
गगन चढ़ चलो, प्रेम लौ लाय ॥ १ ॥
गुरू सँग करो, साध सँग रलो ।
चेत कर रहो, सदा चित लाय ॥ २ ॥
बाँध मन धरो, सरन गुरू तको ।
चरन गहि चखो, अगम रस आय ॥३॥
धीर पुन गहो, सील धर रहो ।
क्रोध को दहो, शान्त घर आय ॥ ४ ॥
काल कुल दलो, धाल पद चलो ।
मगन होय रहो, परम पद पाय ॥५॥

* तन । † आसमान ।

घाट घट खुले, बाट तब चले ।
द्वार तिल धसे, श्याम पद पाय ॥ ६ ॥
सेत पहिचान, जोत लख आन ।
सुखमना जान, बंक धस जाय ॥ ७ ॥
संख धुन मिले, सुरत फिर पिले ।
भेद तब खुले, नाद धुन गाय ॥ ८ ॥
सुन्न चढ़ आय, मानसर न्हाय ।
हंस गति लाय, चन्द्र में धाय ॥ ९ ॥
खोज कर चली, महासुन मिली ।
पाय निज गली, बिहँग* हो जाय ॥१०॥
भँवर गढ़ तोड़, बाँसरी घोर ।
सोहं का शोर, सुना रस खाय ॥ ११ ॥
पाय पद चार, पुरुष घर प्यार ।
बीन धुन सार, सुनी निज आय ॥१२॥
अलख घर मिला, अगम गुल खिला ।
चाल धुर चला, लिया सब काज बनाय॥१३॥
एक पद रहा, गुप्त सो कहा ।
सीस अब धरा, चरन राधास्वामी जाय१४॥

* पक्षी ।

॥ शब्द आठवाँ ॥

खोलो री किवड़ियाँ, चढ़ो री अटरियाँ।
सुरत न टरियाँ, करो शब्द सँग रलियाँ* ॥१॥
पावो री मरमियाँ, छूटे री मरनियाँ।
जन्म सुफलियाँ, झाँको री निरत गुरु गलियाँ॥२॥
धावो री धरनियाँ†, गहो री सरनियाँ।
होवो री मगनियाँ, भइलो नाम दिवनियाँ॥३॥
खोजो री अमनियाँ‡, टले री जमनियाँ।
छूटे री गुननियाँ§,
राधास्वामी शब्द जुगनियाँ|| ॥४॥

॥ शब्द नवाँ ॥

लोभ री खुवनियाँ, काम री दलनियाँ।
क्रोध री दगनियाँ**, मन संतोष मिलनियाँ॥१॥
काटो री मलनियाँ††, चढ़ो री गगनियाँ।
जाय री तपनियाँ, पकड़ो गुरू चरनियाँ॥२॥
हौं मैं री टलनियाँ, भाजत‡‡ गुननियाँ§§।
बढ़े री लगनियाँ, रहो निस बास जगनियाँ॥३॥

---

* विलास । † सुरत । ‡ निर्मल, शुद्ध । § गुनाघन । || योग ।
** जलाना । †† मैल । ‡‡ भागे । §§ तीनों गुन ।

गावो री गुननियाँ*, धावो री धुननियाँ।
बुझे री अगिनियाँ,
राधास्वामी शान्त दिवनियाँ† ॥४॥

॥ शब्द दसवाँ ॥

गुरु कहें खोल कर भाई ।
लग शब्द अनाहद जाई ॥ १ ॥
बिन शब्द उपाव न दूजा ।
काया का छुटे न कूज़ा‡ ॥ २ ॥
घर में घर गुरु दिखलावें ।
धुन शब्द पाँच बतलावें ॥ ३ ॥
धुन में अब सुरत लगावो ।
इस घर से उस घर जावो ॥ ४ ॥
वह घर है अगम अपारा ।
दसवें के पार निहारा ॥ ५ ॥
दस द्वारा घट चढ़ खोलो ।
सत शब्द अधर पै तोलो ॥ ६ ॥
बिन मेहर गुरू नहिँ पावे ।
बिन शब्द हाथ नहिँ आवे ॥ ७ ॥

* महिमा । † देवें । ‡ सुराही ।

सुत खैंच चढ़ावो गगनी।
धुन शब्द सुनो यह करनी ॥ ८ ॥
मन चंचल थिर न रहावे।
चित निर्मल कस होय आवे ॥ ९ ॥
सुत शब्द कमाई करना।
सब जतन दूर अब धरना ॥ १० ॥
निश्चय दृढ़ इस पर धरना।
आलस कर कभी न फिरना ॥ ११ ॥
यह सार सार सब गाया।
संतन मत भाष सुनाया ॥ १२ ॥
राधास्वामी भेद लखाया।
सुन मान सार समझाया ॥ १३ ॥

॥ शब्द ग्यारहवाँ ॥

चढ़ झाँको गगन झँझरिया।
धस देखो श्यामसुँदरिया* ॥ १ ॥
फिर तको जोत झिलमिलिया।
मद मान मोह दल मलिया† ॥ २ ॥
सब दूर होयँ कलमलिया‡।
धुन शब्द सुरत जा रलिया ॥ ३ ॥

* तीसरा तिल। † मरदन किया। ‡ काल का मैल।

त्रिकुटी चढ़ देख कँवलिया ।
धुन परखो सुन्न मँडलिया ॥ ४ ॥
तब सुरत होय निर्मलिया ।
तुम धारो यही अमलिया* ॥ ५ ॥
भागे फिर माया छलिया ।
सुत पकड़ा शब्द अटलिया† ॥ ६ ॥
यह अगम भेद अब मिलिया ।
राधास्वामी कहन सम्हलिया ॥ ७ ॥

॥ शब्द बारहवाँ ॥

घुमर‡ चल सुरत घोर सुन भारी ।
अरी सतगुरु संत पियारी ॥ १ ॥
जग रहना है दिन चारी§ ।
क्यों भार उठावो भारी ॥ २ ॥
गुरु कहैं पुकार पुकारी ।
धुन संग करो चल यारी ॥ ३ ॥
ममता सब झाड़ निकारी ।
सुत अगम देश पग धारी ॥ ४ ॥

* अभ्यास । † निश्चल । ‡ घूम कर । § चार अवस्था उमर की, लड़कपन जवानी, अधेड़, बुढ़ापा ।

यह काम नहीं संसारी ।
कोइ गुरुमुख बूझ सम्हारी ॥ ५ ॥
मनमुख सब बाज़ी हारी ।
सतसँग कर छुटे बिकारी ॥ ६ ॥
इक नाम सार सब खारी ।
तू होजा नाम अधारी ॥ ७ ॥
यह जुक्ति बताई न्यारी ।
नहिँ बेद किताब बिचारी ॥ ८ ॥
अब मानो बात हमारी ।
ग़फ़लत तज हो हुशियारी ॥ ९ ॥
कामादिक काढ़ निकारी ।
फिर न्हावो सीतल धारी ॥ १० ॥
मन माया दोनों मारी ।
तब काल करम दोउ हारी ॥ ११ ॥
फिर सुरत करे असवारी ।
सतगुरु के महल सिधारी ॥ १२ ॥
तू अगम पुरुष की नारी ।
सब की अब हुई दुलारी ॥ १३ ॥

सतगुरु सँग प्रेम बढ़ा री ।
देखे घट शब्द उजारी ॥ १४ ॥
सरवर* की धारा जारी ।
राधास्वामी कहत पुकारी ॥ १५ ॥

॥ शब्द तेरहवाँ ॥

चढ़ सुरत गगन की घाटी ।
क्यौं जले भरम की भाठी ॥ १ ॥
क्यौं चले काल की बाटी ।
तू खोल कपट की टाटी† ॥ २ ॥
तुझे पड़ी बिषय रस चाटी ।
तू रले एक दिन माटी ॥ ३ ॥
सौदा कर सतगुरु हाटी‡ ।
चल खोलो घट की टाटी ॥ ४ ॥
अब बाँध सुरत सँग ठाठी ।
तब छूटे कर्म प्रपाटी§ ॥ ५ ॥
फिर खोलो चढ़कर साँटी ।
नभ चढ़ जा खोल कपाटी ॥ ६ ॥
घट देखो चौक सपाटी‖ ।
जग छूटा हुई उचाटी ॥ ७ ॥

* मानसरोवर । † परदा । ‡ दुकान । § सिलसिला । ‖ साफ़ ।

मन माना छोड़ लपाटी* ।
मैं मारा काल झपाटी† ॥ ८ ॥
घट बली जोत की लाटी ।
मैं राधास्वामी दर की भाटी‡ ॥ ९ ॥

॥ शब्द चौदहवाँ ॥

मन घोटो घट में लाई ।
मन आसा सब मिट जाई ॥ १ ॥
धुन शब्द सुनो गगनाई ।
सुत लगे होय मगनाई ॥ २ ॥
चंचलता चित्त भगाई ।
निर्मलता मिली सफ़ाई ॥ ३ ॥
भोगौं की आस छुटाई ।
सुमिरन मन अधिक लगाई ॥ ४ ॥
मल बास रिदे§ से जाई ।
अमृत रस पिया अघाई ॥ ५ ॥
महिमा कुछ कही न जाई ।
मन मारा सुरत समाई ॥ ६ ॥
घट अनहद घोर बजाई ।
गुरु सतगुरु लीन रिझाई ॥ ७ ॥

*लपेट की बात । †जल्द । ‡भाट याने महिमा गाने वाला । §हृदय ।

घट भान उदय होय आई ।
चन्दा की जोत जगाई ॥ ८ ॥
संतन मत करूँ बड़ाई ।
स्रुत सिमृत सभी लजाई ॥ ९ ॥
आरत की बात चलाई ।
फिर सामाँ सब ले आई ॥ १० ॥
गुरु आगे धरे बनाई ।
गुरु मेहर करी अति भाई ॥ ११ ॥
मैं भी फिर आरत गाई ।
गुरु मुझ पर हुए सहाई ॥ १२ ॥
गुरु चरनन दास कहाई ।
मैं सोभा अद्भुत पाई ॥ १३ ॥
राधास्वामी नाम धियाई ।
लीला कुछ अगम दिखाई ॥ १४ ॥

॥ शब्द पंद्रहवाँ ॥

घन गरज सुनावत गहरी ।
अब सूरत सुन सुन ठहरी ॥ १ ॥
मन छोड़त सब बिष लहरी ।
तू चढ़ चल और न्हाँ रह री ॥ २ ॥

वह सुन्न बड़ी अति गहरी ।
लीला वहाँ देख अँधेरी ॥ ३ ॥
फिर सेत कँवल सुत ठहरी ।
घट शब्द गुरू हुइ चेरी ॥ ४ ॥
वहाँ संत करें नित फेरी ।
सुन बात सखी अब मेरी ॥ ५ ॥
सत शब्द जाय धुन हेरी ।
अब फिरी दुहाई तेरी ॥ ६ ॥
जिन राधास्वामी चरन गहे री ।
उन मिटी चौरासी फेरी ॥ ७ ॥

॥ शब्द सोलहवाँ ॥

सुरत तू चढ़ जा तुरत गगन को ।
लखो जाय पहिले जोत निर्गुन को ॥ १ ॥
छोड़ चल सकल पसार सर्गुन को ।
काट अब जड़ से फाँस त्रिगुन को ॥ २ ॥
निर्गुन छोड़ चलो आगे को ।
पकड़ो जाय महा निर्गुन को ॥ ३ ॥
या को त्याग सुनो सुन धुन को ।
यों तुम धारो संत बचन को ॥ ४ ॥

व्हाँ से चल पहुँचो महासुन को ।
देखो आगे धाम सोहं को ॥ ५ ॥
सत्तनाम पद मिला सुरत को ।
अलख अगम जा परस चरन को ॥ ६ ॥
राधास्वामी कहत भेद निज घर को ।
मेट दिया अब आवागवन को ॥ ७ ॥

॥ शब्द सत्रहवाँ ॥

त्याग चल सजनी जग की धार ।
बहे मत या में दुक्ख अपार ॥ १ ॥
सुरत से होजा सतगुरु लार ।
शब्द में तन मन दोनों गार* ॥ २ ॥
लगी रहु आठों पहर सम्हार ।
अमी रस पीती रहु हुशियार ॥ ३ ॥
गगन का पकड़े रहु तू द्वार ।
नाद सँग कर ले अब के प्यार ॥ ४ ॥
कहैं राधास्वामी हेला मार ।
सोच कर चढ़ना त्रिकुटी द्वार ॥ ५ ॥

*गला दे ।

॥ शब्द अठारहवाँ ॥

सुरत अब चढ़ो नाम रँग लाग ।
जक्त सब सोवे तू उठ जाग ॥ १ ॥
बढ़े फिर तेरा अचरज भाग ।
सुने तू चढ़ कर अनहद राग ॥ २ ॥
मिले तोहि प्यारी परम बैराग ।
लगे तेरा धुन से अति अनुराग ॥ ३ ॥
मिटे सब मन का दोष और राग ।
मार ले नभ चढ़ काला नाग ॥ ४ ॥
खेल नित सतगुरु सँग तू फाग ।
वासना टूटे सब ज्यों ताग ॥ ५ ॥
हुई अब निर्भय जम भी भाग ।
हंस सँग मिली उड़ाया काग ॥ ६ ॥
हुई अब निर्मल छूटे दाग़ ।
राधास्वामी दीन्हा शब्द सुहाग ॥ ७ ॥

॥ शब्द उन्नीसवाँ ॥

हंसनी क्यों पीवे तू पानी ॥ टेक ॥
सागर क्षीर भरा घट भीतर ।
पीवो सूरत तानी ॥ १ ॥

जग को जार धसो नभ अंदर ।
मंदर परख निशानी ॥ २ ॥
गुरु सूरत तू धार हिये में ।
मन के सँग क्यों फिरत निमानी* ॥३॥
तेरा काज करें गुरु पूरे ।
सुन ले अनहद बानी ॥ ४ ॥
करम भरम बस सब जग बौरा ।
तू क्यों होत दिवानी ॥ ५ ॥
सुरत सम्हार करो सतसंगत ।
क्यों बिष अमृत सानी ॥ ६ ॥
तेरा धाम अधर में प्यारी ।
क्यों घर† संग बँधानी ॥ ७ ॥
जल्दी करो चढ़ो ऊँचे को ।
राधास्वामी कहत बखानी ॥ ८ ॥

॥ शब्द बीसवाँ ॥

हंसनी छानो दूध और पानी ॥ टेक॥
छोड़ो नीर पियो पय‡ सारा ।
निस दिन रहो अघानी ॥ १ ॥

* हीन । † देह । ‡ अमृत, दूध ।

जुक्ति जतन से घट में बैठो ।
सूरत शब्द समानी ॥ २ ॥
खान पान निद्रा तज आलस ।
सुन ले अधर कहानी ॥ ३ ॥
फिर औसर नहिँ हाथ पड़ेगा ।
भरमो चारो खानी ॥ ४ ॥
गुरु का कहना मान सखी री ।
देत सिखापन* जानी ॥ ५ ॥
पाँचो इन्द्री उलटी तानो ।
इच्छा मार भवानी† ॥ ६ ॥
मन को साध चढ़ो गगनापुर ।
सुनो अनाहद बानी ॥ ७ ॥
शोर होत तेरे घट के भीतर ।
तू क्योँ रहे अलसानी ॥ ८ ॥
राधास्वामी टेरत तो को ।
कह कर अमृत बानी ॥ ९ ॥

॥ शब्द इक्कीसवाँ ॥

सुरत को साध, छबीली, हो मगनी ।
चदरिया धोय अधर में जा रँगनी ॥१॥

* शिक्षा । † संसार में लाने वाली ।

करम सब जार, लगा ले घर अगनी ।
मान मद छोड़, दूर कर सब बिघनी ॥२॥
सोवना छोड़, रैन का रहो जगनी ।
गुरू यों कहैं, बात ले मान, करो लगनी ॥३॥
सरन में आय, चरन उर धार, सुनो सजनी ।
कहैं राधास्वामी, मानो आज, धरन धरनी* ४

॥ शब्द बाईसवाँ ॥

सुरत अब सार सम्हालो नाम　टेक ॥
चेत चलो तुम जग से अब के ।
फिर औसर नहिँ पाम† ॥ १ ॥
गुरू की भक्ति प्रेम चित धारो ।
वही सुधारैं काम ॥ २ ॥
नाम भेद दे सुरत चढ़ावैं ।
पहुँचावैं निज धाम ॥ ३ ॥
तू सुख साथ सहज रस भोगे ।
पावे फिर आराम ॥ ४ ॥
राधास्वामी कहैं सुनाई ।
सेत मिला और छूटा श्याम ॥ ५ ॥

* जो पिंड को धारण कर रही है यानी सुरत । † पावेगी ।

## ॥ शब्द तेईसवाँ ॥

चमन* को चीन्ह री बुलबुल ।
खिले जहँ बहुत से गुल गुल† ॥ १ ॥
गुरू सँग चल रहो हिल मिल ।
चढ़ाओ सुरत मन मिल मिल ॥ २ ॥
लगाओ खैंच कर दिल दिल ।
समाओ जोत में तिल तिल ॥ ३ ॥
सहसदल कँवल लख खिल खिल ।
हटा कर देख दो सिलसिल‡ ॥ ४ ॥
झाँक वह घाट रहु खुल खुल ।
उतर जा पार चढ़ पुल पुल ॥ ५ ॥
सुगन्धें महकतीं संदल§ ।
धुलें तब सुरत मन कलमल ॥ ६ ॥
हटे फिर काल की किलकिल** ।
लगे तब शब्द में पिल पिल ॥ ७ ॥
छुटाई कर्म की दलदल ।
मिलो राधास्वामी से चल चल ॥ ८ ॥

* फुलवारी । † फूल । ‡ परदे ॥ §चन्दन ॥ **शोर ।

॥ शब्द चौबीसवाँ ॥

धुन सँ अब सुरत लगाओ ।
शब्दारस पी त्रिपताओ ॥ १ ॥
इन्द्री सब घट उलटाओ ।
मन फैला खैंच मिलाओ ॥ २ ॥
गुनना बिष छोड़ समाओ ।
आलस तज शौक़ बढ़ाओ ॥ ३ ॥
लय होय न मन समझाओ ।
बिक्षेप* बिघन यह दूर कराओ ॥ ४ ॥
इक शब्द पकड़ और सब बिसराओ ।
यह मारग नित्त कमाओ ॥ ५ ॥
बिन सुरत शब्द कुछ और न गाओ ।
मन रोको नभ पर धाओ ॥ ६ ॥
तिल पर भी सुरत जमाओ ।
पिल कर दल सहस खुलाओ ॥ ७ ॥
जहँ जोत निरंजन पाओ ।
फिर शब्दहि शब्द समाओ ॥ ८ ॥
चढ़ बंकनाल में आओ ।
गढ़ त्रिकुटी फ़तह कराओ ॥ ९ ॥

* विघन अभ्यास के—लय, विक्षेप, कषाय, रसास्वाद ।

सुन में धस खेल खिलाओ ।
वहाँ का भी शब्द जगाओ ॥ १० ॥
महासुन्न निरखते जाओ ।
फिर भँवरगुफा पर छाओ ॥ ११ ॥
आगे सतलोक घुमाओ ।
वहाँ से भी अलख चढ़ाओ ॥ १२ ॥
फिर अगम देश धस जाओ ।
राधास्वामी सँग मिल जाओ ॥ १३ ॥

॥ शब्द पच्चीसवाँ ॥

दुलहनी करो पिया का संग ॥ टेक ॥
दुलहा तेरा गगन बसेरा* ।
तू बसे नइहर अंग ॥ १ ॥
गुरु के साथ चलो उस नगरी ।
चढ़े प्रेम का रंग ॥ २ ॥
यह जोबन तेरा उतर जायगा ।
फिर तू होगी तंग ॥ ३ ॥
ता ते अभी सम्हारो मग को ।
धारो ढंग उमंग ॥ ४ ॥

*बसता है।

नाम रँगीला दुलहा तेरा ।
उड़ो गगन जस चंग* ॥ ५ ॥
सूरत डोर बाँध दे गुरु से ।
त्यागो सभी उचंग ॥ ६ ॥
पिय के द्वार तेरे नौबत झड़ती ।
बिच बिच बजे मुँहचंग ॥ ७ ॥
राधास्वामी पता बताया ।
चढ़ चल पकड़ तरंग ॥ ८ ॥

॥ शब्द छब्बीसवाँ ॥

घट में चढ़ खेल कबड्डी ।
स्वान† ज्यों चूसे मत बिष हड्डी ॥ १ ॥
मार मन चढ़ो काल की चड्ढी‡ ।
नाम गह पाला§ छोड़ तिगड्डी‖ ॥ २ ॥
चलो घर चढ़ कर सूरत गड्डी** ।
बनो तुम सीरी†† हो मत फड्डी‡‡ ॥ ३ ॥
तरंगें रोको बाँधो गड्डी§§ ।
उखाड़ो समस्त पुरानी गड्डी‖‖ ॥ ४ ॥

*पतंग । † कुत्ता । ‡ सवारी । § हद । ‖ तीन गुनों का । ** गाड़ी ।
†† अव्वल । ‡‡ निकृष्ट । §§ गठरी । ‖‖ गाड़ी हुई ।

पकड़ कर मूँड काल की डड्ढी ।
बिषय सब त्यागो रस्सा मत बड्डी[*] ॥ ५ ॥
सुरत मैं गुरु चरनन पर अड्डी[†] ।
जक्त की सभी बासना कड्ढी[‡] ॥ ६ ॥
राधास्वामी नाम चढ़ो यह सिड्ढी[§] ।
काल की बात होय सब फिड्डी[||] ॥ ७ ॥

॥ शब्द सत्ताईसवाँ ॥

कोमल चित्त दया मन धारो ।
परमारथ का खोज लगाना ॥ १ ॥
इन्द्री थान बिषय को त्यागो ।
सुरत शब्द मैं नित्त लगाना ॥ २ ॥
सार पदारथ गुरु से पाओ ।
चरन कँवल मैं प्रीत बढ़ाना ॥ ३ ॥
धारा अगम पकड़ सुत जोड़ो ।
इस सतसँग मैं सदा समाना ॥ ४ ॥
चली सुरत नभ द्वारा झाँका ।
अंडा तीन लोक दरसाना ॥ ५ ॥
परे जाय ब्रह्मण्ड समानी ।
सुन्न सरोवर कँवल खिलाना ॥ ६ ॥

*रिशवत । † जमाया । ‡ निकाला । §सीढ़ी, ज़ीना । || फीकी ।

अब तो काल काला सब हारा ।
मानसरोवर बैठ अन्हाना ॥ ७ ॥
अक्षर रूप निरखती चाली ।
छोड़ दिया अब देश बिगाना ॥ ८ ॥
सूरत साफ़ चढ़ी ऊँचे को ।
छूट गया सब महल पुराना ॥ ९ ॥
आगे चढ़ चढ़ अधर समानी ।
शब्द शब्द का मर्म पिछाना ॥ १० ॥
संत बिना कोइ समझै नाहीं ।
आगे जो जो भेद दिखाना ॥ ११ ॥
कहने में आवे नहिं पूरा ।
उलटा सुलटा करत बखाना ॥ १२ ॥
बाचक अपनी उक्ति लगावैं ।
अमल बिना नहिं बूझ बुझाना ॥ १३ ॥
संतन की गति संतहि जानैं ।
और कहो कैसे पहिचाना ॥ १४ ॥
अपनी उक्ति चतुरता त्यागो ।
संत बचन को करो प्रमाना ॥ १५ ॥

वह कहते देखी निज अपनी ।
तू सुन सुन क्यों बुद्धि लड़ाना ॥१६॥
राधास्वामी सब से कहते ।
संत भेद कोइ भेदी जाना ॥ १७ ॥

॥ शब्द अट्ठाईसवाँ ॥

गुरु बचन कहैं सो सुन रे ।
अब सतसँग में चित धर रे ॥ १ ॥
तुझे नाम मिला है अजर रे ।
तू सुरत सम्हार पकड़ रे ॥ २ ॥
गुरु खैंचें तोहि अधर रे ।
उनके सँग बाँध कमर रे ॥ ३ ॥
तू फैला बहुत पसर* रे ।
गुरु खोवें तेरी कसर रे ॥ ४ ॥
और मारें काल पकड़ रे ।
फिर खोवें सभी अकड़† रे ॥ ५ ॥
तू सुरत लगा दे जकड़ रे ।
तेरा मिटे चौरासी चक्कर रे ॥ ६ ॥
मन माला फेर सुमिर रे ।
गुरु कुंजी हाथ पकड़ रे ॥ ७ ॥

*फैल कर। † ऐंठ, अहङ्कार।

ले अनहद शब्द ख़बर रे ।
घट फोड़ो गगन अबर* रे ॥ ८ ॥
तू छोड़ बिरह के सर† रे ।
सुन घोर मानसर चल रे ॥ ६ ॥
कर सुन्न शिखर पर घर रे ।
धुन सुनता चल सतपुर रे ॥ १० ॥
फिर अलख अगम जा तर रे ।
राधास्वामी धाम अमर रे ॥ ११ ॥
यह आरत नितही कर रे ।
गुरु करैं दया तुझ पर रे ॥ १२ ॥

॥ शब्द उन्तीसवाँ ॥

सुरतिया गगन चढ़ाइलो मीत ।
मिटाइलो सकल भरम भौ भीत‡ ॥१॥
भवन§ तज गइलो अधर मसीत‖ ।
बाँग** सुन ध्याइलो अजर अजीत ॥२॥
नाम रस पाइलो गुरु की नीत ।
शब्द धुन गाइलो अचरज गीत ॥ ३ ॥

*बादल । †तीर । ‡भय । § घर । ‖ मस्जिद । **नमाज़ के लिये बुलाने की आवाज़ ।

समाइलो मनुवाँ गह गुरु रीत ।
लगाइलो घट में छिन छिन प्रीत ॥ ४ ॥
भगाइलो काल करम दल जीत ।
मिटाइलो मन से भरम अनीत* ॥ ५ ॥
बजाइलो सुन में शब्द अतीत† ।
मेहर से पाइलो संतन सीत‡ ।
बसाइलो राधास्वामी सरन पुनीत§ ।
धारिलो नाम रसायन चीत ॥ ७ ॥

॥ शब्द तीसवाँ ॥

सुन री सखी चढ़ महल बिराज ।
जहँ तेरे प्रीतम बैठे आज ॥ १ ॥
कर बिलास और जग से भाज ।
तख़्त बैठ और कर वहाँ राज ॥ २ ॥
हंसन का जहँ जुड़ा समाज ।
तू उन मिल कर अपना काज ॥ ३ ॥
गुरु चरन पकड़ तज कुल की लाज ।
मन दर्पन बहु बिधि कर माँज ॥ ४ ॥
सुरत निरत का लेकर छाज‖ ।
छाँट फटक** डालो धुन नाज†† ॥ ५ ॥

*अन्याय । †निरमाया । ‡प्रसाद । §पवित्र । ‖सूप । **साफ़ कर लो । ††अनाज ।

बड़े भाग पाया सब साज।
सतगुरु बख़्शा तख़्त और ताज* ॥ ६ ॥
तीन लोक का खुल गया पाज़† ।
चार लोक चढ़ भोगूँ राज ॥ ७ ॥
राधास्वामी दिया मोहिं यह दाज‡ ।
अब मेरा होय न कभी अकाज ॥ ८ ॥

*****

## ॥ बचन इक्कीसवाँ ॥

## ॥ हिदायतनामा§ ॥

बीच बयान सुहबत और ख़िदमत गुज़ारी‖ मुर्शिद कामिल** के और शरह†† दरजात फ़क़ीरी के और जिस में उपदेश शब्द के अभ्यास का और भेद शब्द मार्ग और उस के मुक़ामात का भी बर्णन किया है ॥

जिन लोगों को शौक़ मिलने मालिक कुल का है और तहक़ीक़ात मज़हब की मंज़ूर है कि कौनसा मज़हब सब से

---

*मुकट । †क़लई, मुलम्मा । ‡जहेज़ यानी बख़्शिश । § उपदेश । ‖ सेवा ।
** पूरे सतगुरु । ††बयान ।

बाला* है और तरीक़† भी उस का बहुत सीधा चाहते हैं उन के वास्ते यह कलाम‡ कहा जाता है। उनको चाहिये कि कुछ दुनिया की मुहब्बत कम करें याने ज़र§ और ज़न|| और औलाद की चाह तक़दीर** के हवाले करके अव्वल सुहबत फ़क़ीरों की मुक़द्दम†† रक्खें। फ़क़ीरों में सुहबत उस फ़क़ीर की करें जो शाग़िल‡‡ शग़ल सुल्तानुलअज़कार§§ का होवे या शग़लि नसीरा|||| करता होवे, याने अनहद शब्द के मारग को जानता होवे और दृष्टि की साधना जिस ने करी होवे और मर्दुमकि चश्म याने दोनों तिलों को खींच कर शग़्ल की मदद से एक किया होवे और आवाज़ि आसमानी को सुनकर रूह को चढ़ाता होवे और जो ऐसा

* ऊँचा। † रास्ता। ‡ वचन। § धन। || स्त्री। ** प्रारब्ध। †† मुख्य।
‡‡ अभ्यासी। §§ सुरत शब्द योग। |||| दृष्टि का साधन।

फ़क़ीर कमयाब* हो तो ज़िकरुलक़लूब† पासि अनफ़ास‡ वालों को तलाश करे, उन की सुहबत से भी सफ़ाई दिल और कमज़ोरी नफ़्सि अम्मारा§ की होगी और कुछ लज़्ज़ति‖ अंदरूनी** हासिल होगी लेकिन जो फ़ायदा कि रूह के चढ़ाने का है वह तो तरीक़ सुल्तानुल्-अज़्कार ही से हासिल होगा। अब चाहिये कि ऐसे फ़क़ीर की ख़िदमत में जा कर उन से मुहब्बत पैदा करो और उनकी ख़िदमतगुज़ारी में चुस्त व चालाक रहो और तन से मन से धन से बहर सूरत उनको अपने ऊपर मेहर-बान और मुतवज्जह कर लो और दर्शन उनका दिल और दीदा†† से घंटे दो घंटे बराबर करते रहो याने अपनी

* दुर्लभ। † नाम की जरब दिल पर लगाना। ‡ स्वाँसा का अभ्यास।
§ मलीन मन। ‖ रस। ** अंतरी। †† आँख।

आँखों से उनकी आँखों को ताकते रहो और जिस क़दर ताक़त अपनी देखो पलक से पलक न लगाओ और इस कसरत को रोज़ ज़ियादा करते रहो। जिस रोज़ और जिस वक़्त नज़र मेहर आलूद* उन की तुम पर पड़ेगी उसी दिन सफ़ाई दिल की फ़ौरन होगी और जब वह मेहर कर के अपनी मौज व मरज़ी से शग़लि बाला† का उपदेश करें तो रूह तुम्हारी आवाज़ि आसमानी को पकड़ेगी और मुनासिब है कि तुम भी इस शग़ल को रोज़मर्रा बिलानाग़ा‡ चार बार दो बार जिस क़दर फ़ुरसत मिले करते रहो और जो दिल तुम्हारा क़बूल न करे और वसवसा§ और ख़दशा|| और गुनावन बे फ़ायदा उठावे तो फ़र्याद** मुर्शिद के आगे करो और फिर उसी शग़ल में मिहनत रक्खो उन

* भरी हुई। † ऊपर। ‡ नित्तनेम से। § भरम। || चिंता। ** पुकार।

की तवज्जह और तुम्हारी मिहनत से रोज़ बरोज़ तरक़्क़ी होगी और जल्दी और इज़्तिराबी* करना नहीं क्योंकि- ताजील कारे शयातीं बुवद†—आहिस्ता आहिस्ता हासिल होना मुफ़ीद पड़ेगा और जल्दी जो कुछ होगा वह क़ायम नहीं रहेगा क्योंकि वह शैतान की तरफ़ से होगा जो मुर्शिद रहमान‡ की मदद से होगा वह हमेशा क़ायम रहेगा। ज़ाहिर लवाज़मा§ जो कुछ चाहिये सो मैं कह चुका अब बातिनी‖ हाल कि जो दरजे फ़क़ीरों को हासिल हैं उस को बयान करता हूँ--कि जिस वक़्त निगाह तुम्हारी दिमाग़** के भीतर उलट कर आसमान को देखेगी और रूह तुम्हारी जिस्म†† को छोड़कर ऊपर को चढ़ेगी तो तुम को आकाश नज़र पड़ेगा कि

* बेचैनी। † जल्दी शैतान का काम है। ‡ दयालु। § सामान। ‖ अंतरी। ** मस्तक। †† देह।

जिस में थाना सहसदलकँवल का है और हज़ारों पखड़ियाँ उस की जुदा जुदा काम तीनों लोक का दे रही हैं उस की सैर को देख कर तुम बहुत खुश होगे और तीन लोक के मालिक का दर्शन पाओगे और बहुत से मज़हब इसी मुक़ाम को पाकर और इसी को मालिकि कुल गरदान* कर धोखा खा गये और नूर और तजल्ली† इस जगह की देख कर तृप्त हो गये आगे चलने का रास्ता बंद हो गया, मुरशिद आगे का उन को न मिला, जो मुरशिद मिलता तो आगे का रास्ता खुलता, सो इस से आगे का हाल सुनो। इस आकाश के ऊपर एक दरवाज़ा ऐसा बारीक और झीना है कि जैसे रौज़न‡ सुई के नाके का होता है। चाहिये कि उस रौज़न में अपनी रूह को प्रवेश करो और

* मान कर। † प्रकाश। ‡ छिद्र।

आगे उस के बंकनाल टेढ़ा रास्ता कुछ दूर तक सीधा गया और फिर नीचा पड़ा और फिर ऊँचे को चढ़ा उस नाल को पार करके दूसरे आसमान पर सुरत पहुँची उस आसमान पर एक मुक़ाम त्रिकुटी कि उस को मुसल्लसी* कहते हैं लाख जोजन वसीअ† और लाख जोजन तवील‡ है उस में लीला और तमाशे तरह बतरह के हैं शरह उसकी कहाँ तक करूँ मगर कुछ कहता हूँ कि हज़ार आफ़ताब§ और हज़ार माहताब‖ उसकी रौशनी से ख़जिल** हैं और आवाज़ ओं ओं और हू हू और बादल की सी गरज बहुत सुहावनी आठ पहर होती रहती है उस मुक़ाम को पा करके रूह को बहुत सरूर†† हासिल होता है और रूह भी बहुत पाक और लतीफ़‡‡ हो जाती है आलमि रूहानी§§ की ख़बर उस जगह

* त्रिकोन । † चौड़ा । ‡ लम्या । § सूरज । ‖ चन्द्रमा । ** लज्जित ।
†† आनन्द । ‡‡ सूक्ष्म ॥ §§ चेतन्य ।

से पड़नी शुरू होती है कोई दिन उस जगह की सैर करके फिर ऊपर चढ़ती है चढ़ते चढ़ते करोड़ जोजन ऊपर चढ़ कर तीसरा परदा फोड़ कर सुन्न में पहुँची कि जिस को फ़ुक़राओं ने आलमि लाहूत कहा है उस की तारीफ़ क्या कहूँ उस मुक़ाम पर रूहें बहुत बिलास करती हैं और रौशनी वहाँ की ऐसी है कि बारह बारह हिस्सा ज़ियादा रौशनी त्रिकुटी से मालूम पड़ती है तालाबि ज़ुलाली व हौज़ि कौसरी पुर अज़ आबि हयात कि हिन्दी में उसको मानसरोवर कहते हैं जा बजा मौजूद हैं और कितने ही गुलशन* और चमन† खिले हुए नज़र पड़ते हैं और अक्सर रूहें बसूरति नाज़नीनाँ‡ मुक़ामाति मुख़्तलिफ़§ पर रक़्स‖ कर रही हैं व ग़िज़ा-

* फुलवारी। † बाग़। ‡ ख़ूबसूरत। § जुदा, जुदा। ‖ नृत्य।

हाइ लतीफ़ अज़बस शीरीं* व ख़ुशनुमा† तरोताज़ा तइयार हैं और नग़महा‡ व तरानहा§ हर जानिब‖ को हो रहे हैं उस आनन्द व सरूर को रूह रसीदा** जानती है कहने में आ नहीं सक्ता और हर एक जगह झिरने आबि हयात के जारी हैं याने अमी सरोवर भरे हैं अमृत की धारा चल रही हैं। रौनक़ और ज़ेबाइश उस मुक़ाम की क्या कहूँ हीरों के चबूतरे पन्नों की क्यारियाँ जवाहिरात के पौदे लाल और चुन्नियाँ जड़े हुए नमूदार†† हो रहे हैं मछलियाँ मुरस्सा‡‡ उन तालाबों में पैर रही हैं दम दम पर झलक दिखाती हैं पल पल पर चमक उनकी दिल को पकड़ती है आगे उसके अनन्त शीश महल बने हुए हैं और रूहें अपने अपने मुक़ामों पर

* उम्दा खाना और मिठाई। † सुहावनी ‡ राग। § रागनी। ‖ तरफ़। **पहुँची हुई। †† दिखलाई देते हैं। ‡‡ जड़ाऊ।

मुवाफ़िक़ हुक्म मालिक अपने के मुक़ीम* हैं और कैफ़ियत और बिलास नये नये परस्पर देखती हैं और दिखाती हैं कि हिन्दी में उन्हीं रूहों को हन्स मंडली करके बयान किया है। नक़्श-बंदी उन मुक़ामों की देखनेही के तअ़-ल्लुक़ है कुल कारख़ाना उस जगह का रूहानी है याने चैतन्य लतीफ़-कसीफ़ और जड़ नहीं है-और वहाँ की रूहों में लताफ़त और पाकी अजूबस† है कसा-फ़त और मलीनता जिसमानी याने बदन की नहीं है और शरह उस सैरगाह की फ़क़ीर जानते हैं ज़ियादा खोलना उस का मुनासिब नहीं। मुद्दत कसीर‡ उस जगह रूह इस फ़क़ीर की ने सैर की फिर मुरशिदों की हिदायत से आगे को चली चलते चलते पाँच अरब पछत्तर करोड़ जोजन ऊँची गई आलमि हाहूत का नाका

* ठहरीं। † चित्रकारी और बनावट। ‡ बहुत।

तोड़ा उस आलम की सैर की उस मुक़ाम का बयान क्या करूँ दस नील तक ज़ुल्मात याने अँधेरा है गहराई उस तिमर खंड की कहाँ तक बर्नन करूँ खरब जोजन तक रूह नीचे उतर गई और थाह उसकी हाथ न लगी फिर उलट कर ऊपर चढ़ आई और जो निशाना कि मुर्शिदों ने बताया था उसकी सुध लेकर उसी रास्ते पर चली और अन्त लेना उस मुक़ाम का अनसब* न समझा आगे को बढ़ी यह मैदान महासुन्न का है इस जगह चार मुक़ाम निहायत गुप्त हैं और किसी संत ने खोले नहीं उस जगह रूहें बे शुमार जो कि मरदूद† दरबार सच्चे ख़ुदा की हैं उन के बन्दीख़ाने बने हुए हैं अगरचे तकलीफ़ उन रूहों को उस जगह कुछ नहीं है अपनी अपनी रोशनी से अपना अपना कारज करती रहती

* मुनासिब। † निकाली हुई।

हैं लेकिन दर्शन मालिक का उन को नसीब नहीं होता दर्शन के न मिलने से अलबत्ता बेकली है मगर एक सूरत माफ़ी की उन के वास्ते भी मुक़र्रर रक्खी गई है कि जब जब संत उस रास्ते से गुज़र करते हैं और जो रूहें कि नीचे के लोकों में से संतों के वसीले से जाती हैं जिन जिन रूहों को कि इत्तिफ़ाक़ उन संतों के दर्शनों का हो जावे इन रूहों के ले जाने की जो खुशी कि संतों को होती है और उस सच्चे खुदा की निहायत मेहरबानी और अल्ताफ़* इन रूहों पर होता है संत उन रूहों को बख्शाकर फिर सच्चे खुदा के पास बुलवा लेते हैं और हाल उस जगह का बहुत से बहुत है मगर कहाँ तक कहूँ। उस मुक़ाम को छोड़ कर आलमि हूतलहूत में पहुँची कि जिस को हिन्दी में भँवरगुफा कहते

* दया।

हैं कि वहाँ एक चक्कर कि जिस को हिंडोलना कहते हैं ऐसा लतीफ़ फिर रहा है और रूहें उस जगह सदा झूलती रहती हैं और गिर्द उस के अनन्त दीप रूहानी बने हुए हैं और उन दीपों में से आवाज़ सोहं सोहं व सदाय* अनाहू अनाहू सदा उठ रही है और रूहें और हंस उन्हीं धुनों से हमेशा विलास करते रहते हैं और जो जो सिफ़त इस मुक़ाम पर और है वह ज्यों की त्यों लिखने में नहीं आती देखने ही के तअल्लुक़ है जब रूह इस मारग को कमाती कमाती पहुँचेगी तब आप देख लेवेगी इस वास्ते मुनासिब है कि इस तरीक़े की कमाई करे जाओ यह ग्रसलि आवाज़ है इस को मत छोड़ो। अब यहाँ की सैर देखकर रूह आगे को चढ़ी आकाश मारग हो कर याने ऊँचे को चढ़ती चली जाती है

* आवाज़।

दूर से सुगंधें मलयागिर की और क़िस्म क़िस्म के इतरियात की सी लपटें चली आती हैं और धुनें बाँसरियों की अनन्त सुनाई देती हैं उन को सुनती और सूँघती हुई रूह याने सुरत आगे को चढ़ती चली जाती है जब इस मैदान के पार पहुँची नाका सत्तलोक का हासिल हुआ कि वहाँ से आवाज़ सत्त सत्त और हक़ हक़ बीन के बाजे में से निकलती सुनाई दी कि उस को सुन कर रूह मस्ताना-वार* धसी चली जाती है और वहाँ नहरें सुनहरी और रुपहरी पुर अज़ आबि ज़ुलाल† दीखने लगीं और बाग़ बड़े बड़े नज़र आये एक एक दरख़्त उसका करोड़ करोड़ जोजन की बुलंदी‡ रखता है और सूरज और चाँद करोड़ों बजाय फूल और फलों के लगे हुए हैं और अनेक रूहें और हंस उन दरख़्तों

* मतवाली। †अमृत से भरी हुई। ‡ऊँचाई।

पर बजाय जानवरों के चहचहे और बिलास कर रहे हैं अजब लीला उस मुकाम की है कि कहने में नहीं आसक्ती। यह लीला देखती हुई रूह याने सुरत सत्यलोक में दाख़िल हुई और सत्य-पुरुष का दर्शन पाया। अब सत्यपुरुष के स्वरूप का बर्णन करता हूँ कि एक रोम उस का इस क़दर मुनव्वर* है कि करोड़ों सूरज और चाँद शरमिंदा हैं जब कि एक रोम की ऐसी सिफ़त है तो तमाम रोमों की क्या सिफ़त लिखने में आवे और जिस्म की तारीफ़ की कहाँ गुंजाइश, नैन नासिका और श्रवन मुख और हाथ और पाँव का क्या बर्णन करूँ महज़ नूर ही नूर है नूर का समुद्र कहूँ तो नहीं बनता एक पदम पालंग घेर सत्तलोक का है और पालंग की शुमार यह है कि यह त्रिलोकी एक पालंग है

*रौशन।

पस दराज़ी और वसअ़त सत्तलोक की किस क़दर बड़ी हुई कि क़यास* काम नहीं कर सक्ता और रूहें पाक कि जिन को हंस कहते हैं वहाँ बसती हैं और सत्यपुरुष का दर्शन करती हैं और नवाय† बीना जा बजा सुन रही हैं व ग़िज़ाय‡ अमी हमेशा खाती रहती हैं। इस मुक़ाम का भी बिलास देख कर रूह आगे को चली और अलख लोक में पहुँची अलख पुरुष का दर्शन पाया एक संख का घेर उस लोक का है और अरब खरब सूरजों का उजाला एक एक रोम में अलख पुरुष के है। फिर वहाँ से ऊपर को चली अगम लोक को पाया कि जिस का घेर महा संख पालंग का है और करोड़ संख की काया§ अगम पुरुष की है और वहाँ के हंसों के रूप भी अद्भुत हैं और बिलास भी वहाँ के अचरज रूप हैं इस जगह

* समझ, अनुमान। † आवाज़। ‡ आहार। § जिस्म।

बहुत मुद्दत बिश्राम किया इससे आगे राधास्वामी यानी अनामी पुरुष का दीदार किया और उस में समाई वह बेइन्तिहा और बेशुमार और बेअंत है और फ़क़ीरों का निज स्थान वही है उस को पाकर के सब संत चुप हो गये और मैं भी अब चुप होता हूँ। इतनी बड़ी भारी गत फ़क़ीर और संत की है और जो लोग कि पहिले ही मुक़ाम पर थक गये और उस को बेइन्तहा और बेअन्त कहने लगे पस उन के मुरीदों और सेवकों को कैसे इन मुक़ा-मात का निश्चय कराया जाय सिवाय सन्त और फ़क़ीर कामिल के कोई नहीं जान सक्ता और यक़ीन भी इन मुक़ामों का उन्हीं को होगा कि जिन को सन्त और फ़क़ीर भेदी इन मुक़ामों के मिले होंगे उन को इन के बचन पर

* अपार।

एतक़ाद* होगा तो यक़ीन लावेंगे। यह मुक़ाम न पैग़म्बर साहिब पर खुले और न ब्यास और बशिष्ठ को मालूम हुए पस हिन्दू और मुसलमान कोई इसका यक़ीन कर नहीं सक्ता उन को इस हाल का सुनाना भी ज़रूर नहीं क्योंकि वह पैग़म्बर और क़ुरान के पाबन्द हैं और हिन्दू ब्यास बशिष्ट और बेद के क़ैदी हैं इनसे यह बचन सुने भी नहीं जावेंगे इससे मुनासिब है कि जिस किसी को एतिक़ाद फ़क़ीर और संत पर ऐसा है कि इन सब से आगे संत पहुँचे हैं और सन्तों की महिमा बहुत भारी है और ख़ुदा और परमेश्वर दोनों के पैदा करने वाले सन्त हैं और इन की गति को वे दोनों नहीं जान सक्ते ऐसा एतिक़ाद सन्त और फ़-

* निश्चय।

क़ौर पर जिस किसी का है उस को सुनाना और कहना इस हाल का फ़ायदा करेगा इस वास्ते हर एक को यह सुनाना न चाहिये जब तक कि एतिक़ाद उस का ऐसा परख न लिया जावे जैसा कि ऊपर मैं ने बयान किया है ॥

******

## ॥ ग़ज़ल फ़ारसी व तरजुमा ॥

बीच बयान चढ़ने रूह के अर्श याने आसमान पर और पहुँचना मुक़ाम हूत यानी सत्यलोक और सैर मुक़ामात रास्ते के

### ॥ ग़ज़ल पहिली ॥

मुर्शिदा आशिक़े दीदारे जमालत गश्तम।
दिल ख़स्ता व जाँबाख़्ता
अज़ ख़ुद रफ़्तम ॥ १ ॥
यक निगाहे तो मरा चाक गिरेबाँ करदा।
हमचो मजनूँ पए लैला चे परेशाँ करदा॥२॥

दर्दमन्देम दिगर हेच न दरमाँ दारेम ।
लुत्फ़े गुफ़्तारि जिगर
रेश चो मरहम दारेम ॥ ३ ॥

रूए ज़ेबाय तो तारे दिले मन नूराँ कर्द ।
मह व ख़ुरशेद हज़ाराँ
ब फ़लक ख़िजलाँ कर्द ॥ ४ ॥

दौरे अफ़लाक चुनाँ गरदिशे दौराँ करदा ।
आशिक़ाँ रा ज़े क़दमूबोसिये
महबूब नुमायाँ करदा ॥ ५ ॥

हिर्स दुनियाँ ज़े दरूनम
हमा बेरूँ गरदीद ।
शौक़े दीदार दिलम रा
हमा सर पुर पेचीद ॥ ६ ॥

मरहबा बख़्ते सफ़ेदम
क़दमे यार गिरिफ़्त ।
रूहे मन शाकूके क़मर कर्दों
फ़लक रा बिगिरिफ़्त ॥ ७ ॥

नग़्महा नेक शुनीदम व निदाहा काफ़िर।
काबा बुतख़ाना ब निज़्दम
शुदा हरदो काफ़िर ॥ ८ ॥

॥ तरजुमा ग़ज़ल पहिली ॥

हे गुरू मैं तेरे दीदार का आशिक़ जो हुआ।
मन से बेज़ार सुरतवार के दीवाना हुआ१॥
इक नज़र ने तेरी ए जाँ मुझे बेहाल किया।
लैला के इश्क़ में मजनूँ सा परेशान किया२॥
मैं हूँ बीमार मेरे दर्द का नहिं और इलाज।
मेरे दिल ज़ख़्म का मरहम
तेरी बोली है इलाज ॥ ३ ॥
तेरे मुखड़े की चमक ने किया मन को नूराँ।
सूरज और चाँद हज़ारों
हुए उस से ख़िजलाँ ॥ ४ ॥
जग में इस चक्र ज़माने का यह दस्तूर हुआ।
प्रेमी प्रीतम के चरन लाग के
मशहूर हुआ ॥ ५ ॥
हिर्स दुनियाँ की मेरे दिल से हुई है सब दूर।
तेरे दरशन की लगन मन में रही है भरपूर ६

वाह वाह भाग जगे गुरु चरनन सुर्त मिली।
चन्द्र मण्डल को वहीं फोड़ के
गगना में पिली ॥ ७ ॥
राग और रागनी मैं ने सुने अंतर जाकर।
मेरे नज़दीक हुए हिन्दु मुसलमाँ काफ़िर।

॥ ग़ज़ल दूसरी ॥

अंदरूँ अर्श रफ़्ता दीदम नूर।
कुश्ता शैताँ व हम दमीदम सूर ॥ १ ॥
होश तन रफ़्त रूह बाला शुद।
जा गिरिफ़्ता ब जा कि साबिक़ बूद ॥२॥
दर्दमंदाने इश्क़े कूए वहीद।
सेकशम अज़ जमा बसूए फ़रीद ॥ ३ ॥
हर्चे गोयम शुनो बगोशे तमीज़।
रूह रा कश रसाँ ब सौते अज़ीज़॥ ४ ॥
दर दिमाग़े तो गुलशनो मजलिस।
सैर कुन तेज़ रौ ज़े मुर्शिद पुर्स ॥ ५ ॥
चश्म बंदो व सर्दुमक दर कश।
बर फ़लक रौ कुशादा कुन तो दरश ॥६॥

अंदरूनश रवाँ चो रूह नमूद ।
कुन लो सैरश निगर बहारे वजूद ॥ ७ ॥
दर वजूदत अजब तमाशाए ।
आसमाँ ज़ेरो अर्ज़ बालाए ॥ ८ ॥
कज नए दाद राह रूहम रा ।
दर रसीदम मुसल्लसी हर जा ॥ ९ ॥
शम्स दीदम बरंगे सुर्ख़ आँ जा ।
खुर हज़ाराँ न हमसरत ज़ेबा ॥ १० ॥
मुलके लाहूत पेश अज़ाँ याबी ।
सुन्न मेगोयंद ओरा दर हिन्दी ॥ ११ ॥
सौते आँजा निदा हमीं दारद ।
हम चो किंगरी व साँरगी आयद ॥ १२ ॥
हौज़े आबे ज़ुलाल दीदम पुर ।
मेखुरंद आमिलाँ दराँजा दुर ॥ १३ ॥
चूँ गुज़श्तम ज़े आलमे लाहूत ।
दर रसीदम ब आलमे हाहूत ॥ १४ ॥
हाले आँजा ब कै बुगोयम बाज़ ।
रूह रफ़्ता हरकि दानद आँ आवाज़ ॥ १५ ॥

सौते पोशीदा हस्त तर बारीक ।
साख़्त राहशब कुदरते तारीक ॥ १६ ॥
मुरशिद हमराह शुद दरां सैदां ।
शुदा हैरां बराय आं शैतां ॥ १७ ॥
रूह आँ जा गुज़श्त बाला रफ़्त ।
सौत अनाहू शुनीद दीद गिरफ़्त ॥ १८ ॥
हूतलहूत आलमे अजायब याफ़्त ।
रूह रा अंदरूँ दरीचा ताख़्त ॥ १९ ॥
पस बिरफ़्तो रसीद आलमे हूत ।
याफ़्त आबे हयात दम दम कूत ॥ २० ॥
पेश अज़ाँ हर्चे हस्त हस्ती हस्त ।
लबे मन शुद ख़मोश बाहम बस्त ॥ २१ ॥
जुज़ फ़क़ीरे कसे न याफ़्त मुक़ाम ।
राधास्वामी न गुफ़्त आँ रा नाम ॥ २२ ॥

॥ तरजुमा ग़ज़ल दूसरी ॥

अर्श पर पहुँच कर मैं देखा नूर ।
काल को मार कर मैं फूंका सूर ॥ १ ॥
देह की सुध गई जो सुर्त चढ़ी ॥
जाके बैठी जहाँ कि पहिले थी ॥ २ ॥

निज गली यार के जो आशिक़ हैं ।
भीड़ से अब एकांत लाऊँ मैं ॥ ३ ॥
जो कहूँ मैं सो कान देके सुनो ।
सुर्त खैंचो चढ़ाओ धुन को सुनो ॥ ४ ॥
सिर में है तेरे बाग़ और सतसंग ।
सैर कर जल्द ले गुरू का रंग ॥ ५ ॥
ताज पुतली को आँख को मत खोल ।
चढ़ के आकाश का दुआरा खोल ॥ ६ ॥
जब चढ़े सुर्त तेरी अंदर यार ।
देह की सैर कर व देख बहार ॥ ७ ॥
अचरजी सैर है तेरे बीचे ।
पिरथी ऊपर है आस्माँ नीचे ॥ ८ ॥
बंक नाल होके आगे सुर्त चली ।
तिरकुटी पहुँच कर गुरू से मिली ॥ ९ ॥
रूप सूरज का लाल क्या बरनूँ ।
सहस सूरज हैं उस के इक रोमूँ ॥ १० ॥
आगे चल सुर्त सुन्न में पहुँची ।
धुन किंगरी व सारँगी की सुनी ॥ ११ ॥

कुंड अमृत भरे नज़र आये।
हंस रूप होय मोती चुन खाये ॥ १२ ॥
सुन्न को छोड़ कर चली आगे।
पहुँची महासुन्न जहाँ सोहं जागे ॥ १३ ॥
हाल वहाँ का मैं क्या कहूँ क्या है।
जानता है वही जो पहुँचा है ॥ १४ ॥
रास्ते में वहाँ अँधेरा है।
सतगुरू संगही निबेड़ा है ॥ १५ ॥
सतगुरू संग ते किया मैदाँ।
काल देख उन को हो गया हैराँ ॥ १६ ॥
सुर्त चढ़ कर गुफा में पहुँची धाय।
धुन सोहँग सुनी मुक़ाम को पाय ॥ १७ ॥
इस मुक़ाम अचरजी को पाय मिली।
खोल खिड़की को अंदरून चली ॥ १८ ॥
आगे चल सत्तलोक पहुँची धाय।
और अमी का अहार दम दम खाय ॥ १९ ॥
आगे इस के अलख अगम है मुक़ाम।
तिस परे हैगा राधास्वामी नाम ॥ २० ॥

यह मुक़ाम है अकह अपार अनाम ।
संत बिन कौन पा सके यह धाम ॥२१॥
भेद सब इस जगह तमाम हुआ ।
सब हुए चुप्प मैं भी चुप्प हुआ ॥ २२ ॥

॥ ग़ज़ल तीसरी ॥

आशिक़म ज़ाते मुर्शिदे कामिल ।
दिले मन शुद ब क़ौले शाँ माइल ॥१॥
चूँ गिरिफ़्तम क़दम व ख़ाके क़दम ।
ज़ुल्मते दिल शुदा हमा ज़ाइल ॥ २ ॥
रूए ज़ेबा व क़द्दे सर्वे रवाँ ।
नूर दर सीना नफ़्स रा क़ातिल ॥ ३ ॥
सोहबते मुर्शिदो कलामे रशीद ।
कर्द दुनिया व दीन रा बातिल ॥ ४ ॥
राज़े पिनहाँ वजूद शुद ज़ाहिर ।
याफ़्तम लुत्फ़े मुर्शिदे आमिल ॥ ५ ॥
रूहे मन चूँ गिरिफ़्त आवाजे ।
बर फ़लक दर रसीद शुद क़ाबिल ॥ ६ ॥
दीद मौसम बहार रफ़्त ख़िज़ाँ ।
इल्मे अर्शी बेयाफ़्त शुद फ़ाज़िल ॥ ७ ॥

कुल्फ़ते सौतो रंजे पैदाइश ।
बर रुख़े हरदो परदा शुद हाइल ॥ ८ ॥
राज़े बातिन शुदा व मन ज़ाहिर ।
चूँ शुदम पेशे पीरे खुद साइल ॥ ९ ॥
जिस्मे ख़ाकी गुनाफ़तम बिलफ़ेल ।
शुदा शीताँ बराय मन काहिल ॥ १० ॥
रूह परवाज़ कर्द जानिबे अर्श ।
फ़ैलो सफ़ज़ल रफ़्त शुद फ़ाइल ॥ ११ ॥
नज़रे मेहर कर्द मुर्शिदे मन ।
हिज्र बुगुज़श्त मन शुदम वासिल ॥१२॥
ज़ाहिदो सुन्नती नमाज़ी पंज ।
कस न दानद चुनाँ बजुज़ शाग़िल ॥ १३ ॥
रूबरू आमिलाने बातिन फ़हम ।
आलिमाँ इल्मे ज़ाहिरी जाहिल ॥ १४ ॥
हमा दुनिया फ़िताद दर शुबहात ।
हर कि हादी न याफ़्त शुद नाक़िल ॥ १५ ॥
जुमला रा कर्द जिहल ज़ेरो ज़बर ।
मुर्शिदे याफ़्त शुद हमा आक़िल ॥१६॥

याफ़्ता राधास्वामी मेहरे फ़क़ीर ।
हम शुदा लुत्फ़े रग़िंदी शामिल ॥१७॥

॥ तरजुमा ग़ज़ल तीसरी ॥

निज रूप पूरे सतगुरू का
प्रेम मन में छा रहा ।
बचन अमृत धार उनके
सुन अमी में न्हा रहा ॥ १ ॥
जब से चरनों में लगा
और धूर चरनों की लई ।
मन के अन्तर का अँधेरा
मैल सब जाता रहा ॥ २ ॥
मुखड़ा सुहावन क़द सीधा
चाल अति शोभा भरी ।
तेज रोशन सीने अन्दर
मन को घायल कर रहा ॥ ३ ॥
जो किया सतसंग सतगुरु
और बचन पूरे सुने ।
दीन दुनिया झूठी लागी
और न उनका ग़म रहा ॥ ४ ॥

पिंड का सब भेद पोशीदा
मुझे ज़ाहिर हुआ ।
मेहर से पूरे गुरू के
काम मेरा बन रहा ॥ ५ ॥
सुर्त ने जब धुन को पकड़ा
आस्माँ पर चढ़ गई ।
हो गई क़ाबिल वहाँ पर
फिर न कोई ग़म रहा ॥ ६ ॥

॥ वज़न २ ॥

सुर्त आवाज़ को पकड़ के गई ।
नभ पै पहुँची व जानकार हुई ॥ ७ ॥
देखी वहाँ पर अजब नवीन बहार ।
और अनुभव जगा हुई सरशार ॥ ८ ॥
दुक्ख जन्म और मरन की तकलीफ़ात ।
हो गईं दूर और गईं आफ़ात ॥ ९ ॥
भेद अन्तर का मुझ पै हाल खुला ।
जब कि सतगुरु से मैं सवाल किया ॥ १० ॥
देह को ख़ाक की मैं छोड़ गया ।
काल भी थक के मुझ से बाज़ रहा ॥ ११ ॥

सुर्त आकाश पर चढ़ी इक बार ।
कर्म कारज गये हुई करतार ॥ १२ ॥
मेरे सतगुरु ने जब करी किरपा ।
पद से जाकर मिली वियोग गया ॥ १३ ॥
करमी शरई नमाज़ी क्या जानें ।
भेद अभ्यासी आप पहिचानें ॥ १४ ॥
विद्यावान सब रहे मूरख ।
अन्तरी भेद को न जानें कुछ ॥ १५ ॥
संशय में सब जगत रहा कूड़ा ।
रहा बाचक न पाया गुरु पूरा ॥ १६ ॥
पाये सतगुरु उसी का जागा भाग ।
बाक़ी बाद और बिबाद में रहे लाग ॥ १७ ॥
राधास्वामी गुरु ने की किरपा ।
भाग जागा है मेरा अब धुर का ॥ १८ ॥

******